Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

LIBRARY
No. 8164
... Ashram

माधुर्य - मञ्जूषा

—सनातनदेव

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY
No. 8169
Shri Shri ...mayee Ashram
BANARAS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY
...mayee Ashram
...NARAS

श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः

माधुर्य-मञ्जूषा

—सनातनदेव

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रकाशक—

सत्साहित्य-प्रकाशन ट्रस्ट
'विपुल' २८/१६ बी० जी० खेर मार्ग,
बम्बई—४००००१

•

प्राप्ति-स्थान—

श्रीकृष्ण आश्रम,
दावानल कुण्ड,
वृन्दावन (मथुरा)

•

१९७४

प्रथम संस्करण

मूल्य—तीन रुपये

•

मुद्रक—

राधाप्रेस,
मेन रोड, गाँधीनगर,
दिल्ली-११००३१

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY
No. 8164
Shri Shri Anandamayee Ashram
BANARAS

शुभाशीः

भावाभावप्रभावोज्झितहितमणिभिर्विस्फुरद्भिः प्रपूर्णा
स्वर्णस्वर्णप्रभाभिः श्रुतिहृदयनभोव्यापिनीभिर्मनोज्ञा।
श्रीराधामाधवाच्छच्छवितरलरसोद्गारि माधुर्यलक्ष्मी-
मञ्जूषा गीतिभूषा मधुररतिजुषां मङ्गलं देदिशीतु॥

श्री राधा-माधव दम्पतिके समरस महाभाव-मणि-माणिक्यसे परिपूर्ण मञ्जूषा आपके हाथोंमें समर्पित है। श्रीसनातन-सनकादि सिद्ध ध्यान-समाधि छोड़कर इस रसका समास्वादन करते हैं। श्रीसनातन-रूप आदि गोस्वामियोंने इसका निर्भर पान किया है। हमारे स्वामी श्रीसनातनदेवजी महाराजने माधुर्यलहरी का अवगाहन करनेके अनन्तर जो माधुर्य भावके रत्न प्राप्त किये हैं वे इस उन्मुक्त मञ्जूषामें भरपूर हैं। वे रत्न भी सनातन ही हैं। हमें विश्वास है कि इसके रसास्वादनसे भावुक जनोंको रसका सनातन अनुभव होगा। श्रीराधा-माधवका रस-रहस्य सबके हृदयमें आस्वादनका विषय बने।

—अखण्डानन्द सरस्वती

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आमुख

माधुर्य-मालाका यह द्वितीय पुष्प प्रस्तुत है। सर्वान्तर्यामी प्रियतम की प्रेरणासे ही इस पदावलीका अवतरण हुआ है। प्रेरक तो वे ही हैं, जैसा लिखाते हैं लिख दिया जाता है। वे कब क्या लिखायेंगे यह भी वे ही जानें, मुझे इसका न कोई संकल्प है न ज्ञान। कोरे लेखकका अपना क्या कर्तृत्व हो सकता है और क्या उसकी योग्यता होती है। पदोंको देखकर भक्तजन न जाने क्या-क्या अनुमान करते हैं। परन्तु सच्ची बात तो यही है कि इन पदोंका लेखक न भक्त है, न कवि है और न गायक है। अचिन्त्य-लीलामय श्रीश्यामसुन्दर बड़े अद्भुत खिलाड़ी हैं। वे सबको सब कुछ देकर भी सबसे असंग रहते हैं और भोला जीव अविवेकवश उसे अपनी ही सम्पत्ति मानकर व्यर्थ अभिमानके बन्धनमें बँध जाता है। परन्तु वे किसीको भी अपना माध्यम बनाकर बड़े विचित्र खेल कराते रहते हैं।

उन्हींकी यह लीला इस शरीरमें भी हो रही है। उनकी अहैतुकी कृपा-शक्ति से ही यह पद-रचना आरम्भ हुई है। इसे तो इसका स्वप्नमें भी कोई संकल्प या सम्भावना नहीं थी। इन पदोंमें जो कुछ लिखा गया है जीवनमें उसका शतांश भी चरितार्थ नहीं हुआ। परन्तु जब वे लिखाते हैं तो क्यों न लिखूं ? मेरा काम तो उनके इङ्गितका अनुसरण करना ही है। मुझे भले ही भावकी ऐसी ऊँची भूमिकाका कोई अनुभव न हो, तथापि लिखने के समय उसका चिन्तन तो होता ही है। यही मेरा परम सौभाग्य है। इससे मेरा भजन बनता है तो जो लोग पढ़ेंगे उन्हें भी कुछ-न कुछ भजनानन्दकी अनुभूति होगी ही। इससे अनायास ही भावुक भक्तोंकी कुछ सेवा हो जायगी। उनके शुभाशीर्वादसे सम्भव है इस काष्ठतुल्य नीरस हृदयमें भी इसका कुछ

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

8164

संचार हो जाय। इसी निमित्तसे इसके प्रकाशनका प्रलोभन भी मैं नहीं रोक सका। क्या कर्त्तव्य है, क्या अकर्त्तव्य है, इसका मुझे कुछ पता नहीं है। वे जैसा कराते हैं वैसा ही करना पड़ता है और वही अपना कर्त्तव्य भी जान पड़ता है। क्यों कराते हैं—वे ही जानें।

इस पद-रचनाका प्रारम्भ १० जुलाई सन् १६७२ को हुआ था। तबसे प्रायः नित्य ही कुछ नवीन रचना होती रही है। यह क्रम कब-तक चलेगा वे ही जानें। अबतक डेढ़ हजारसे अधिक पद हो चुके हैं। 'माधुर्य-लहरी' नामसे एक पुस्तक सत्साहित्य-प्रकाशन द्वारा गत वर्ष प्रकाशित हो चुकी है। यह दूसरी पुस्तक है। तीसरी पुस्तक 'माधुर्य-मन्दाकिनी' प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ द्वारा प्रकाशित होनेवाली है। प्रभुकी इच्छा होगी तो आगे भी जहाँ-तहाँसे अन्य पुस्तकें प्रकाशित होती रहेंगी।

इस पुस्तकके प्रकाशनका सम्पूर्ण व्यय मेरे परम सुहृद् ~~और~~ श्री बिहारीलालजी झुंझुनूवाला और रघुवीरशरणजी कागजीने वहन किया है। तथा पदों पर राग-ताल मेरे परम प्रिय पद्मश्री स्वामी श्री हरिगोविन्दजी ने बैठाये हैं। आप ब्रजमण्डलकी एक सुप्रसिद्ध रास-मण्डली के स्वामी हैं। ये सभी मेरे आत्मीय हैं। मेरी ही भांति इन्होंने भी अपने प्रियतम की सेवा की है। इन्हें क्या धन्यवाद दूँ। श्रीकृष्ण इन्हें अपने चरण-कमलों की अहैतुकी प्रीति प्रदान करें—यही मेरी आन्तरिक आकांक्षा है।

और अधिक क्या लिखूं। अपना अपने पास कुछ है नहीं। यह प्रभुका ही कृपा-प्रसाद है और उनकी प्रसन्नताके लिये उन्हींके श्री चरणोंमें समर्पित है।

खुर्जा (उ० प्र०)
कार्तिक कृ० ८ सं० २०३१

विनयावनत—
सनातन देव

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ॐ

पदानुक्रमणिका

पद संख्या — पृष्ठ

मंगल-माधुरी

मेरे प्यारे साँवरे ! तुम कित रहे दुराय १

विनय-माधुरी

१. सुमिरिये स्यामा-स्याम सकारे २
२. जुगलकी पद-परिचर्या पाऊँ २
३. जावकयुत पद-पदुम ललीके ३
४. प्रियाजूके पद-पदुम परूँ ४
५. लड़ैती ! चरन-सरन मोहिं दीजै ४
६. राधे ! चरन-सरन मोहिं दीजै ५
७. राधिके ! तेरे गुनगन गाऊँ ५
८. प्रीतम-प्रीति-पगी श्रीराधे ! प्रीति दान मोहिं दीजै ... ६
९. प्रीतम-प्रान-पोसिनी राधे ! कैसे करि मैं तुमहिं मनाऊँ ... ७
१०. स्याम ! तव चरन-कमल-रति पाऊँ ८
११. स्याम ! मैं प्रीति-पदारथ पाऊँ ८
१२. प्यारे ! तुमसों प्रीति न लागी ९
१३. प्यारे ! प्रीति प्रसादी पाऊँ १०
१४. प्रियतम ! तुव पद-पदुम मनाऊँ ११

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY
No............
Shri Shri ... Ashram
BANARAS

पद-संख्या	पद			पृष्ठ
१५.	स्याम ! मोहिं चरन-सरन अब दीजै	...	...	१२
१६.	मैं हरि ! सब विधि तेरो चेरो	...	...	१३
१७.	मैं हरि ! सब विधि सदा तिहारो	...	...	१४
१८.	स्याम ! मोहिं अपनो ही करि मानो	...	...	१४
१९.	अपनी वस्तु सँभालो स्याम !	...	...	१५
२०.	सरन तकि आयो प्रभु तुव द्वार	...	...	१६
२१.	स्याम ! तुव चरन-सरन जो पाऊँ	...	...	१६
२२.	स्याम ! तोरी चरन-सरन मोहिं भावै	...	...	१७
२३.	चरन-सरन मैं आयो प्यारे ! करहु कृपाकी कोर		...	१८
२४.	मोहि हरि ! चरन-सरन अब दीजै	...	...	१९
२५.	प्रीतम ! प्रीति-प्रसादी पाऊँ	...	...	१९
२६.	ठाड़ी द्वार तिहारे प्यारे! चरन-सरन दो दीनानाथ		...	२०
२७.	प्रानधन ! कैसे तुमहिं विसारूँ	...	...	२१
२८.	प्यारे ! प्रीतिमात्र रह जाऊँ	...	...	२१
२९.	स्याम ! मोहिं पावन पद-रति दीजै	...	...	२२
३०.	स्याम ! मोहिं तेरी सुरति सतावै	...	...	२३
३१.	कोउ इक चेरी तेरी स्याम !	...	...	२३
३२.	हरि ! तुम सदा-सदासे मेरे	...	...	२४
३३.	श्याम ! तुम मेरे मेरे मेरे	...	...	२४
३४.	स्याम ! मैं तेरी तेरी तेरी	...	...	२५
३५.	तुम्हारी जनम-जनमकी चेरी	...	...	२६
३६.	मोहिं हरि अपनो ही करि मानो	...	...	२६
३७.	कहा कहौं मैं बात हियेकी, अबलौं स्याम! न दरस भये		...	२७
३८.	तुमने खूबहि नाँच नचायो	...	...	२७
३९.	हरि ! हौं सब विधि तुमसों हारो	...	...	२८

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पद-संख्या	पद	पृष्ठ
४०.	तुम जैसे नाँच नचायो श्याम ! मैं नाचूंगी	२९
४१.	स्याम ! मैं तेरा खेल-खिलौना	३०
४२.	स्याम ! मैं तेरा एक खिलौना	३०
४३.	है यह खेल-खिलौना प्यारे ! खेलो खेल सदा मन-माने ...	३१
४४.	स्याम ! मैं केवल यन्त्र तिहारो	३२
४५.	हरि ! मैं तेरी ही ह्वै रहिहों	३२
४६.	तुम्हें मसखरी सूझी प्यारे ! मैं नित मरूँ लाजकी मारी ...	३३
४७.	प्राणधन ! सदा-सदा मैं तेरी	३४
४८.	प्रानधन ! प्रियतम परम उदार	३४
४९.	दरश-लालसा लगै हृदयमें—यही लालसा मेरे श्याम ! ...	३५
५०.	श्याम ! अब साँची लगन लगा दो	३६
५१.	बसहु मनमें मनमोहन लाल	३६
५२.	सदा हो तेरे मनकी श्याम	३७
५३.	मोहिं हरि ! तुम बिनु कछु न सुहाय	३७
५४.	प्राणोंके तुम प्राण लाड़िले ! तुम बिनु धारूँ कैसे प्राण ...	३८
५५.	प्राणधन ! कैसे तुमको पाऊँ	३९
५६.	कान्ह ! अब कैसे काटूं रैन	३९
५७.	प्यारे ! यह मन मरो न मानें	४०
५८.	व्यथा मैं काकों स्याम ! सुनाऊँ	४१
५९.	स्याम ! मैं कब लौं बाट निहारूँ	४१
६०.	प्यारे ! कैसे कहा करूँ ?	४२
६१.	प्रानधन ! कैसे धीरज धारूँ	४२
६२.	प्रानधन ! कैसे मन समझाऊँ	४३
६३.	प्यारे ! पन्थ न कोऊ सूझै	४३
६४.	स्याम ! मोहिं तेरी सुरति सतावै	४४

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY
No. 8/64 ....(६)
Shri Shri Anandamayee Ashram
BANARAS

पद-संख्या	पद	पृष्ठ
६५.	आओ जी आओ, घनस्याम ! वाट मैं जोह रही ...	४४
६६.	स्याम ! अब अधिक न नाँच नचाओ	४५
६७.	ओ छैल-छबीले मनमोहन ! तुम क्यों हमको तरसाते हो ...	४६
६८.	एहो ! अभिराम स्याम ! बात का बिचारी ...	४६
६९.	स्याम ! तुम मो मन-भवन पधारो	४७
७०.	स्याम ! अब वेगहि लेहु बचाय	४८
७१.	दयामय ! क्यों निठुरई धरी	४८
७२.	स्याम ! मैं तरसि-तरसि रह जाऊँ	४९
७३.	हरि ! हौं तरसि-तरसि रह जाऊँ	५०
७४.	मनमोहन जीवन-धन प्यारे ! अब तो करो कृपाकी कोर ...	५०
७५.	हे जीवन-धन ! मन-मोहन ! प्राण हमारे	५१
७६.	आइये गोपाललाल ! दरस-दान दीजै	५२
७७.	मेरे प्यारे साँवरे ! काहे रहे तरसाय	५३
७८.	तुम ही हो जीवन-धन प्यारे ! तुम बिनु पड़ै न पलभर चैन	५४
७९	जैसो तुमहिं सुहाय स्याम ! सोइ कीजिये	५४
८०.	कान्ह ! कछु करुना-कोर करो	५५
८१.	हरिजू ! मेरी हूँ सुधि लीजै	५५
८२.	भटकि-भटकि हारी हौं प्यारे अब तो दया-दान दीजै ...	५६
८३.	श्याम ! अब जीवन-ज्योति जगा दो	५७
८४.	स्याम ! मोहि अपनी गैल दिखा दो	५८
८५.	आओजी आओ नँदलाल ! तिहारे मैं द्वारे खड़ी ...	५८
८६.	स्याम ! यह भिच्छुक ठाड़ौ द्वारे	५९
८७.	कृपानिधि ! कृपा-वारि बरसाओ	६०
८८.	स्याम ! तोरी करुना कहा सुनाऊँ	६०
८९.	स्याम ! तोरी करुनापै बलि जाऊँ	६१

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पद-संख्या	पद	पृष्ठ
९०.	आयो द्वार तिहारे प्यारे! खोल किवरिया साँवरिया ...	६२
९१.	स्याम ! मैं कैसे तुमहिं पुकारूँ	६२
९२.	स्याम ! मोहिं एक भरोसो तेरो	६३
९३.	स्याम ! तोरी कृपा-कोर नित ध्याऊँ	६४
९४.	ललन ! तोरी लीला लखि न परै	६४
९५.	ऐसी कहा चूक भई मोसों	६५
९६.	प्यारे ! तुमसों नेह न लागो	६६
९७.	स्याम ! यह व्यर्थहि वयस गई	६६
९८.	स्याम ! मैं कैसे कहा करूँ	६७
९९.	मैं हरि ! का मुख लै मुख खोलूं	६७
१००.	हरि ! हौं रह्यो भजनको भूखो	६८
१०१.	स्याम ! मैं कैसे तुमहिं बुलाऊँ	६९
१०२.	कान्ह ! का ऐसे ही वय जइहै	६९
१०३.	स्याम ! मैं कैसे करि सचु पाऊँ	७०
१०४.	प्यारे ! और न अधिक सताओ	७१
१०५.	स्याम ! मोहिं अपनो ही करि मानो	७२
१०६.	प्यारे ! क्यों निठुरई धरी	७२
१०७.	स्याम ! यह वयस वृथा जनि जावै	७३
१०८.	स्याम ! तुम रखहु विरदकी लाज	७४
१०९.	ऐसे कैसे निबहै स्याम	७४
११०.	स्याम ! मैं काकों व्यथा सुनाऊँ	७५
१११.	प्यारे ! विलपत वयस गई	७६
११२.	हरिजू ! मैं हार्यो तुम जीते	७७
११३.	काहे निठुर भये मनमोहन! अब यह विपत न जात सही ...	७७
११४.	प्यारे ! तुमसों नेह न लाग्यो	७८

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पद-संख्या	पद			पृष्ठ
११५.	मोहिं हरि ! सूझत और न ठौर	...	...	७९
११६.	हरि ! मोहिं तुमहीसों अब काम	...	...	७९
११७.	हमें तुम प्रीति-रीति समझा दो	...	...	८०
११८.	प्रानधन ! अब न अधिक भटकाओ	...	...	८१
११९.	प्रानधन ! कब लौं पन्थ निहारूँ	...	...	८१
१२०.	स्याम ! मैं क्यों न तरसि रह जाऊँ	...	...	८२

विरह-माधुरी

१२१.	कैसे हो जीवन जीवन-धन	...	...	८३
१२२.	सखि ! हौं कासों व्यथा कहों	...	...	८३
१२३.	स्याम बिनु बैरिन वयस भई	...	...	८४
१२४.	मनकी कसक न कबहूँ जाय	...	...	८५
१२५.	मनकी पीर कौन-सों कहिये	...	...	८५
१२६.	स्याम ! मैं मन मसोसि रह जाऊँ	...	...	८६
१२७.	मनकी मन ही माहिं रही	...	...	८७
१२८.	स्याम ! मोहिं जीकी जरनि जरावै	...	...	८७
१२९.	जरनि यह कैसे जियकी जाय	...	...	८८
१३०.	अब मैं कैसे कहा करूँ	...	...	८८
१३१.	यह तन तरसि-तरसि रह जइहै	...	...	८९
१३२.	मोहिं सखि ! कैसेहुँ स्याम मिलाओ	...	...	९०
१३३.	स्याम विनु कैसे जिऊँ री माई	...	...	९१
१३४.	स्याम ! मैं कैसे करि सचु पाऊँ	...	...	९२
१३५.	स्याम ! मैं तड़पि-तड़पि रहि जाऊँ	...	...	९२
१३६.	नयना तरसत ही रह जइहैं	...	...	९३
१३७.	कैसे करि यह मन समुझाऊँ	...	...	९३

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पद-संख्या	पद	पृष्ठ
१३८.	आली ! इन नैननि ललक लगी	९४
१३९.	स्याम ! मैं तुमकहँ कहा सुनाऊँ	९५
१४०.	मेरो मन कैसेहुँ चैन न पावै	९५
१४१.	मैं तो बींधी स्याम-नयन-सर, कैसे जिऊँ री बीर ! ...	९६
१४२.	ऐसे हि तरसि-तरसि दिन जइहैं	९७
१४३.	मोहिं सखि ! स्यामहि स्याम सुहावै	९७
१४४.	अब मोहिं और कछू न सुहावै	९८
१४५.	पिया बिनु कैसे सरै री बीर	९९
१४६.	मेरो मन तरसि-तरसि रह जाय	१००
१४७.	स्याम बिनु कैसे चैन परै	१०१
१४८.	पिया ! मैं तुम बिनु तरसि मरी	१०१
१४९.	मेरो मन भटकि-भटकि रह जाय	१०२
१५०.	टेरत-टेरत बयस सिरानी	१०३
१५१.	लोचन भये श्याम-रस-रोगी	१०३
१५२.	मेरे पिया बसहिं परदेश सखी री ! मैं कैसे साज सजाऊँ	१०४
१५३.	कोई मोहिं सुन्दर स्याम मिलावै	१०४
१५४.	हियमें आस एक लखात	१०६
१५५.	मोहिं सखि ! स्यामहिकी सुधि भावै	१०६
१५६.	हाय ! सब वयस स्याम बिनु बीती	१०७
१५७.	सखी ! यह बुरो बिरहको तीर	१०८
१५८.	तलफत ही सब रैन सिरानी	१०९

स्वरूप-माधुरी

१५९.	निभृत निकुञ्ज माहिं निरखहु सखि !	११०
१६०.	सोहहिं नव निकुञ्ज-मन्दिरमें	१११

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पद-संख्या	पद	पृष्ठ
१६१.	देखो, देखो री सजनी! इत कुञ्ज-भवनमें जुगल विराजे	११३
१६२.	स्याम-छवि निरखि-निरखि न अघाऊँ	११४
१६३.	हम-तुम एक तरुके सखा	११५

प्रीति-माधुरी

१६४.	आज हरि ! मंगल-रास रचाओ	११६
१६५.	सखि ! मैं प्रीतम-प्रीति-दिवानी	११७
१६६.	स्याम ही मेरे जीवन-प्रान	११७
१६७.	मोहिं तुम ऐसेहि नाँच नचाओ	११८
१६८.	लोचन मरहिं रूप-रस-प्यासे	११८
१६९.	मेरे तो सब कुछ तुम ही श्याम	११९
१७०.	प्रीतिकी प्यास न घटने पावै	११९
१७१.	मैं ठकुर-सुहाती गाती री ! मैं ठकुर-सुहाती गाती ...	१२०
१७२.	मेरो मन दरस-परसकों तरसै	१२१
१७३.	मोहिं लगन लगै घनस्यामकी	१२२
१७४.	मो मन एकहि रस सरसावै	१२३
१७५.	कासों बात हियेकी कहिये	१२३
१७६.	एक साध बस उरमें धारूँ	१२४
१७७.	प्रीतिकी व्यर्थहि बात बनाऊँ	१२४
१७८.	मो मन कब वह छवि विलसैगी	१२५
१७९.	तुम बिनु कैसे जिऊँ मेरे प्रान	१२६
१८०.	बसें मेरे मन-मन्दिरमें स्याम	१२६
१८१.	तुम्हीं हो सब कुछ मेरे श्याम !	१२७
१८२.	प्रेम ही सकल सारको सार	१२८
१८३.	मनकी पीर मनहिमें सहिये	१२८

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पद-संख्या	पद	पृष्ठ
१८४.	मो मन सुन्दर स्याम बसैं	१२६
१८५,	मोहिं सखि ! हरि-दरसनको चाव	१२६
१८६.	मनमें यही चटपटी लगी	१३०
१८७.	स्याम ! तोहि नैनन हीमें राखूं	१३१
१८८.	कोउ मोहिं स्यामा-स्याम मिलावै	१३२
१८९.	स्याम बिनु कैसे सखी ! सरै	१३३
१९०.	स्याम बिनु पलहूँ कल न परै	१३४
१९१.	सखि मोहिं प्रीतम टेरि बुलावत है री !	१३५
१९२.	रहे नहिं प्रानन हूँ को मोह	१३५
१९३.	सखि ! मैं एकहि साध मनाऊँ	१३६
१९४.	अब मोहि एकहि लगन लगी	१३७
१९५.	मोहिं सखि ! स्यामहि स्याम सुहावै	१३७
१९६.	मनुआँ स्यामहि स्याम ररै	१३८
१९७.	नयना जुगल-रूप-रस प्यासे	१३८
१९८.	अब तो स्यामहि सों लौ लागी	१३९
१९९.	जाहि लगन ललनकी लागै	१४०
२००.	श्याम ! मैं तेरी तेरी तेरी	१४१
२०१.	सखी री ! सब लगन गयीं वहै छकनि छाई ...	१४२
२०२.	काहूकी बरजी न रहूँगी	१४२
२०३.	सखी री ! मैं सदा-सदासों स्यामकी	१४३
२०४.	मैं तो स्याम हि के रँग राची री !	१४४
२०५.	मोहिं सखि ! स्यामहि की सुधि आवै	१४५
२०६.	स्याम विनु और न कछु मैं जानूं	१४५
२०७.	मन ! तू श्याम-श्याम ही गा रे !	१४६
२०८.	अब मैं हारि तुमहिं सों ठानी	१४७

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY
No. 8164
Shri Shri Ma Anandamayee Ashram
BANARAS

पद-संख्या	पद			पृष्ठ
२०९.	सखि री ! स्याम कथा जनि कहिये	...	...	१४७
२१०.	बात हियेकी कासों कहिये	...	...	१४८
२११.	प्रीति बिनु प्रियतम ! प्रान पिराने	...	...	१४९
२१२.	लोने ललन-ललीकी सुखमा निरखि-२ निरखत ही जइये			१४९
२१३.	प्रीति-रस पियत न प्रान अघावें	...	...	१५१
२१४.	प्रीतिमें अतिशय कबहुँ न भासै	...	...	१५१
२१५.	पिया-मिलनकी चाह जगै उर, यही जीवकी दशा भली है			१५२
२१६.	प्रेम-गली अति बाँकी, यामें सबकी पैठ न होय		...	१५३
२१७.	प्रीति-पुरीकी रीति निराली	...	...	१५४
२१८.	प्रीतिकी प्यास न बरनी जाय	...	...	१५६
२१९.	प्रीति-रस सकल सारको सार	...	...	१५६

विवेक-माधुरी

२२०.	स्याम ! मैं कैसे तुम्हिं सुहाऊँ	...	...	१५८
२२१.	प्रानधन ! कैसे तुम्हिं सुहाऊँ	...	...	१५८
२२२.	मन ! तू कहाँ-कहाँ भटकत है	...	...	१६०
२२३.	मन ! इत-उत क्यों भटकै रे !	...	...	१६०
२२४.	तू तनकी तृष्णा त्याग रे ! तेरे क्लेश कटेंगे	...	...	१६१
२२५.	तुम्हीं सबके सब कुछ सरकार	...	...	१६२
२२६.	रमे हो सबहीमें तुम स्याम	...	...	१६३
२२७.	हमारे सब कुछ तुम ही श्याम	...	...	१६३
२२८.	भजन बिनु वादहि वयस बिताई	..	...	१६४
२२९.	तुम्हारे गुणगण मैं क्या गाऊँ	...	...	१६४
२३०.	मनकी कैसी दसा बताऊँ	...	...	१६५
२३१.	हृदयकी पीर कहाँ सों पाऊँ	...	...	१६६

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पद-संख्या	पद	पृष्ठ
२३२.	अब मैं सब प्रमाद हरि ! तजिहों	१६६
२३३.	जैसे बनै स्याम-गुन गाओ	१६७
२३४.	या मनकों साँची सिख दीजै	१६८
२३५.	चल सखि! मेरे साथ, आज मैं हरिसे तुझे मिलाऊँगी ...	१६९
२३६.	किया बहुत कुछ हुआ न कुछ भी-यही हमारा है निष्कर्ष	१७०
२४७.	जीवन ऐसे ही हरि बीत्यौ	१७१
२३८.	श्याम ! तुम हमें न अधिक छकाओ	१७१
२३९.	तेरा तन है, तेरा मन है, तेरा ही है सब संसार ...	१७२
२४०.	प्रानधन ! ऐसेहि जनम गँवायो	१७३
२४१.	कहों का मूढता या मनकी	१७४
२४२.	जाहि न हरिकी बात सुहावै	१७५

लीला-माधुरी

२४३.	सखि ! मोंहि मोहनकी छवि भावै	१७६
२४४.	आजु उर उमँग्यौ अमित उमाह	१७६
२४५.	सुन-२ सखि ! मनमोहनकी यह मधुर मुरलिका गूंज रही	१७७
२४६.	मुरलिके ! तू काहे बेचैन	१७८
२४७.	निरखहु सखि ! नन्दनँदन वनसों व्रज आये ...	१७९
२४८.	विपिन विच विहरहिं स्यामा-स्याम	१८०
२४९.	आजु जुगलवर रास रचायो कालिन्दी कल कूल री सजनी!	१८१
२५०.	आजु बन्यौ सखि ! भाव नयो री !	१८२

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रीराधेश्याम

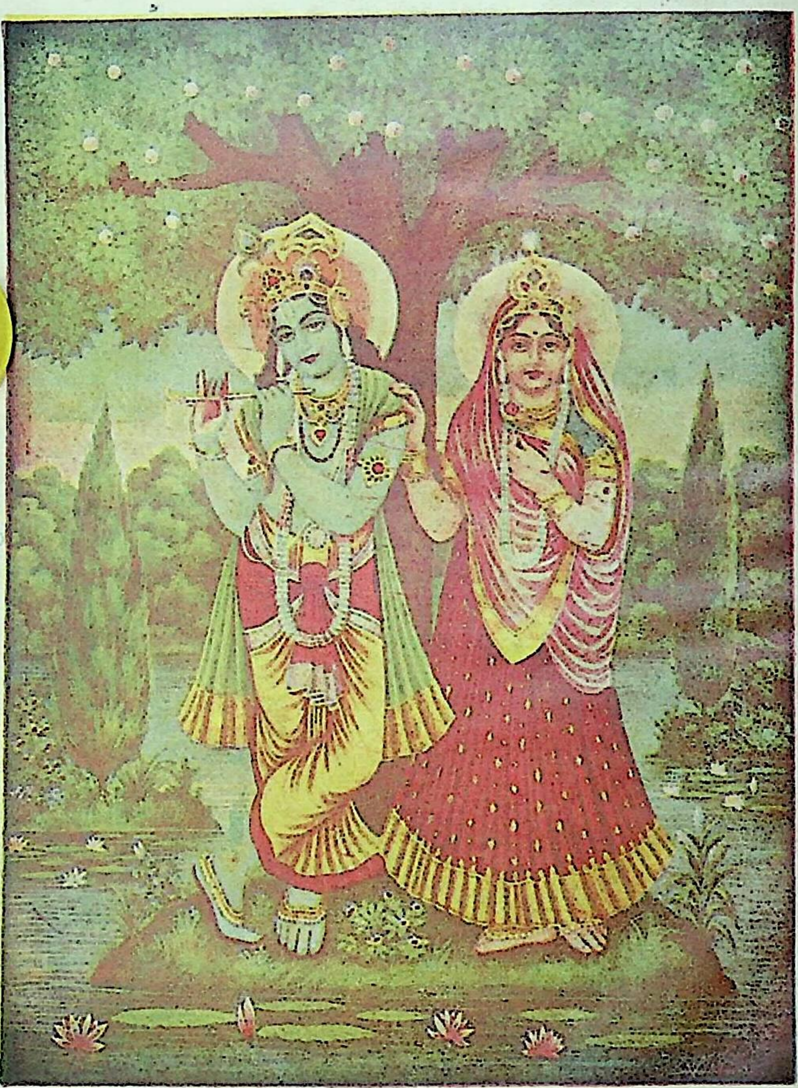

मुद्रक—गीताप्रेस, गोरखपुर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

वन्देऽमन्दविभाविभासितमुखं राधामुकुन्दद्वयम् ।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ॐ

* श्रीश्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः *

माधुर्य-मञ्जूषा

[१]

मंगल-माधुरी

(दोहा)

राग देश, कहरवा

मेरे प्यारे साँवरे! तुम कित रहे दुराय।
आओ मेरे लाड़िले! प्रान रहे अकुलाय ॥१॥

ललित लड़ैती लाड़िली! पियकी जीवन-प्रान।
चरन-सरन निज राखिके करहु प्रीति-प्रतिदान ॥२॥

नवल जुगलके नेहकी जामें उठहिं तरंग।
मो मानस-सरमें लसै सो सुचि सलिल अभंग ॥३॥

आस-त्रास सब छाँड़िकै लगै प्रीति को प्यास।
भुक्ति-मुक्तिकी मुक्ति करि विलसै जुगल-विलास ॥४॥

ललन-ललीकी प्रीति हो मेरी जीवन-नीति।
बस, या ही रस-रीतिसों मिटै सकल भव-भीति ॥५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विनय-माधुरी

युगल स्मरण ॥१॥

राग आसावरी, तीन ताल ७-६-१९७३

सुमिरिये स्यामा-स्याम सकारे।
स्यामा स्नेह-सुधाकी सरिता, स्याम हि साँचे सुहृद हमारे ॥
स्यामा घरमें स्यामा वनमें, स्यामा-स्नेह सुधा संचारे।
स्याम सदा कन-कनमें सोहें, स्याम सरिस को हितू हमारे ॥१॥
मतिगति सुरति विरति में स्यामा, स्यामा सकल विपति-छति टारे।
तन मन धन जन सबहि स्यामके, स्यामहिं साँचे सदन हमारे ॥२॥
सान्ति छान्ति[1] की सीमा स्यामा, स्यामा भ्रान्तिक्रान्तिसंहारे।
माया छाया सदा स्यामकी, स्याम बिना को भव-भय टारे ॥३॥
करुनाकी वरुनालय[2] स्यामा, दीन-हीन तिनकों अति प्यारे।
हैं अनन्य-सरनागत-वत्सल सुन्दर स्याम सरन्य हमारे ॥४॥
स्यामा-स्याम-सील का कहिये, सील-सिन्धु हैं जुगल हमारे।
चरन सरन जो लेत जुगल की, सपनेहुँ सहहिं न अन्य सहारे ॥५॥

पद-परिचर्या ॥२॥

राग काफी, ताल दीपचन्दी १५-३-१९७३

जुगल की पद-परिचर्या पाऊँ।
नील-पीत-अम्बुजकी आभा निरखि-निरखि अतिसय सचु पाऊँ॥
ते पद-पदुम भाल-भूसन मम, तिनकी रजसों तिलक लगाऊँ।
भाव-भर्गतसो अंक-पीठ धरि, अति रुचिसों नित लाड़ लड़ाऊँ ॥१॥

१. क्षान्ति, क्षमा। २. समुद्र।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुमन-सेज पौढ़ाय चावसों चरन चाँपि निज भाग्य मनाऊँ।
विरह-व्यथित उरसिज[1]-सरसिज[2] धरि
या तन-मनकी तपन बुझाऊँ ॥२॥

मनिगन-खचित पुरट[3]-पायल अरु मनि-नूपुरसों तिनहिं सजाऊँ।
अरुन अलक्तकमय जावक[4]सों चित्रित करि पुनि-पुनि पुलकाऊँ॥३॥

नेह-नीरसों सींचि-सींचि पुनि नयनन ही में उनहिं बसाऊँ।
ललित लाड़िली-लालनकी जो कृपा होय तो कहा न पाऊँ।४॥

रहूँ सदा उनही की ह्वै बस, उनही के गुनगन नित गाऊँ।
प्रीति पुनीत पाय प्रिय-प्यारी-पायन की अलिनी बनि-जाऊँ ॥५॥

श्रीजीके चरण ॥३॥

राग वृन्दाबनी सारंग, ताल दादरा २४-१२-१९७२

जावकयुत पद-पदुम ललीके।
मनिगन-खचित जलजकी उपमा सकुचत निरखि-२ अति नीके ॥
ललित ललन-लालित अति लौने, निजधन सदा-सदा मो जीके।
मनि-नूपुर-मण्डित पायलयुत विजय-वाद्य मन्मथ-मथनी[5] के ॥१॥
ब्रह्मा-सम्भु-सेस-सेवित हरि, तिनहूँ सों सेवित अति नीके।
जिनकी अमल धवल सुखमा सों विधु-वारिज हूँ लागत फीके ॥२॥
जिनकी नखच्छटासों उपजत कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड महीके।
जिनहिं वन्दि सुर-मुनि बड़भागी प्रीतिपात्र नित होत हरीके ॥३॥
जिनके कृपालेस सों प्रीतम अपनावत अधमहुँ जन नीके।
अलिवत बँध्यो रहे तिनमें मन, छके न पियत प्रीति-रस पीके ॥४॥

१. स्तन वक्षःस्थल। २. कमल। ३. सुवर्ण। ४. महावर।
५. कामदेवका मथन करनेवाले श्रीकृष्ण।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(४)

राग बहार, तीन ताल २८-१०-१९७२

प्रियाजू के पद-पदुम परूँ।
जावकयुत अति अमल कमल-सम उर-पदपीठ धरूँ॥
निरखि-निरखि नवनीत-मृदुलता परसत पानि[1] डरूँ।
भाव भगतिमयि पुहुपावलिसों पूजन सतत करूँ॥१॥
मुनिजन ध्यान धरहिं, हौं तिनकी महिमा कहा करूँ।
जिन पद-पंकजके अलि प्रीतम, कैसे ते बिसरूँ॥२॥
कृपा होय तिनकी तो मैं फिर जम सों कहा डरूँ।
तृनसम तोरि सकल भवबन्धन प्रीति-वीथि बिचरूँ॥३॥
नख-मनिकी उज्ज्वल आभासों उर-तम-तिमिर हरूँ।
पद-रजसों रज[2] माँजि हिये सुचि-सत-रवि-प्रगट करूँ॥४॥
एहि विधि तीनिहुँ गुनगन परिहरि चिन्मय देह धरूँ।
चित्स्वरूप पद-पंकज भजि-भजि चिल्लीला[3] विहरूँ॥५॥

चरण-शरण ॥५॥

राग भैरवी, ताल कहरवा २३-३-१९७३

लड़ैती ! चरन-सरन मोहिं दीजै।
जिनचरननके अलि मन-मोहन, तिनही की अलिनी करि लीजै॥
अति उदार सुकुमार सुभग सुचि, तिनकी कृपा सकल मल छीजै।
कृपा होय पुनि प्रीतम हूँ की, प्रीति पुनीत पाय जग जीजै॥१॥
प्रीति-पियूष-पान जिन पायौ, तिनकी सरवरि[4] कासों कीजै।
रिधि-सिधि, भुक्ति-मुक्ति सब फीकी, ता रसकी कनिका जब पीजै॥२॥

---

१. हाथ। २. रजोगुण। ३. चिन्मयी लीला। ४. बराबरी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ताहीकों तरसत मन मेरो, क्यों करि सो अनुपम रस लीजै।
करुनामयि ! बिनु कृपा रावरी[1] ता रमसों काको मन भीजै ।।३।
सदा-सदासों हौं तब किंकरि, अपुनीकों अपुनो करि लीजै।
तुमसों बिछुरि बहुत दुख पायो, अबतो कृपा-कोर कछु कीजै ।।४।।

(६)

राग भैरव, तीन ताल १६-५-१९७३

राधे ! चरन-सरन मोंहि दीजै।
तुम सों बिछुरि बहुत दुख पायौ, अब तो करुना कीजै ।।
सदा-सदा की चरन किंकरी, चरन त्यागि कत जीजै।
नीर बिना ज्यों मीन दीन अति, त्यों तलफत तन छीजै ।।१।।
सेवा की है हौंस[2] सदा सों, सो करुना करि दीजै।
चरन चांपि सिर थापि रहौं तो हिय तब प्रीति पतीजै[3] ।।२।।
कहा करों कैसे बय बीते, विरह व्यथा किमि छीजै।
सुमिरि-सुमिरि तब स्नेह-सुधाही तरसत तनु जनु जीजै ।।३।।
पिया-दरस की सरस तरस हिय, कासों कहि का लीजै।
प्रीतम की हो प्रान पियाजू ! मेरी हुँ चरचा कीजै ।।४।।
बहुत भई अब सहि न जात है, कैसेहुँ करुना कीजै।
प्रीति-पियासे प्रान जात हैं, तिनहिं राखि जस लीजै ।।५।।

गुण-गान ।।७।।

राग सारंग, ताल धमार १९-५-१९७३

राधिके ! तेरे गुनगन गाऊँ।
तेरे रूप सील सुखमाको उपमा कोऊ कतहुँ न पाऊँ ।।

१. आपकी। २. उत्साह, शौक। ३. विश्वास करे।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कोटि-कोटि रति की छवि हूँ तव रूपरासि पै वारि लुटाऊँ।
रमा उमा ब्रह्मानी हूँ की मति-गति भ्रमित थकित सी पाऊँ ॥१॥
निरखि-निरखि तव सील स्वामिनी !
प्रीतम हूँ की प्रीति भुलाऊँ।
कृपा-कोर की ओट मिली तो जमको गम कैसे उर लाऊँ ॥२॥
प्रीति पुनीत निरखि तव राधे ! नीति-भीति पलमें बिसराऊँ।
निज जनकी निरबधि निधि है तू, तुव करुना सों कहा न पाऊँ ॥३॥
स्नेह-सुधा-सींची तुव सहचरि, यहसुहागलखि सदा सिहाऊँ।
अतिउदारसुखसारस्वामिनी! तुव गुनगन पै बलि-बलिजाऊँ ॥४॥

प्रीति-प्रार्थना ॥८॥

राग अहीर भैरव, ताल कहरवा ६-६-१९७३

प्रीतम-प्रीति-पगी श्री राधे ! प्रीति-दान मोहिं दीजै।
आय परी हूँ पौरि तिहारी, अपनी ही करि लीजै ॥
प्रीतम की हो लाड़िली ! तुम प्रानहुँ की प्रान।
चिर-चेरी निज जानिके, करहु प्रीति-प्रतिदान ॥
करहु प्रीति-प्रतिदान स्वामिनी ! एती करुना कीजै ॥१॥
तुम बिनु मेरो प्रियाजू ! तिहुँपुर कोउ न और।
अपनी ही कोउ जानिके देहु पौरि पै ठौर ॥
देहु पौरि पै ठौर दयामयि ! सेवा को सुख दीजै ॥२॥
पौरि झारि नित निरखि हूँ आवत-जावत तोहि।
दरस-परस सों सरस करि हरस दीजिये मोहिं ॥
हरस दीजिये मोहिं छोह करि नैननि बसि बस कीजै ॥३॥
कृपा-कोर जो होय तो चरन-चाकरी देहु।
चरन चाँपि सुख मानि हों, अनुदिन बाढ़हि नेहु ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अनुदिन बाढ़हि नेहु नेह-निधि ! यही दान मोहिं दीजै ॥४॥

कहा कहौं करुनामयी ! तुमसों कहा दुराव ।
चरन-सरन जो मिलहि तो बनि है सबहि बनाव ॥
बनि है सबहि बनाव नतरु तनु विरह-व्यथामें छीजै ॥५॥

(६)

राग अहीर भैरव, ताल कहरवा १३-६-१९७२

प्रीतम-प्रान-पोसिनी राधे! कैसे करि मैं तुमहिं मनाऊँ ।
कृपा-कोर जो होय रावरी, मैं हूँ प्रीति-प्रसादी पाऊँ ॥
हे मनमोहन-मोहिनी ! महाभाव-रस-मूर्ति ।
मम मन-मन्दिरमें सदा हो तव मधुर स्फूर्ति ॥
हो तब मधुर स्फूर्ति लाड़िली !
सुमिरि-सुमिरि तव रस-रति पाऊँ ॥१॥

राधे ! मन्मथ-मथन को मन-मथनी रसखानि ।
चरन-चारिका जान मोहिं करहु प्रीति-रस-दान ॥
करहु प्रीति-रस-दान लड़ैती !
निसि-दिन मैं तुव गुनगन गाऊँ ॥२॥

स्याम-सुधा-रस-रंगिनी ! स्याम-सँजीवन-मूरि ।
चरन-सरन तव वरन करि पाऊँ पग-तल-धूरि ॥
पाऊँ पग-तल-धूरि प्रियाजू !
सिर धरि निज सौभाग्य मनाऊँ ॥३॥

ललित लाल-लालित चरन बन्दहुँ बारंबार ।
चाव भरी चापूँ सदा हुलसि-हुलसि हिय धार ॥
हुलसि हुलसि हिय धारि स्वामिनी !
जावक रचि-रचि अति हुलसाऊँ ॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कहा करूँ, का-का कहूँ, रहूँ सदा मन मारि।
व्यथा-कथा कहि कहि थकी, सुनी न अबहुँ पुकार।।
सुनी न अबहुँ पुकार दयामयि!
कब लों जियकी जरनि जराऊँ।।५।।

प्रियतम के प्रति।।१०।।

राग भूपाली, तीन ताल २८-१०-१९७२

स्याम! तव चरन-कमल-रति पाऊँ।
या मनको मनमोहन प्यारे! अलिवत् तुव पद-पदुम बसाऊँ।।
अरुनिम तलयुत स्याम पद-कमल, निरखि-२ अति हिये सिहाऊँ।
अरुनवरननख-मनि-आभा लखि, पदुमराग[1] मनिगन बिसराऊँ।।१।।
तुव पद-पदुम-छाँह तजि प्रीतम! कतहुँ न कबहुँ पलहुँ कों जाऊँ।
लीन रहूँ तिनके चिन्तन में, तन-मन हूँ की सुधि विसरऊँ।।२।।
जिनहिं पखारि विधिहुँ सुख मान्यों नयन-नीर सों तिनहिं न्हवाऊँ।
तरीपरसि मुनि-तरुनी जिन कहँ, तिन पद पै नित बलि-बलि जाऊँ।।३।।
रहूँ तिनहिं की सरन सदा, तिनकों तजि कबहुँ न कोउ बल पाऊँ।
तिनकी परम पुनीत प्रीति पै, तिहुँ पुरकी प्रभुताइ लुटाऊँ।।४।।

(११)

राग धनाश्री पूरिया, तीन ताल १२-१-१९७३

स्याम! मैं प्रीति-पदारथ पाऊँ।
देह-गेहकी बात न भासै, तुव गुनगन ही गाऊँ।।
लोक-वेद की लाज सकुच सब प्रीति-प्रवाह बहाऊँ।
सुमिरि-सुमिरि तुव नाम गुनावलि पुलकि-पुलकि सचु पाऊँ।।१।।

१. पुखराज।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ममता मोह द्रोह काहू सों कबहुँ न नैंकहुँ लाऊँ।
सबमें देखि एक तुमहीं कों मन ही मन सिर नाऊँ ॥२॥

रहै न अपुनो काज कहूँ कछु निज मन हूँ बिसराऊँ।
जो करवाओ करूँ वही, तुव जन्त्रमात्र रह जाऊँ ॥३॥

दरस-परसकी रहै लालसा, ललकि-ललकि अकुलाऊँ।
मिलिवो-ना मिलिवो तुम जानो, मैं मिलि-मिलि न अघाऊँ ॥४॥

रहै न कोउ लालसा उरमें, विरहानल सुलगाऊँ।
भासै विरह मिलनमें, निसि-दिन मिलते हुँ मिलन न पाऊँ ॥५॥

(१२)

राग जौनपुरी, तीन ताल २३-११-१९७२

प्यारे! तुम सों प्रीति न लागी।
ना हि जगत-चिन्तन मन त्यागो,
नाहि विषयरस की रुचि भागी ॥
भटकत रहत चित्त नित इत-उत,
विरह-व्यथा उर प्रबल न जागी।
भसम भई नहिं विषय-वासना,
जगी न हिये मिलनकी आगी ॥१॥

तनकी सुविधामें मन अटक्यौ,
भयो न स्याम-सुधा-रस-रागो।
निज बलको अब हूँ बल राखत,
होत न चरन-सरन-अनुरागी ॥२॥

ग्यान-मान की सान न छूटी,
बुधि बलमें अटक्यो हतभागी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जग्यौ न दैन्य दयानिधि! नैंकहुँ,
मति न चरन-रति-रसमें पागी ॥३॥
अपनी-सी हौं तो करि हार्‌यौ,
रह्यौ जहाँ को तहाँ अभागी।
कृपा-कोर जो करहु कृपानिधि!
तो हौं हूँ हुई हों बड़भागी ॥४॥

(१३)

राग हमीर, तीन ताल ४-१-१९७३

प्यारे! प्रीति-प्रसादी पाऊँ।
चहों न रिधि-सिधि भुक्ति-मुक्ति कछु,
केवल तुव करुना नित ध्याऊँ॥
नाते सबै तोरि इह-पर के,
एक तुमहि सों नेह दृढ़ाऊँ।
ममता-मोह न रहैं कहूँ कछु,
तुमही में निज निजता लाऊँ ॥१॥
अग-जगमें अग-जग न मिलै कहुँ,
केवल एक तुमहि कों पाऊँ।
सब में तुमहिं तुम हि में सब कछु,
निरखि-निरखि नित हिय हुलसाऊँ ॥२॥
तन मन धन जन कोउ न भासै,
सब में प्रियतम ही लखि पाऊँ।
रीति-प्रीति नित नूतन तुम महँ,
अनुदिन अधिक-अधिक बिकसाऊँ ॥३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

' Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विरह-मिलन जब जो कछु भासै,
कबहुँ न तुमसों प्रिय ! बिलगाऊँ।
सबमें सब विधि निरखि तुमहिं पुनि,
स्याम-छटा ही प्रति पल ध्याऊँ ॥४॥

लगै ललक नित दरस-परस की,
नयननि निरखि न कबहुँ अघाऊं।
प्रीति-पिपासा बढ़ै निरन्तर,
पियत-पियत हूँ प्यास हि पाऊँ ॥५॥

(१४)

राग विलावल, ताल कहरवा १६-४-१९७३

प्रियतम ! तुव पद-पदुम मनाऊँ।
जे पद निज धन सुर-मुनिगन के,
तिनकी कृपा सकल सुख पाऊँ॥
जिन पदकी अवनेजनि[१] सुरसरि,
तिनकी रज नित सीस चढ़ाऊँ।
तिनहिं वन्दि अघ-ओघ धोय सब
निरमल निज मन-भवन बनाऊँ ॥१।

तामें पुनि पधराय तुमहिं हरि !
तुमही कों नित लाड़ लड़ाऊँ।
तुमसों नेह दृढ़ाय निरन्तर,
तुम्हरी कृपा तुमहिकों पाऊँ ॥२॥

तन-मनके निज धन ते पदतल,
नयन-नीरसों तिनहिं न्हवाऊँ।

१. धोवन।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तिनकी रजसों माँजि मनोरज,
नीरज[1] ह्वै पद-नीरज[2] ध्याऊँ ॥३॥
मनिगन-जटित नील नलिनी सम,
निरखि-निरखि हिय अति हुलसाऊँ।
तिनकी अमल धवल आभा सों,
मानस तम तजि निज पद पाऊँ ॥४॥
ईति भीति अनरीति त्यागि सब
प्रीतम! तुव पद-प्रीति दृढ़ाऊँ।
प्रीति पुनीत पाय, अग-जगमें
तुमहिं निरखि पुनि कहा न पाऊँ ॥५॥

प्रपत्ति ॥१५॥

राग भीमपलासी, ताल कहरवा ७-११-१९७२

स्याम! मोहिं चरन-सरन अब दीजै।
तुम तजि और न है कोउ अपनो,
निज जन जानि दया अब कीजै॥
भटकि-भटकि हार्‌यो हरि! जगमें,
विषय-वारि यह तन-मन भीजै।
चरन-भवनकी ओट राखि प्रिय!
कैसेहु लोक-लाज रखि लीजै ॥१॥
जग जानत तुम्हरो जन मोकों,
तुमही सों यह हृदय पतीजै।
पै पुनि-पुनि विषयन प्रति भटकै,
याकों भजन-भाव निज दीजै ॥२॥

---

१. रजशून्य, निर्मल। २. नीरसे उत्पन्न, कमल

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अपनो बल कछु काम न आवै,
कहत-सुनत हूँ उर न पसीजै।
कृपा होय जो कछुक रावरी
तो बन जाय बात जो छीजै ॥३॥

जस-अपजसकी चित्त न चिन्ता,
केवल एक कृपा-कन दीजै।
रहे आस केवल चरनन की,
उर तव भाव-भगति-रस भीजै ॥४॥

(१६)

राग आसावरी, एक ताल ८-११-१९७२

मैं हरि ! सब विधि तेरो चेरो।

तू मेरो नायक नँदनन्दन ! मैं नित पायक तेरो ॥
तू पालक मैं बालक प्रीतम ! करत अचकरी हेरो।
तू स्वामी मैं सेवक, तो भी करों न काज सबेरो ॥१॥

मैं अबोध तू बोधमात्र, पै तोसों रहों अनेरो[१]।
तू समर्थ मैं दीन-हीन, पै रहों गरब सों घेरो ॥२॥

यहि विधि रहों सदा अपराधी, अनुगत रहौं न तेरो।
बलिहारी तेरी करुनाकी, कियो न सासन मेरो ॥३॥

करत रह्यो मन-मानी, पै तुम वरज्यो काज न मेरो।
अपनी-सी करि-करि मैं हारयो, बिसरायो बल तेरो ॥४॥

अपराधी हों जनम-जनम को, तदपि सदा सों तेरो।
अब तव चरन-सरन तकि आयो, कृपा-कोर करि हेरो ॥५॥

---

१. पृथक्, दूर।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कृपा-दृष्टि जो होय रावरी, बने काज सब मेरो।
चरन-चाकरी करि सचु पाऊँ, सदा-सदा सों चेरो ॥६॥

(१७)

राग वागेश्री, तीन ताल ३-११-१९७२

मैं हरि ! सब विधि सदा तिहारो।
तुम तजि और न कोउ गति मेरी, और न कोउ सहारो ॥
चरन-सरन ही सदन साँवरे ! और न कहुँ कोउ चारो।
तुम मम प्रान-प्रान हो प्रीतम ! तुम बिनु कोउ न हमारो ॥१॥
कहा कहौं, कछु कहत न आवै, अब सब हिम्मत हारो।
दरसनकों बेचैन नैन ये, अब तो स्याम ! पधारो ॥२॥
प्रीति-रीति नहिं नैकहुँ जानूँ, सिल[1]-सो हियो हमारो।
पै का करों, प्रानधन ! तुम बिन दीखत नाहिं गुजारो ॥३॥
'कैसो हू पै है अपनो ही' जो यह बात विचारो।
तो बनि जाय बात सब प्यारे ! निज जन जानि उबारो ॥४॥

(१८)

राग रागेश्री तीन ताल १०-१-१९७३

स्याम मोहि अपनो ही करि मानो।
चरन-कमल अति अमल छाँड़ि तब मोहिं न और ठिकानो ॥
जहँ-तहँ बहुत भटकि देख्यौ, पै कहूँ न मो मन मानों।
अब सब तजि तुव चरन-सरन हों—यही एक गति जानों ॥१॥

१. शिला, पत्थर।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तन मन धन जो कछु कहुँ भासत, निज करि नैंकु न मानों।
जो कुछ है तुव वैभव प्यारे! यही सार उर आनों ॥२॥

ज्यों जानो त्यों बरतो प्रीतम! सकुच न नैंकहु मानो।
तुव सुख ही सुख है अब मेरो, सुख-दुख और न जानों ॥३॥

अपने तो तुम ही हो प्यारे! प्रीति परम धन मानों।
यही प्रसादो देहु दयानिधि! और न कछु हौं जानों ॥४॥

(१६)

राग वागेश्री, एक ताल २१-१-१६७३

अपनी वस्तु सँभालो श्याम!
तन मन धन जो दिया आपने, मुझे न उससे काम ॥
सदा-सदासे देते आये, दिये सभी आराम।
लेते-लेते मैं न अघाया, बना न कुछ भी काम ॥१॥

तुमसे लिया न दिया तुम्हें कुछ, ऐसा नमक-हराम।
अब समझा, यह सब अपनाकर भूला तुमको श्याम ॥२॥

तुम ही मेरे सच्चे धन हो, तुम ही प्राणाराम।
तुम बिन व्याकुल प्राण प्राणधन! हो कैसे विश्राम ॥३॥

अब प्यारे! यह सब कुछ लेलो, दो निज प्रेम ललाम।
तुम दाता मैं सदा भिखारी, नाता यही निकाम[1] ॥४॥

साधन-आराधन न बना कुछ, हुआ न उर विश्राम।
अब तो चरण-शरण हूँ प्यारे! तुम जानो निज काम ॥५॥

---

१. नितान्त, निष्काम।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(२०)

राग मालकोस, ताल कहरवा ५-३-१९७३

सरन तकि आयो प्रभु ! तुव द्वार ।
करुनामय ! तुव कृपा-कोर ही मेरो एक अधार ॥
ना कछु करम-धरम ही कीन्हों, ना आचार-विचार ।
ग्यान-ध्यान को भाव न है कछु, ना उर प्रीति प्रचार ॥१॥

कैसे करि सम्मुख हरि ! आऊँ, भरे अनेक विकार ।
जनम-जनम अपराध अनेकन भये अनेक प्रकार ॥२॥

भयो निरास सबहिसों सब विधि, दीखत कोउ न अधार ।
जगमें अपनो लगत न अब कोउ तुम बिनु परम उदार ॥३॥

तुमही हो अब मेरे सब कुछ, प्रीतम प्राणाधार !
द्वार छाँड़ि अब अनत न जैहों, कृपा होउ वा मार ॥४॥

रिधि-सिधिसुमति-सुगतिनचहौं कछु, भुक्ति-मुक्ति निःसार ।
केवल प्रीति-प्रसादी पाऊँ, करहु कृपा सरकार ॥५॥

(२१)

राग दरबारी, तीन ताल २५-४-१९७३

स्याम ! तुव चरन-सरन जो पाऊँ—
तो अनुराग-सुहाग पाय अस अनुदिन तव पद-प्रीति दृढ़ाऊँ ॥
चहों न सुरपति हूँ की सम्पति, ब्रह्म-परम-पद हूँ ठुकराऊँ ।
लोक और परलोक त्यागि सब, तव लीला-गुनगन ही गाऊँ ॥१॥

जमको तम न रहै उरमें कछु, तव छवि-रवि मन-गगन बसाऊँ ।
छकि-छकि प्रीति-सुधातव प्रीतम ! नीति-रीतिकी भीत भुलाऊँ ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu ·Trust. Funding by MoE-IKS

होय न कोउ अनरीति कबहुँ कछु, सहज सनेह-सुधा सरसाऊँ।
सबको हित, परिमित प्रवृत्ति सब,
सबसों अमित सुचित नित लाऊँ ॥३॥
अति उदार, अनिवार दयानिधि!
तव पद पाय कहाँ पुनि जाऊँ।
ललकि-ललकि निरखहुँ तव पद-श्री,
मुख-मयंक हूँ लख न भुलाऊँ ॥४॥
कहा कहौं कछु कहत न आवै, मनमें उमँगि-उमँगि रहि जाऊँ।
कबहुँ कि कृपा होय हरि! ऐसी, जासों मनकी साध पुराऊँ ॥५॥

(२२)

राग काफी,ताल दीपचन्दी २-५-१९७३

स्याम! तोरी चरन-सरन मोहिं भावै।

जब सों तकी सरन चरननकी, और न कछू सुहावै ॥
ग्रन्थ-पन्थ सोधे बहु विधि मैं, तदपि न मन पतियावै।
अपनी-अपनी कहहिं सभी, पै तुमलगि कोउ न जावै ॥१॥

सब ही साँचे सब हि मान्य, सब जगकी जरनि मिटावैं।
पै जब लगि तुम्हरो न होय जन, तुमलगि को पहुँचावै ॥२॥

सबके साध्य, सबहि सों न्यारे—सबही तुमहिं बतावैं।
जो सब तजै, भजै, तुमही कों, सो ही तुव पद पावै ॥३॥

जप तप जोग ग्यान ध्यानहुँ की जहाँ न कोउ गति जावै—
सो ही तुम, तुव कृपा-कोर बिनु तुम लगि को कत आवै ॥४॥

सदा-सदा मैं स्याम! तिहारो, और न कोउ उर आवै।
तुम हूँ अपनो ही करि मानहुँ—यही भाव उर भावै ॥५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(२३)

व्रज-रसिया ४-५-१९७३

चरन-सरन मैं आयौ प्यारे ! करहु कृपा की कोर।
करहु कृपा की कोर साँवरे !
निरखहु मेरी ओर ॥ ए जी चरन-सरन०
तुमसों बिछुरि बहुत दुख पायो।
भटकि-भटकि सब जनम गँवायो।
अब सब त्यागि सरन तव आयो।
अपनो ही जन जानि दयामय !
दीजै दया-अकोर[1] ॥ ए जी चरन-सरन०
अपनो जगमें कोउ न भासै।
ऐसो को जो भव-भय नासै।
प्रीतम को पथ सहज प्रकासै।
सबसों नेह छुड़ाय लगावै,
एक तिहारी ओर ॥ ए जी चरन-सरन०
मैं तो अपनी-सी करि हारचौ।
निज बलने कोउ काज न सारचौ।
अब सब भार तुमहि पै डारचौ।
सदा-सदा मैं स्याम ! तिहारो,
अब राखो पत[2] मोर ॥ ए जी चरन-सरन०
कब लगि भटकि-भटकि दुख पाऊँ।
तुम्हरो ह्वै क्यों जगत हँसाऊँ ?
तुम सों प्रभु तजि अब कित जाऊँ ?
अपने कों अपनाय स्याम !
तुम बिगरी लेहु बहोर[3] ॥ ए जी चरन-सरन०

---

१. आलिंगन। २. लाज। ३. सुधार लो।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(२४)

राग केदार, तीन ताल २८-५-१६७३

मोहि हरि ! चरन-सरन अब दीजै ।
तुमसों बिछुरि बहुत दुख पायो, अब तो करुना कीजै ॥
भटकि-भटकि सब जनम गँवायो, कोउ न मोहि पतीजै ।
अब सब त्यागि सरन तकि आयो, ज्यों जानहु त्यों कीजै ॥१॥
मनकी लगन यही मनमोहन ! तन जीवै वा छीजै—
तुम्हरो ही ह्वै रहौं सदा, अब पलहूँ विलग न कीजै ॥२॥
सुख की आस न त्रास दुःखको, जो चाहो सो दीजै ।
अपनो अपनेमें न रहे कछु, जो कछु रहै सो लीजै ॥३॥
केवल कृपा-कोर तुव चाहौं, यही दान मोहि दीजै ।
प्रीति-पिपासा बाढ़ै अनुदिन, और सबै रस छीजै ॥४॥
अधिक और का कहौं कृपानिधि ! एती करुना कीजै ।
ह्वै अकाम यह मन मनमोहन ! भाव भगतिसों भीजै ॥५॥

प्रीति-प्रार्थना ॥२५॥

राग दुर्गा, ताल झप ६-४-१६७३

प्रीतम ! प्रीति-प्रसादी पाऊँ ।
बीती वयस वृथा ही प्यारे ! अब तो सफल बनाऊँ ॥
भटकत रह्यौ विषय-विष-वीथिन, अब उर बहुत डराऊँ ।
अभय छाँह जो मिलै चरनकी तो इत उत कित जाऊँ ॥१॥
उरमें अब अभिलाष न कोऊ, केवल तुव गुन गाऊँ ।
दया-दान करि पोसहु प्यारे ! दरस-परस-रस पाऊँ ॥२॥
बहुत गई, जो रही साँवरे ! सो तुव भेट चढ़ाऊँ ।
केवल प्रीति-पिपासा दीजै, और न कछु उर लाऊँ ॥३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(२६)

राग भैरब,ताल झप २-४-१९७३

ठाड़ी द्वार तिहारे प्यारे! चरन-सरन दो दीनानाथ!
भटकी बहुत विषय-वीथिनमें, करुनामय! अब पकरहु हाथ ॥
भटकि भूरि भूखण्ड में, हारी हौं घनस्याम!
गई अनेकन ठाँव, पै मिल्यौ न कहुँ बिसराम ॥
मिल्यौ न कहुँ बिसराम काहुने दियो न जगमें मेरौ साथ ॥१॥

प्यारे! अब या लोकमें, रही न उर कोउ आस।
भुक्ति-मुक्तिकी चाह तजि आई हौं तुव पास ॥
आई हौं तुव पास दयानिधि! दया-दान करि करहु सनाथ ॥२॥

प्रीतम या संसारमें, अपनो कोउ न और।
सदा-सदा उनके तुम्हीं, जिन्हें नहीं कहुँ ठौर ॥
जिन्हें नहीं कहुँ ठौर उन्हीं कों करते आये सदा सनाथ ॥३॥

जनम-जनमकी चेरि हों, रखो सरन में स्याम!
परी रहौं नित पौरि पै, और न है कोउ काम ॥
और न है कोउ काम स्याम! बस, रखो मोहि निज छाया-साथ ॥४॥

प्यारे! विषय-विकारसों उर अति भयो पलीत।
कृपा-सुधासों सींचि अब, करिये याहि पुनीत ॥
करिये याहि पुनीत, प्रीतिकी लगै लगन अब अनुदिन नाथ! ॥५॥

प्यारे! प्रीति पुनीतकी लगै लगन दिन-रात।
रहै न नीरसता-निसा, प्रगटै प्रीति-प्रभात ॥
प्रगटै प्रीति-प्रभात हृदयमें रहो तुम्हीं बस जीवन-नाथ ॥६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY
No.........
Shri Shri Anandamayee Ashram

(२७)

राग दरबारी, ताल दादरा १७-५-१९७३

प्रानधन ! कैसे तुमहिं बिसारूँ ।
जीवनके जीवन तुम प्यारे ! कैसे तुम बिनु जीवन धारूँ ॥
मनमें ठौर न रह्यो और कों, पुनि-पुनि तुव मुख-चन्द्र निहारूँ ।
हृदय-पीठ पधराय प्रीतिसों, प्रीतम ! तुव पद-कमल पखारूँ ॥१॥

कहा करूँ, या मन-पंछीकों जदपि जतन करि बहुबिधि वारूँ ।
तदपि जात इत-उत उड़ि पामर, पुनि तुव प्रीति-पाश लै डारूँ ॥२॥

अब न सुहात बात कोउ दूजी, यह भटकन कबसौं उर धारूँ ।
ऐसी कृपा करहु करुनामय ! मन की दौरा-दौरि निवारूँ ॥३॥

लगन-अगिन ऐसी कछु लागै, जामें जगकी सुधि-बुधि जारूँ ।
तुम ही तुम बस रहहु प्रानधन ! और सबहिकी सुरति बिसारूँ ॥४॥

बन्यौ रहौं पद-पंकजको अलि, रति-रस छकि-छकि सभी बिसारूँ ।
प्रीतम-प्रीतिमात्र ह्वै बिलसूँ, तन-मन-अन्य-सुमन न निहारूँ ॥५॥

(२८)

राग सोहनी, तीन ताल ९-६-१९७३

प्यारे ! प्रीतिमात्र रह जाऊँ ।
रहे न मम अस्तित्व और कछु, तुझ हीमें रम जाऊँ ॥
मेरा-तेरा भेद न भासै, तुझसे पृथक् न पाऊँ ।
भेद-अभेद-खेद सब तजकर, तुझ में ही मिल जाऊँ ॥१॥

काया-माया रहे न कोई, तेरी छाया पाऊँ ।
तुझसे पृथक् न कुछ भी भासे, तुझे देख हरषाऊँ ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घरमें बाहर डगर बगरमें तुझे खेलता ध्याऊँ ।
मैं भी तेरा खेल-खिलाड़ी खेल-खेल खिल जाऊँ ।।३।।

तू है सबका, सब हैं तेरे, सबमें तुझको पाऊँ ।
सबसे पृथक्-अपृथक् भी तू ही, देख-देख चकराऊँ ।।४।।

सारा विश्व प्रीति है तेरी, प्रीतिमात्र रह जाऊँ ।
प्रीतम ! प्रीति-पियूष पानकर 'मैं-तू' भेद भुलाऊँ ।।५।।

(२६)

राग पूरिया, तीन ताल १०-६-१९७२

स्याम ! मोहिं पावन पद-रति दीजै ।
सुगति सुमति सम्पति न चहौं कछु, इनमें मति न पतीजै ।।
यह काया सुख-दुखकी पुड़िया, याकी माया छीजै ।
यामें रहे विरति नित चितकी–एती करुना कीजै ।।१।।

जहाँ जाउँ तहँ पाउँ तुमहिं कों, तुव पद-रति मति भीजै ।
सब कछु लै निज प्रीति दान दै, अपनो ही कर लीजै ।।२।।

तुम बिनु पलक कलपसम भासे, कहूँ न हियो पसीजै ।
प्रीति-पियूष-पिपासा में ही रैन-दिवस तन छीजै ।।३।।

तन मन जनको सुपन न भासै, छिन-दिन रति-रस सीजै ।
'तू' ही 'तू' की धुन नित लागै, 'मैं' की माया छीजै ।।४।।

'मैं' 'तू' को पुनि भेद न भासै, रति-रसमें मति भीजै ।
सब कछु जाय रहे केवल रति–यही दया करि दीजै ।।५।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्याम-स्मृति ॥३०॥

राग खम्माच, ताल दादरा ३-५-१९७३

स्याम ! मोहिं तेरी सुरति सतावै ।
कहा करूँ मनमोहन मेरे ! तेरे बिनु मोहिं कछु न सुहावै ॥
वह चितवन वह बंक विलोकन मनमें मनहुँ सूल उपजावै ।
काम-कमान सरिस भ्रूभंगी तिलक-तीरसौं पीर बढ़ावै ॥१॥
मृदु मुस्कान मनोज-ओजकी मनमें मानहुँ धूम मचावै ।
अधरनकी अरुनई अनूपम ललन ! मिलनकी ललक लगावै ।२॥
सिखि-सिखण्डकी झुकन माधुरी मनहुँ मदनकी धुज फहरावै ।
अंग-अंगकी अद्भुत आभा उरसों तमको तिमिर भगावै ॥३॥
मुरलीकी मधुमयि कल कूजन मन-मयूर करि मत्त नचावै ।
नर्तनकी रुनझुन-रुनझुन धुनि पुनि-पुनि सुचिरस-रति उपजावै ॥४
कोटि-कोटि सिंगार-सार-सी सुछवि स्याम! जब-जब उर आवै—
तब-तब ही विरहानल सुलगत, दरस-परसकी ललक बढ़ावै ॥५॥

तेरी चेरी ॥३१॥

राग दरबारी, तीन ताल २२-१२-१९७२

कोउ इक चेरी तेरी स्याम !
आय परी पौरी पै प्यारे ! तो ही सों है काम ॥
भटकी जहाँ-तहाँ बहु द्वारन, मिल्यौ न कहुँ विसराम ।
उरमें कोटि कामना ढोईं, बन्यौ न एकहुँ काम ॥१॥
अब सबसों निरास ह्वै आई, प्यारे ! तेरे धाम ।
तेरी ही लीला है सब कछु इहामुत्र अविराम ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुमहिं छाँड़ि अब जाय कहाँ सो, तुमबिन कोउ न ठाम ।
तुमसों चहत एक तुम ही कों, और न कोऊ काम ॥३॥

अब तो कोउ न गति है बाकी, रति-मति तुम ही स्याम !
जैसे चहो रखो वैसे ही, अपनी जानि अकाम ॥४॥

तुम मेरे ॥३२॥

राग भैरवी, ताल कहरवा १२-४-१९७३

हरि ! तुम सदा-सदासे मेरे ।
मैं हूँ नाथ ! तुम्हारा पायक, तुम हो नायक मेरे ॥
मैं हूँ यन्त्र श्याम ! तुम यन्त्री, तुम दीपक मैं बाती ।
मैं हूँ एक काठकी पुतली, सूत्रधार तुम मेरे ॥१॥

मैं हूँ बिन्दु सिन्धु तुम स्वामी ! मैं बालक तुम पालक ।
मैं हूँ एक फूल बगिया का, तुम हो माली मेरे ॥२॥

मैं हूँ तनु तुम प्राण दयामय ! मैं भूषण तुम सोना ।
मैं हूँ एक कमल सरवरका, तुम दिनकर हो मेरे ॥३॥

मैं हूँ घट तुम माटी मोहन ! मैं चकोर तुम चन्द्र ।
मैं हूँ एक अकिंचन प्रेमी, तुम हो प्रियतम मेरे ॥४।

मेरे और तुम्हारे प्यारे ! हैं सम्बन्ध अनेक ।
जो चाहो वह मानो मोहन ! सदासदा तुम मेरे ॥५॥

(३३)

राग चन्द्रकोष, तीन ताल १६-६-१९७३

श्याम ! तुम मेरे मेरे मेरे ।
ये तन मन धन स्वजन तुम्हारे, केवल तुम ही मेरे ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सबसे तोड़ तुम ही से जोड़ी, भूले भाव घनेरे।
नाता-नेह एक ही है अब—तुम मेरे सब तेरे ॥१॥
'तेरे-मेरे' की मति छूटी, मेरे भी सब तेरे।
सबमें तुम्हें निरख नँदनन्दन ! सब भी हो गये मेरे ॥२॥
अब 'मैं' की भी माया छूटी, तुम्हीं सभी में हेरे।
तुम ही तुम अब रहे प्राणधन ! जो भी मेरे-तेरे ॥३॥
तुम ही कर्म तुम्हीं हो कर्त्ता, करें तुम्हारे प्रेरे।
सारे खेल तुम्हारे प्यारे ! दिखें कर्म जो मेरे ॥४॥
तुम ही खेल खिलाड़ी तुम ही, खेलों सब तव प्रेरे।
सब कुछ देखा तुम्हीं को प्यारे ! रहे न कोई घेरे ॥५॥

मैं तेरी ॥३४॥

राग भैरवी, ताल कहरवा १५-५-१९७३

स्याम ! मैं तेरी तेरी तेरी।
जैसी हूँ तेरी हूँ प्यारे ! छोड़ो हेरा-फेरी ॥
तूने ही यह गढ़ी मढ़ी है, कुछ करतूत न मेरी।
जैसी है अपनानी होगी, सदा-सदाकी चेरी ॥१॥
है नगन्य, गुनहीन, दीन अति, केवल अघकी ढेरी।
पर अपनो है यहाँ न कुछ भी, जैसी भी है तेरी ॥२॥
अपनाओ चाहे ठुकराओ, बनै न बिगरै मेरी।
आय परी तेरी पौरी पै, लगा न प्रियतम ! देरी ॥३॥
कहाँ जाय, तुम बिन न कहीं कुछ, सब कुछ लीला तेरी।
यह भी है लीलाकी नटिनी, कुटिला करनी मेरी ॥४॥
जैसी स्याम ! करायी तूने, रही भूमिका मेरी।
सूत्रधार तो सदा तुही है, मैं कठपुतली तेरी ॥५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(३५)

राग पूर्वी, तीन ताल २४-१२-१९७२

तुम्हारी जनम-जनमकी चेरी।
फेरी देत रहत नित द्वारे, तदपि न तुमने हेरी ॥
टिकन न देत इतै कोउ वाकों, है यह विपद घनेरी।
उतहूँ विविध वासना-बंधन, यासों हेरा-फेरी ॥१॥
हैं जद्यपि बहु विघन बीचमें, मिलन न होत सवेरी।
तदपि स्याम! नहिं चैन रैन-दिन, तुम बिन रहत अनेरी[1] ॥२॥
कृपा होय तो काज होय सब, छूटै हेरा-फेरी।
तेरी तो है सदा-सदासों, रहै न ऐरो-गैरो ॥३॥

अपना मानो ॥३६॥

राग टोड़ी, ताल कहरवा २७-१२-१९७२

मोहिं हरि! अपुनो ही करि मानो।
तुम मेरे, मैं नाथ! तिहारो, अपुनेकहँ अपुनो करि जानो ॥
तुमकों तो प्रेमी ही प्रिय हैं, हौं हूँ प्रीति-रीति कछु मानों।
हिल-मिल खेल होय फिर अपुनो, और कोउ जानो मत जानों ॥१॥
अब लगि नीति-भीति बहु सेई, अब कछु प्रीति-रीति मन मानो।
अपने तो तुमही हो सब कछु, तुम कछु जानो वा मत जानो ॥२॥
जहाँ रहों तुमही को देखों, तुमही में रति-मति नित मानों।
करों तिहारो ही करवायो, तुव रति ही निज गति पहिचानों ॥३॥
और न चहूँ कहूँ कबहूँ कछु, केवल तुव मति में मति ठानों।
भेद-अभेद भेद सब छूटे, तुमसों भिन्न न मैं कछु जानों ॥४॥

---

१. अनमनी, उदास।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

समर्पण ॥३७॥

राग माँड़, ताल कहवा ८-१-१९७३

कहा कहौं मैं बात हिये की, अब लौं स्याम ! न दरस भये ।
प्रीति पुनीत न जगी हिये में, ऐसे ही बहु बरस गये ॥१॥

कहा भयो, जग साधु कहायो, सत सों तो नहिं प्रीति जगी ।
प्रीति-रीति प्रगटी न हिये तो नीति-भीति भी बृथा लगी ॥२॥

मानव तनु तो सफल तबहिं जब प्रीतम-प्रीति उगै उर में ।
प्रीतमसों न पृथक् जग भासैं, प्रीतम ही भासै जग में ॥३॥

कन-कनमें प्रीतम ही प्रगटै, निज-परको सब भेद नसै ।
आप और अपुनो न रहै कछु, निजता में निज नाथ लसै ॥४॥

ऐसी दसा होय तब ही जब प्रीतम करुना-कोर करै ।
मायावी हरि बिनु जग-माया कैसे मायिक जीव हरै ॥५॥

याहीसों सब आस छाँड़ि अब प्रीतम तुव पद ओट लई ।
सरनागत पालत आये हो, बात न यह कछु भई नई ॥६॥

है क्रीडनक तिहारो अब यह, ज्यों चाहो त्यों केलि करो ।
अपनो जानि दयामय ! अब तुम ठुकराओ वा सीस धरो ॥७॥

(३८)

राग भैरवी, ताल कहरवा १३-१२-१९७२

तुमनें खूब हि नाँच नचायो ।
सुनो न मेरी एकहुँ प्यारे ! कियो सदा मन-भायो ॥
जो मैं चाह्यो भयो न एकहुँ, जो चाह्यो करवायो ।
मैं तो डर्यौ लोक-लज्जासों, पै तुम लाज बचायो ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अपनी ही करते आये हो, अब हुँ करो मन-भायो ।
मैं क्यों मरूँ सोचको मार्‌यौ, तुम-सो प्रीतम पायो ॥२॥
पै कब लौं यों छिपे रहोगे, तुमहिं कहा यह भायो ।
और खेल तो रुचि सों खेले, पै यह कछु न सुहायो ।३॥
मैं हार्‌यौ जीते तुम प्रीतम ! खोज तुमहिं नहिं पायो ।
अब करुना करि मिलहु साँवरे ! होय खेल भर-पायो[1] ॥४॥

(३९)

राग विहाग, तीन ताल ११-४-१९७३

हरि ! हौं सब विधि तुमसों हारो ।
तुम ही सब विधि जीते प्यारे ! भयो तिहारो धारो[2] ॥
तुमहिं छाँड़ि मैं चहौं न कछु अब, होनी होय सो होय ।
तुमही मेरे बल मन-मोहन ! मोहिं न और सहारो ॥१॥
तरसत हौं तुव दरस-परसकों, जगकी आस न कोय ।
तुम ही जो न सुनो तो प्यारे ! मोहिं और को चारो[3] ॥२॥
तरसत ही सब वयस बितायी, अबहूँ धकपक होय ।
दीखत कोउ न उपाय प्राणधन ! तुम हूँ सों का गारो[4] ॥३॥
कछु-कछु आस भई मिलिवे की, सोउ अब सीरी होय ।
छयी निरासा-निसा हियेमें, तुमही करो उजारो ॥४॥
सब ही तुमहिं कहहिं करुनानिधि, कब तुव करुना होय ।
दीन, हीन, अकुलीन न मो सम, फिर का सोच-विचारो ॥५॥
प्यारे ! व्यथा कहूँ का मनकी, तुमसों छिपी न कोय ।
अपुनी-सी हौं तो करि हार्‌यौ, तुम मारो या तारो ॥६॥

---

१. पूरा, सफल ।
२. निश्चय किया, सोचा । ३. वश, बल । ४. शिकायत ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(४०)

राग विहाग, तीन ताल ८-१२-१९७२

तुम जैसे नाँच नचाओ श्याम ! मैं नाचूँगी।
तुम जैसा खेल खिलाओ वही रँग राचूंगी ॥

तुमने मुझको खूब नचाया।
जो न चहूँ वह भी करवाया ॥
जो भाया वह हो नहिं पाया।
तुमसे नेह निभाना है तो तुम्हरी रुचि ही राखूंगी ॥१॥

कठपुतली हूँ श्याम ! तुम्हारी।
अपनी कोई न यारी-ख्वारी।
केवल तुम्हें लगूं मैं प्यारी।
तुमसे प्यार बढ़ाने को मैं साज सभी विधि साजूंगी ॥२॥

नाता तुमसे कभी न छूटै।
रहे और से अथवा टूटै।
तन का भाग्य बढ़ै वा फूटै।
चिन्ता कोई नहीं साँवरे ! तुमसे ही रति राखूंगी ॥३॥

बात न कोई और सुहावै।
तुम्हें सुहावै वह ही भावै।
यह मन तव मन ही बन जावै।
मनसे मनको मिला मन-हरनमोहनकी बन जाऊँगी ॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तेरा खिलौना ॥४१॥

राग मालकोस, तीन ताल २६-१-१९७३

स्याम ! मैं तेरा खेल-खिलौना ।
क्या जानूं, क्यों मुझे बनाया, क्या करना, क्या होना ॥
जैसा रुचै खेल तू वैसा, होय वही जो होना ।
तेरी राजीमें राजी मैं, तू रूँठे तो रोना ॥१॥
माया है तेरी मायावी, जग पेखना[1] सलौना ।
जिसने इसको खेल न जाना, मिटा न हँसना रोना ॥२॥
फूटे चाहे बने, भला क्यों चिन्ता करे खिलौना ।
मुझे मार या तार साँवरे ! रहा न हँसना रोना ॥३॥
बनना और बिगड़ना छूटा, छूटा पाना-खोना ।
तेरा खेल चलै अलवेला, मेला जुड़ा सलौना ॥४॥

(४२)

राग केदार, ताल दीपचन्दी ७-५-१९७३

स्याम ! में तेरा एक खिलौना ।
जैसे चाहो खेलो प्यारे ! होय वही जो होना ॥
मुझे न कुछ लेना देना है, ना कुछ पाना-खोना ।
अपनी मौज रखो मनमोहन ! कुछ संकोच करो ना ॥१॥
तेरी राजी में राजी हूँ, मुझे न हँसना-रोना ।
सता सताकर मुझे सधा लो, कोई कसर रखो ना ॥२॥
खूब नचाओ, खूब खिझाओ, मुझे न जगना-सोना ।
पर अपना ही करके मानो, निजसे विलग करो ना ॥३॥

१. दृश्य, तमासा ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(४३)

राग भैरवी, ताल दीपचन्दी ६-२-१९७३

है यह खेल-खिलौना प्यारे ! खेलो खेल सदा मन-माने ।
जैसे चाहो इसे नचाओ, हित-अनहित यह क्यों कुछ जाने ॥१॥

अपना इसमें है न कहीं कुछ, जो कुछ मिला तुम्हींसे प्यारे ।
इससे हो विनोद कुछ तुमको–इसे छोड़ क्या और विचारे ॥२॥

भुक्ति-मुक्ति अपमान-मान सब खेल तुम्हारे हैं मनमोहन ।
जो कुछ तुम्हें रुचै इसको दो, इसका अपना है न कोई मन ॥३॥

खूब नचाओ, खूब खिझाओ, खूब हँसाओ, खूब रुलाओ ।
नरक-स्वर्ग इसको न कहीं कुछ, जहाँ रुचै तुम इसे बिठाओ ॥४॥

सदा-सदा यह वस्तु तुम्हारी, तुमने रुचिसे इसे बनाया ।
रहे तुम्हारी ही रुचि प्यारे ! अपना इसे न कुछ भी भाया ॥५॥

अपने तो तुम ही मनमोहन ! सदा-सदा यह टेक हमारी ।
तुम्हें छोड़ कुछ और न चाहूँ–यही एक वर दो बनवारी ॥६॥

शान्ति-अशान्ति भ्रान्ति सब मनकी इनसे हमें न है कुछ लेना ।
केवल प्रीति पुनीत तुम्हारी बढ़ती रहै घटै कब ही ना ॥७॥

बस इतनी ही कृपा करो तुम, तुम ही तुम इसके मन भाओ ।
रहै न 'मैं-मेरा' 'तू-तेरा', केवल एक तुम्हीं रह जाओ ॥८॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुम्हारा यन्त्र ॥४४॥

राग देश, तीन ताल २-४-१९७३

स्याम ! मैं केवल यन्त्र तिहारो ।
तुम हो सूत्रधार हरि ! मेरे, रक्खो चाहे मारो ॥
जैसे चाहो मोंहि चलाओ, जो चाहो करवाओ ।
मोमें मेरो है न कहूँ कछु, तुम जनि सोच-विचारो ॥१॥
अपनेकों अपनो करि मानो, भेद न कछु उर लाओ ।
बरतो मन-माने मनमोहन ! करो न उर कछु गारो ॥२॥
मेरो सुख-दुख है न कहूँ कछु, हानि-लाभ हूँ नाहीं ।
जामें हों प्रीतम प्रसन्न बस सो ही लाभ हमारो ॥३॥
कहूँ कहा कछु कहन न आवै, ज्यों भावै त्यों कीजै ।
होय तिहारो मन मेरो मन, रहै न और सहारो ॥४॥

निर्णय ॥४५॥

राग वृन्दावनी सारंग, तीन ताल २७-५-१९७३

हरि ! मैं तेरी ही ह्वै रहि हों ।
तेरे लिये प्रानधन प्रीतम ! सकल दुसह दुख सहि हों ॥
करि हों कानि न काहू की कछु, वाद-विवाद न करिहों ।
तेरी रुचि राखनकों मोहन ! तनमन धनहुँ लुटइ हों ॥१॥
स्वधन स्वजन केवल तू मेरो, और न निज कछु चहि हों ।
तेरी हूँ हौं सदा-सदा सों, नातो यही निभइ हों ॥२॥
तजि हों लोक और परलोकहुँ, सोक न उर कछु लइ हों ।
साज, समाज, लाज सब तजि कै तेरे ही गुन गइ हों ॥३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अपुनो और न रहिहै कहुँ कछु, नाते सब हि बहै हों।
मेरी-तेरी प्रीति पुरानी, नूतन करि सचु पइ हों ।।४।।

मैं तेरो तू मेरो प्यारे! 'मैं-तू' भेद भुलइ हों।
तो हीमें सब निरखि प्रानधन! 'मैं' को पतो नपइहों ।।५।।

(४६)

राग भैरवी, तीन ताल ४-२-१९७३

तुम्हें मसखरी सूझी प्यारे! मैं नित मरूँ लाज की मारी।
तुम्हें न छूट बात सुननेकी, बार-बार मैं ही झकमारी ।।१।।

सुनो स्याम! कुछ और न चाहूँ, एक बार झाँकी करवादो।
इसकी इस अटपटी चालपर एक बार तुम भी मुसका दो ।।२।।

पर तुम ही बतलाओ प्यारे! बिना तुम्हारे क्या होता है।
तुम जो चाहो उसके आगे बल-विवेक पानी ढोता[1] है ।।३।।

लोक हँसें तो हँसने दो अब इसकी कुछ परवाह नहीं है।
लोक-लाजपर गाज[2] पड़े अब, इसे दूसरी राह नहीं है ।।४।।

बस, तुमने जो-जो करवाया वही किया, करके मुसकायी।
प्यारे! देख तुम्हारी लीला बुद्धि थकी, पर मैं हरषायी ।।५।।

अब भी नाँच नचाओ प्रीतम! जैसा-जैसा तुम्हें सुहावै।
पर देखो, यह चेरि तुम्हारी तुमसे विलग न होने पावै ।।६।।

सदा-सदासे रही तुम्हारी, अब भी है अरु सदा रहेगी।
तुम बोलो, चाहे मत बोलो, यह द्वारे से नहीं टलेगी ।।७।।

---

१. झकमारता है। २. बिजली, बज्र।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मैं तेरी ॥४७॥

राग शुद्ध सारंग, तीन ताल २८-३-१९७१

प्राणधन ! सदा-सदा मैं तेरी ।
तू मेरा मैं तेरी प्यारे ! यही टेक नित मेरी ॥

तन मन धन जन सब कुछ तेरे, गति-मति भी सब तेरी ।
कर्म धर्म जीवन जीवनधन ! कोइ न पूंजी मेरी ॥१॥

जैसी हूँ, जो भी हूँ प्यारे ! केवल तेरी चेरी ।
जैसा चाहो नाँच नचाओ, मैं कठपुतली तेरी ॥२॥

मेरा अपना है न कहीं कुछ, सब कुछ माया तेरी ।
मेरा तो तू ही है, मेरी मति भी तेरी प्रेरी ॥३॥

क्या कहना, नहिं कहना—इसमें मति-गति कोई न मेरी ।
जैसा चाहे तु ही बजा ले, मैं तो तन्त्री तेरी ॥४॥

अपनी अपने में न रही कुछ, रही न 'मेरी-तेरी' ।
जो कुछ है तू ही तू है बस, 'तू' भी छाया तेरी ॥५॥

तू ही छाया तू ही माया, तू ही काया मेरी ।
तू ही है आतम-परमातम, सब कुछ लीला तेरी ॥६॥

लालसा ॥४८॥

राग झिंझोटी, तीन ताल ३१-१०-१९७२

प्रानधन ! प्रियतम परम उदार !
रहों तिहारो ही ह्वै सन्तत, छाँड़ि सकल संसार ॥

तुम ही सों गति-मति हो मेरी, तुम ही सों नित प्यार ।
तुम बिनु कोउ न सुहाय कतहुँ कोउ प्रीतम प्रानाधार ! ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुव गुन गान करै नित रसना, रटै नाम अनिवार।
मन तुव मनमोहनि मूरति को धरै ध्यान उर धार ॥२॥

तुम बिनु अपनो कोउ न भासै वस्तु व्यक्ति संसार।
दृढ़ अनुराग रहै पद-पंकज, समुझि सार को सार ॥३॥

तुम ही सब, तुम ही में सब, सबके तुम परमाधार।
सबमें निरखि रूप तव प्यारे ! रहै सभी सों प्यार ॥४॥

यह समदृष्टि जगै नित उर में, लगै तुम्हीं सों तार।
तुम्हरी पूजा मानि प्रेम सों पूजहुँ सब संसार ॥५॥

(४९)

राग भैरवी, कहरवा — १०-११-१९७२

दरश-लालसा लगै हृदयमें—यही लालसा मेरे श्याम।
पड़े न चैन रैन-दिन तुम बिनु, ऐसी कृपा करो अभिराम ॥१॥

प्रतिपल प्यास बढ़े जीवनमें, शान्ति-भ्रान्ति हो जाय हराम।
प्रीति-पियूष पान हो प्रतिपल, तदपि न घटै प्यास अविराम ॥२॥

जहाँ-तहाँ बस तुम ही दीखो, कहीं जगतका रहे न नाम।
निशि-दिन चिन्तन रहे तुम्हारा, और काम हो जाय विराम ॥३॥

लोक-लाज या लोक-वासना, दोनों ही से हो उपराम।
नाचूँ, गाऊँ, हंसूँ, पुकारूँ, रोऊँ, तड़पूँ आठों याम ॥४॥

जैसे चाहो वैसे रक्खो, दुख-सुख का हो काम तमाम।
तुम ही रहो एक जीवनधन ! 'मैं-मेरे' का रहे न नाम ॥५॥

क्या चाहूँ, क्या मांगूँ प्यारे ! इनका भी कुछ रहे न काम।
तुम ही तुममें तुमसे मिलकर मैं की 'मैं' मिट जाय निकाम ॥६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(५०)

राग सोहनी, तीन ताल २८-१-१९७३

श्याम ! अब साँची लगन लगा दो ।
नेह-नीरमें बहै मनो-मल—ऐसा रस बरसा दो ॥

गाज पड़े इस लोक-लाजपर, वह दामिनि दमका दो ।
रहे न मनमें तनकी भी सुधि, ऐसा विरह जगा दो ॥१॥

अपना और पराया छूटै, सब निज रूप दिखा दो ।
रह जाओ तुम ही तुम प्यारे ! जगका भान छुड़ा दो ॥२॥

रहे न अपना करना-धरना, अपना यन्त्र बना दो ।
अपनेमें अपना न रहे कुछ, वह विज्ञान पढ़ा दो ॥३॥

चितपर चढ़ी रहे तव मृदु छवि, ऐसी सुरति जगा दो ।
राग तुम्हारा ही नित निकले, ऐसा वाद्य बना दो ॥४॥

क्या पाना क्या खोना प्यारे ! यह सब भेद मिटा दो ।
मैं क्या माँगूँ, तुम सब जानो, यह मन स्वमन बनादो ॥५॥

(५१)

राग भैरव, ताल ध्रुपद ३१-३-१९७३

बसहु मनमें मनमोहन लाल ।
निरखि,निरखि तव मधुमयि मूरति मनुआँ होय निहाल ॥

रहै न अब कोउ आस-पास हिय, भासै भोग बवाल ।
लगै ललक तव दरस-परसकी नैननकों नँदलाल ॥१॥

भुक्ति-मुक्तिकी भ्रान्ति न भासै, भागै जग-जंजाल ।
चंचरीक चख चहै चखन तव पद-रति स्वरस रसाल ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मुख-मयंक-मधु छकि-छकि नयना नित प्रति होंहि निहाल।
और रूप-रस विरस होंहि सब, मिलेहुँ तजौं तत्काल ॥३॥

रहै न सुमति सुगति सम्पतिकी रति-मति कोउ गोपाल।
पियत रहूँ तव पद-पंकज को प्रीति-पियूष रसाल ॥४॥

(५२)

राग देश, इकताला ५-५-१९७३

सदा हो तेरे मनकी श्याम। इसीमें है मेरा विश्राम॥
न मेरा कोई अपना काम। तुम्हारी रुचि मेरा धन-धाम ॥१॥

चित्तपर चढ़ी रहे नव मूर्ति। न हो जग की कोई स्फूर्ति॥
तुम्हींमें रमे चित्त चितचोर। न देखूँ कभी दूसरी ओर ॥२॥

यही है मेरी अपनी चाह। रही अब और न कोई राह॥
तुम्हींहो सबकुछमेरेश्याम। न मेरा और कोई धन-धाम ॥३॥

यही है मेरी परमा मुक्ति। बढ़े अनुदिन तवपद-अनुरक्ति॥
और कुछ चहूँ न दीनानाथ। तुम्हें पाकर मैं हुआ सनाथ ॥४॥

ललक ॥५३॥

राग टोड़ी, ताल कहरवा १२-५-१९७३

मोहिं हरि! तुम बिनु कछु न सुहाय।
मनमें रहत खलबली प्रतिपल, सूझत कोउ न उपाय॥
छूटचौ जगज्जाल अब उरसों, विषय-व्याल न डराय।
सुरति-सुधाकी ललक लगी नित, निरति-नेह सरसाय ॥१॥

दरसनकों नयना नित तरसें छविकी छकनि छकाय।
मुसकनको मादक मधुकों हरि! मन-मधुकर मडराय ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मृदु मुरली की स्वरलहरी सुचि स्रवन-सुधा सरसाय ।
दामिनि द्युतिमयि पीत पिछौरी हृदय-गगन फहराय ।।३।।

नूपुरकी रुनझुन-रुनझुन धुनि मनमें मदन जगाय ।
कबहुँकि निरखहुँ नयनन वह छबि, पुनि-पुनि उर उमँगाय ।।४।।

पावन प्रीति-पियूष-पान हित मनुआँ अति तरसाय ।
पियत-पियतहूँ पियन चहत चित, पियत न कबहुँ अघाय ।।५।।

मेरी साध ।।५४।।

राग भैरवी, तीन ताल २८-३-१९७२

प्राणोंके तुम प्राण लाड़िले ! तुम बिनु धारूँ कैसे प्राण ।
तुमही हो भव-निधिकी नैया, तुम बिनु कैसे हो भव-त्राण ।।१।।

तुम ही से है विश्व विश्वपति ! तुम ही हो इसके भगवान् ।
विश्वम्भर ! तुमही से होता सकल विश्वका पोषण-त्राण ।।२।।

तुमसे होकर विलग प्राणधन ! छटपट-छटपट करते प्राण ।
हैं बेचैन नैन दर्शनको, इन्हें सँभालो श्याम ! सुजान ।।३।।

जन्म-जन्मकी साध यही है, तुमसे ही हो मेरा प्यार ।
तुम मेरे मैं श्याम ! तुम्हारा, तुम ही हो मेरे संसार ।।४।।

लोक हँसे तो हँसने दो, मुझको उससे कुछ काम नहीं ।
जिसमें तुमको कुछ भी सुख हो, मुझसे करवाओ काम वही ।।५।।

तुम मेरे हो, तुम मेरे हो, मेरा नहिं और ठिकाना है ।
तुम सदा प्रसन्न रहो प्यारे ! मुझको कुछ और न पाना है ।।६।।

तुम यन्त्री हो, मैं यन्त्र श्याम ! मैं कठपुतली तुम सूत्रधार ।
तुम नाँच नचाओ मन-माना, मेरा अपना कुछ है न यार ! ।।७।।

जो चाह तुम्हारी हो प्रियतम ! मेरा वह ही जीवनधन है ।
तुम ही मेरे सर्वस्व सदा, तुमपर बलि-बलि ये तन-मन हैं ।।८।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कैसे पाऊँ ॥५५॥

राग भैरवी, ताल कहरवा २४-३-१९७३

प्राणधन ! कैसे तुमको पाऊँ।
है न भक्ति का लेश हृदय में, व्यर्थ हि बात बनाऊँ ॥
छुटे न माया मोह जगतके, पद-पदार्थ नित ध्याऊँ।
हुआ न चित्त विमुख विषयोंसे, कैसे तुम्हें सुहाऊँ ॥१॥
मनमें लगी न लगन मिलनकी, इत-उत चित भटकाऊँ।
सब तज हुआ न चरण-शरण, फिर प्रीति कहाँसे पाऊँ ॥२॥
प्रीति बिना प्रीतम क्यों रीझें, कैसे खीझ मिटाऊँ।
है यद्यपि कुछ चाह चित्तमें, ललक-ललक रह जाऊँ। ३॥
है न कोइ साधन-आराधन, क्या अधिकार जताऊँ।
पर जैसा भी हूँ करुनामय ! तेरा ही कहलाऊँ ॥४॥
अपना मान करोगे करुणा—यही आश उर लाऊँ।
सदा-सदासे करते आये, फिर मैं क्यों रह जाऊँ ॥५॥

अन्तर्व्यथा ॥५६॥

राग विहाग, तीन ताल २५-११-१९७२

कान्ह ! अब कैसे काटूँ रैन।
ये सब फूल सूलसे लागहिं, मनहिं मथत यह मैन[१] ॥
कारी अँधियारो सी छाई, उठत प्रभञ्जन[२] पैन।
हू-हू करि उलूक डरपावहिं, होत हियो बेचैन ॥१॥

१. कामदेव, प्रेम। २. आँधी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कासों कहौं पीर या मनकी, सुखी सखी कोउ है न ।
सब कहँ परी पीर अपनी ही, सुनै कौन मो बैंन ॥२॥
दरसन-परसन कहँ तरसत तन, पुनि-पुनि भीजहिं नैन ।
कैसे करूँ, हूक या हियकी पल-पल करत अचैन ॥३॥
पलटि-पलटि करवट हौं हारी, परत न नैंकहु चैन ।
कबहु मिलहुगे पीर हरहुगे, तभी कटैगी रैन ॥४॥

(५७)

राग सोहनी, तीन ताल २९-१०-१९७२

प्यारे ! यह मन मरो न मानें ।
बहुत भाँति सिख देहुँ याहि, पै अपनी ही हठ ठानें ॥
जानत है तुव पद-पंकज बिनु और न कोउ सहारो ।
तो हूँ थिर न होत एकहु पल, डोलत मारो-मारो ॥१॥
आपुहि अपुनो बन्धन बाँधै, आपुहि दुखै दुखावै ।
जानत हूँ अपनो हित प्यारे ! आपुहि कों डहकावै[1] ॥२॥
कैसे करों समुझि नहिं पाऊँ, कैसे प्रीति दृढ़ाऊँ ।
कैसे सब तजि भजों चरन तव, कैसे दरसन पाऊँ ॥३॥
कुलबुलात उर प्रतिपल प्यारे ! तदपि न कोउ मग सूझै ।
जबलौं कृपा न होय रावरी को निज मति-गति बूझै ॥४॥
दया करहु अब दीनबन्धु ! निज प्रीति-पदारथ दीजै ।
करुनामय ! निज चरन-सरन दै अपुनो हो कर लीजै ॥५॥

---

१. धोखा देता है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(५८)

राग भैरवी, ताल कहरवा २४-१-१९७३

व्यथा मैं काकों स्याम ! सुनाऊँ।
उरमें उठत हूक-सी पल-पल, मन मसोसि रहि जाऊँ॥
साधन-आराधन न बन्यो कछु, का अधिकार जताऊँ।
प्रीति पुनीत न जगी हियेमें, कैसे तुमकों भाऊँ॥१॥
जग हूँ को कछु सध्यौ न स्वारथ, कासों जोर जताऊँ।
जरा-जरजरित तनुसों जगमें कैसे काहि सुहाऊँ॥२॥
दोउ ओर सों भयो तिरस्कृत, मन ही मन पछिताऊँ।
सब तजि अब तव चरन-सरन लै उर अभिलास बढ़ाऊँ॥३॥
भोग, जोग, रिधि, सिधि न चहौं कछु मुकुति हु चित्त न लाऊँ।
जो प्रीतम ! दो प्रीति-कनी तो बनी जानि सचु पाऊँ॥४॥

(५९)

राग भैरव, ताल कहरवा १९-११-१९७२

स्याम ! मैं कब लौं बाट निहारूँ ?
बड़ी बेर सों ठाड़ी पौरी, का कहि तुमहिं पुकारूँ॥
टेरत-टेरत वयस बितानी, कैसे धीरज धारूँ।
पाछे हूँ अब ठौर कहाँ है, जहाँ जाय तन तारूँ॥१॥
दावानल-सी दहत उतै, इत तुव करुना न निहारूँ।
बीच परी उरझन यह बाँकी, काकी सरन सम्हारूँ॥२॥
लोक और परलोक न चाहूँ, रिधि-सिधि हूँ न विचारूँ।
एक बार 'अपनी' कहि बोलहु—ऐसी अरज गुजारूँ॥३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कृपा-दान दै पोसहु प्यारे ! हौं बड़भाग्य विचारूँ।
भुक्ति-मुक्ति की जुक्ति न चाहौं, केवल तुमहिं निहारूँ।।४।।

(६०)

राग आसावरी, तीन ताल १६-११-१९७३

प्यारे ! कैसे कहा करूँ ?
तुम बिनु चैन न परत रैन-दिन, कैसे धीर धरूँ ।।
यह मन मूढ़ विषय विष मोह्यौ, कैसे चेत करूँ।
सब तजि लग्यौ न तुमसों प्यारे ! यासों सदा डरूँ ।।१।।

जद्यपि विषय सुहात न मनकों, तदपि न ते विसरूँ।
यही अड़ी आ पड़ो कहो अब कैसे पार करूँ ।।२।।

अरनी-सी हौं तो करि हारचौ, पचि-पचि वृथा मरूँ।
अपनो बल कछु काम न सारचौ, तुव बल सरन परूँ ।।३।।

निज बलसों कोउ तरचौ न अब लौं, हौं ही क्यों उबरूँ।
जो करि कृपा गहौ कर प्यारे ! तो भव जलधि तरूँ ।।४।।

(६१)

राग टोड़ी, तीन ताल ४-४-१९७३

प्रानधन ! कैसे धीरज धारूँ ?
होत हियो यह टूक-टूक जब याकी दसा विचारूँ ।।
सदा-सदासों साध रही, इन नैननि पियहिं निहारूँ।
पै यह तो सपनेहुँ दुरलभ अब, देखि-देखि मन मारूँ ।।१।।

तुम बिनु कहुँ न टिकत यह मनुआँ, कालै दुःख निवारूँ।
दीखत कोउ न हितू जग ऐसो, जासु सीख उर धारूँ ।।२।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अपने तो बल तुम ही, तुम तजि काकों और पुकारूँ ।
प्रीति-प्रसादी देहु दया करि नैननि तुमहिं निहारूँ ॥३॥

(६२)

राग जौनपुरी, तीन ताल ३०-५-१९७३

प्रानधंन ! कैसे मन समझाऊँ ?
तुम विन चैन न परत नैंक हूँ, तरसि-तरसि रह जाऊँ ॥
बीती वयस न तरस गयी यह, कबलौं यों तरसाऊँ ।
प्राननाथ ! ये प्रान लेहु तो अपुनो भाग्य मनाऊँ ॥१॥
भयो निरास न आस रही अब, तब हूँ तुमहि बुलाऊँ ।
तुम ही तो मेरे हो सब कछु, तुमहिं त्यागि कित जाऊँ ॥२॥
सब कछु लै जो मिलहु प्रानधन ! तो मैं सब कछु पाऊँ ।
तुम ही सों अब लगन लगी है, पाऊँ वा नहिं पाऊँ ॥३॥

(६३)

राग ललित, तीन ताल ४-४-१९७३

प्यारे ! पन्थ न कोऊ सूझै ।
मिटै न मनकी कसक काहु विधि, सूधी बात न बूझै ॥
पीर हि पीर लखात हिये में, नयनन नीर न आवै ।
तरस-तरस ही वयस बिताऊँ, जियकी जरनि न जावै ॥१॥
हाय दई ! यह कहा भई, नहिं प्रीति पियासों जागी ।
बीतो वयस न रहस प्रगट भौ, काहे लगन न लागी ॥२॥
कहा करूँ कित जाउँ दयानिधि ! कैसे तुमहिं सुहाऊँ ।
तरपनकों तरसत है मनुआँ, तरसि-तरसि रह जाऊँ ॥३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

है अटपटी बात्त या मनकी, कहि-कहि हू नट जावै।
कहा करै, न करै का प्यारे ! यह कछु समुझि न पावै ॥४॥

जैसो है यह स्याम ! तिहारो, तुम ही याहि सुधारो।
आय परचौ अब पौरि तिहारी, तुम तारो या मारो ॥५॥

स्याम-दिवानो ॥६४॥

राग भैरवी, कहरवा ५-६-१९७३

स्याम ! मोहिं तेरी सुरति सतावै।
रही न काहू काम-काजकी, तू ही तू अब भावै॥
जब-जब याद आत प्रिय ! तेरी, जियरा अति अकुलावै।
मैं तो मरूँ लाजकी मारी, ननदी नाक नचावै ॥१॥

कैसी करूँ न समुझि परत कछु, बुधि-बल काम न आवै।
बाँकी झाँकी अड़ी आँख में, कैसेहुँ निकसि न पावै ॥२॥

पुनि-पुनि हुमकि-हुमकि मन मेरो तेरी ही दिसि धावै।
जित देखूँ तित दीखत तू ही, और न चख लख पावै ॥३॥

तुव मुख-चन्द्र-चकोर भये चख, बिनु देखे विलखावैं।
चढ़ि-चढ़ि अटा छटा देखनकों पुनि पुनि ये उकसावैं ॥४॥

तेरी हूँ तेरी ही प्यारे ! और न मोहिं सुहावै।
कहा करै कुलकानि निगोड़ी जब प्राननि बनि आवै ॥५॥

प्रतीक्षा (६५)

राग आसावरी, ताल कहरवा १५-११-१९७२

आओ जी आओ, घनस्याम ! बाट मैं जोह रही॥
मैं बड़ी बेर सों ठाड़ो, निरखूँ हरि बाट तिहारी।
तुम रहे कहाँ विरमाय तुमहिं मैं टोह रही ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुम बिनु मन भारी-भारी, उर प्रतिपल रहै दुखारी।
कित अटके हो अभिराम स्याम निसि खोय रही ॥२॥
मैं ठाढ़ी अपनी पौरी, निरखूँ मग मानहुँ बौरी।
जब-जब कोइ आहट होय तुमहिं कों खोज रही ॥३॥
अबलौं यो हीं मग जोहूँ, तुम ही कों प्रतिपल टोहूँ।
यों टोहत-टोहत स्याम! वयस यह खोय रही ॥४॥
कबलौं यों तरसाओगे, का कबहुं न इत आओगे।
अब परी प्रानपै आय, मन हि मन रोय रही ॥५॥

नाँच न नचाओ ॥६६॥

राग भीमपलासी, कहरवा २१-११-१९७२

स्याम! अब अधिक न नाँच नचाओ।
बहु विध बाँकी चाल चलाई, अब सूधी-सी राह चलाओ ॥
हौं तो कठपुतरी तुव करकी, जैसो चाहो खेल खिलाओ।
पै का करूँ बान या मनकी—तुम न मिलो तो तुमहुँ न भाओ ॥१॥
बाँके नाँच नचाये तुमने, कोउ न करे सोउ करवायो।
पै तुव प्रीति पुनीत न बाढ़ी तो सो करि बाढ़यो पछितायो ॥२॥
अब तो कृपा करहु हरि! ऐसी, लोक-वेद की मेंड़ रखाओ।
भाव बढ़ै करतब नहिं भासै—ऐसो सूधी डगर बताओ ॥३॥
मैं हारचौ जीते सब विधि तुम, पै जब सब तुमही करवाओ—
तब तो हार-जीत भी प्यारे! अपनी ही समझो-समझाओ ॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पुकार ॥६७॥

राग भैरवी, कहरवा १४-३-१९७३

ओ छैल-छबीले मनमोहन ! तुम क्यों हमको तरसाते हो।
एक वार दिखा बाँकी झाँकी, क्यों छिपे-छिपे मुसकाते हो ॥१॥

छटपटा रहे हैं प्रान प्रानधन ! धैर्य न इन्हें बँधाते हो।
दर्शन दे करो कृतार्थ हमें, तुम करुनासिन्धु कहाते हो ॥२॥

उठती है अन्तस् में ज्वाला, तन-मन हैं उससे झुलस रहे।
जबसे तुमसे बिछुड़े प्रीतम ! तबसे हमने बहु दुःख सहे ॥३॥

अब और न कोई हमारा है, जिससे हम मन की व्यथा कहें।
बल केवल एक तुम्हारा है, जिससे ये दुःसह दुःख सहें ॥४॥

पर कब तक ऐसे बीतेगी, क्या कभी न तुम सुध-बुध लोगे।
नयनों की प्यास बुझाने को क्या कभी न तुम दर्शन दोगे ॥५॥

ऐ मनमोहन! यह मन लेकर क्यों मनका मोह न हरते हो ?
क्या इसकी कुटिल कुचालोंसे तुम कालियमर्दन डरते हो ॥६॥

प्यारे! जब तुम अपनाओगे तब यह न कुटिल रह पायेगा।
पाकर अमोघ संस्पर्श तुम्हारा स्वयं सरल हो जायेगा ॥७॥

ले लो, ले लो इसको प्यारे ! अब मेरा मुझ पर कुछ न रहे।
रह जाओ बस तुम ही केवल 'मैं-मेरे' का यह दुर्ग ढहे ॥८॥

(६८)

राग आसावरी, तीन ताल २६-३-१९७४

ए हो अभिराम स्याम ! बात का विचारी।
काहे नहिं सुनहुँ ललन ! टेर तुम हमारी॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY
Sri Sri Anandamayee Ashram
BANARAS

तुम बिनु प्रति विकल प्रान,
पल-पल जुग-जुग समान।
तुम ही मम प्रान-प्रान
चेरि हौं तिहारी ॥१॥

कलपत सब दिवस जात,
बिलपत सियरात रात।
हाथ कोउ न आत बात,
करूँ का मुरारी ॥२॥

छिन-छिन तन होत छीन,
पल-पल मन होत दीन।
दिन-दिन वय होत लीन,
लेहु सुधि हमारी ॥३॥

तुम बिनु अपनो न और,
चरन तजि न और ठौर।
करहु स्याम! कृपा-कोर,
सरन हौं तिहारी ॥४॥

(६९)

राग आसावरी, तीन ताल २७-३-१९७३

स्याम! तुम मो मन-भवन पधारो।
जोहत हों नित बाट तिहारी, काहे करहु अबारो[1] ॥
सदा सदा हौं नाथ! तिहारो, क्यों तुम मोहिं बिसारो।
तुम बिनु व्याकुल प्रान-प्रानधन! वेगहिं आय सम्हारो ॥१॥

---

१. देरी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रहत हिये में हिलग[1] मिलन की, विरह-ज्वाल जिय जारो।
कब लगि यों तरसाओगे हरि! हेरि-हेरि हौं हारो ॥२॥
हो सर्वग्य समर्थ स्याम! तुम जानहु खरभर[2] सारो।
कहा-कहा कहि तुमहिं बुझाऊँ, ज्यों जानों त्यों तारो ॥३॥

(७०)

राग कान्हरा, तीन ताल २७-३-१९७३

स्याम! अब वेगहि लेउ बचाय।
डूबत है यह तरनि[3] भँवर में, दीखत कोउ न सहाय॥
तारे तुमने अधम अनेकन, सुजस रह्यौ जग छाय।
अब याकी बारी है प्यारे! काहे रहे सकुचाय ॥१॥
तरसि-तरसि सब वयस बितायी, अन्त रह्यौ नियराय।
रही न उर कोउ आस काहु की, जीवन बीत्यौ जाय ॥२॥
दरस-परस तो कैसे माँगूँ, ऐसो कहाँ सुभाय।
केवल कृपा-कोर हो इतनी, चरन-सरन मिल जाय ॥३॥
पर्‌यौ रहूँ नित पौरि रावरो, सीथ-प्रसादी पाय।
रहै न जग की आस कोउ उर, प्रीति हिये सरसाय ॥४॥

(७१)

राग भैरवी, ताल दादरा २८-३-१९७३

दयामय! क्यों निठुरई धरी।
ऐसी कहा चूक भई मोसों, टेर न कान करी॥
मैं तो हेरि हेरि हारी हरि! हिय अति पीर परी।
तुम न सुनहु कोउ बात हमारी, हुमकहुँ परी-परी ॥१॥

---

१. हुड़क, आकांक्षा। २. बेचैनी। ३. नौका।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुम बिनु चित बेचैन रैन-दिन, नैनन नीर-झरी।
ऐंठन-सी कछु होत हिये में, तड़पूँ परी-परी ॥२॥
ऐसो और न दीखत है कोउ, जिन जन-पीर हरी।
काके पायँ परूँ अब प्रीतम! विलपूँ डरी-डरी ॥३॥
तुम ही मेरे प्रान प्रानधन! जीवन-मूरि जरी।
जो सुधि लेहु सरै सब कारज, बिगरी बनै खरी ॥४॥

(७२)

राग अहीर-भैरव, तीन ताल ३०-३-१९७३

स्याम! मैं तरसि-तरसि रह जाऊँ।
तुम बिनु प्रान! न चैन रैन-दिन, कैसे वयस बिताऊँ॥
होत हिये में हा-हा-सी नित, कैसे करि सचु पाऊँ।
मनकी पीर मनहि में मारूँ, काको व्यथा सुनाऊँ ॥१॥
अपने बिना व्यथा को बाँटे, अपनो कोउ न पाऊँ।
सदा-सदासों अपने हो तुम, कैसे तुमहिं बुलाऊँ ॥२॥
यह जीवन अब भार भयो है, मीचुहिं[1] मीत बनाऊँ।
प्रीति बिना पै मीत बनै को, प्रीति कहाँ तें लाऊँ ॥३॥
प्रीति भई तुमही सों प्यारे! कैसे ताहि बटाऊँ।
सुनों, न सुनों तुम्हीं यह जानों, मैं तो तुमहिं बुलाऊँ ॥४॥
आओ-आओ, प्रान प्रानधन! पग पाँवड़े[2] बिछाऊँ।
करहु पुनीत परसि पद-पंकज, पुनि मन-भवन बसाऊँ ॥५॥
भाव-भगतिमय पुरट[3]-पीठ पै प्रीतम! पुनि पधराऊँ।
लाड़ लड़ाय-लड़ाय हुलसि हिय, तनकी तपन बुझाऊँ ॥६॥

१. मृत्युको। २. पाँव रखकर चलने का वस्त्र। ३. सुवर्ण।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नेह-दीपसों नीराजन[1] करि, मन-धन भेट चढ़ाऊँ।
सब कछु सोंपि चावसों प्यारे ! तुव पद प्रीति समाऊँ ॥७॥

(७३)

राग भैरव, तीन ताल　१७-४-१९७३

हरि ! हौं तरसि-तरसि रह जाऊँ।
मनकी पीर मनहिंमें मारूँ, काकों व्यथा सुनाऊँ ॥
जनम-अवधि तव बाट निहारी, तदपि न तव रुचि पाऊँ।
अब तो नाथ ! निरास भयौ मन, कैसे करि समझाऊँ ॥१॥
इह-परकी सम्पद् न चहौं कछु, धन जन भवन भुलाऊँ।
पद-पंकज की प्रीति मिलै तो जनम-जनम गुन गाऊँ ॥२॥
कहा करौं कछु पंथ न सूझत, काकों कहि समुझाऊँ।
निज बुधि-बल कछु काज न सार्‌यौ, अब का करि सचु पाऊँ ॥३॥
कैसे कहूँ कृपा न करो तुम, निज अघ कत बिसराऊँ।
अपराधी हूँ, तदपि पौरि तजि कहहु कहाँ अब जाऊँ ॥४॥
पतित-उधारन हो तुम प्यारे ! हौं हू पतित कहाऊँ।
जो तुम लाज रखो निज प्रनकी तो मैं निज पन पाऊँ ॥५॥

(७४)

राग देशकार, कहरवा　१५-५-१९७३

मनमोहन जीवनधन प्यारे ! अब तो करो कृपाकी कोर।
भटक-भटक मैं थका दयानिधि! अधिक न भटकाओ अब ओर ॥१॥

---

१. आरती।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुम बिन चैन न है इस मनको, पर न लगनका भी है जोर।
क्या मुख ले मैं सम्मुख आऊँ, पर मनको है और न ठोर ॥२॥

है जड़ता अरु घोर शिथिलता, तो भी रहा न जगमें राग।
जैसी भी है जितनी भी है, है प्रभु-पदतलकी ही लाग ॥३॥

प्रियतम ! बिना तुम्हारी रतिके रीता-रीता है यह चित्त।
पर तव प्रीति-प्रतीति छोड़कर रहा न इसका कोई वित्त ॥४॥

जैसा भी है हुआ तुम्हारा, इसे श्याम ! तुम अपनाओ।
है नगण्य, पर है प्रभुका ही, अपना जान न ठुकराओ ॥५॥

लेना-देना है न मुझे कुछ, अपनेको अपनाओ नाथ !
जैसा भी हूँ प्रभुका ही हूँ, प्रभुको पा मैं हुआ सनाथ ॥६॥

(७५)

राग लावनी, ताल कहरवा ३०-५-१९७३

हे जीवनधन ! मनमोहन ! प्राण हमारे।
तुम ही हो प्यारे ! केवल एक सहारे ॥
तुम बिना प्राणधन ! प्राण बहुत अकुलावें।
अब तुम्हें छोड़ ये कहो, कहाँ क्यों जावें ?
तव दर्शनको ये लोचन अति ललचावें।
बिन देखे वह मधुमूर्त्ति चैन क्यों पावें ?
तुम ही हो प्यारे ! इन नयनों के तारे ॥१॥

है जन्म-जन्म की यही साध उर भारी—
'इन नयनोंसे निरखूँ वह छवि अति प्यारी'
है साधन-सम्बलका कुछ बल न हमारे।
पर सदा-सदासे हम हैं स्याम ! तुम्हारे ॥
इस नाते ही कुछ कृपा करो तुम प्यारे ! ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

है अन्तस्तलकी यही ललक अति प्यारी।
हे करुणामय ! क्या होगी कृपा तुम्हारी ?
है हमपर क्या कोई भी वस्तु हमारी ?
फिर क्या दें इसका मूल्य तुम्हें गिरिधारी !
निज करुणासे ही द्रवहु प्राणधन प्यारे ! ॥३॥

हम कर-कर विविध उपाय दयामय ! हारे।
पर हुआ न कुछ भी मोहन ! किये हमारे ॥
अब औरन प्रियतम ! हमको अधिक सताओ।
हम हार चुके हैं, तुम ही हमें जिताओ ॥
हम छोड़ चुके हैं प्यारे ! सभी सहारे ॥४॥

अब बहुत हुई, करुणामय ! करुणा कीजै।
इन मृतक-तुल्य प्राणों को जीवन दीजै ॥
तुम कृपासिन्धु हो, बिन्दुमात्र ही दीजै।
हम बिछुड़ गये, हमको अपना कर लीजै ॥
फिर हम-तुम प्यारे ! रहें न कुछ भी न्यारे ॥५॥

(७६)

राग भैरवी, ताल दादरा ७-६-१९७३

आइये गोपाललाल ! दरस-दान दीजै।
तुम बिनु अति विकल प्रान, कृपा-कोर कीजै ॥
प्राननाथ ! अति सुजान ! माधव ! मधुमय महान् !
दरस-तरस प्रखर जान वेगहि सुधि लीजै ॥१॥

जनम-जनम यही साध– 'पाऊँ पद-रति अगाध।'
छमि - छमि सकलापराध चरन - सरन दीजै ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भटकि-भटकि थक्यौ स्याम! मिल्यौ नाहिं कोउ ठाम।
तन-मन अति भये छाम इनहिं सान्त कीजै ॥३॥

जबसों हरि! दूर भयो, मनमें दुख-पूर बढ्यो।
दुरित दैन्य दोस दह्यो, देव! दया कीजै ॥४॥

तुम बिनु मम कोउ नाहिं, काकी अब सरन जाहिं।
आइ पर्यो पौरि पाहि, प्रीतम! सुधि लीजै ॥५॥

मिलनाकांक्षा ॥७७॥

राग माँड़, ताल दीपचन्दी २६-११-१९७२

मेरे प्यारे साँवरे! काहे रहे तरसाय।
आओ वेगहि लाड़िले! तुम बिनु रह्यो न जाय ॥१॥

छिन-छिन छीजत देह यह, काल रह्यो नियराय।
का जब प्रान पलाइ हैं, तबहि मिलहुगे आय ॥२॥

तो फिर देर न कीजिये, प्रान प्रानधन! लेहु।
ये नगन्य उपहार लै, दरस-सुधा किन देहु ॥३॥

काया माया साँवरे! तुम्हरो ही सब खेल।
सदा न काहूकी रहे, नदी-नाव सम मेल ॥४॥

है यह सम्पति रावरी, यामें कछू न मोर।
तुमहिं तुम्हारी सौंपते, का लागै है मोर ॥५॥

अपनी वस्तु सम्हारि कै, कृपा-प्रसादी देहु।
अपनेकों अपनाइ कै, अपनो ही करि लेहु ॥६॥

विरह-व्यथा अतिही विषम, प्यारे! सही न जाय।
प्रीति-पियूष पिवाइ कै निजमें लेहु मिलाय ॥७॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँग ॥७८॥

राग माँड़, ताल कहरवा २८-११-१९७२

तुम ही हो जीवन-धन प्यारे! तुम बिनु पड़ै न पलभर चैन ।
नयनोंकी निधि हो मनमोहन ! दर्शनको तरसैं दिन-रैन ॥१॥

प्राणोंके हो प्राण प्राणधन ! तुम बिन प्राणहीन यह तन ।
मनके मन हो मनहर प्यारे! तुम बिन मन क्या करे मनन ॥२॥

है अद्भुत-सी दशा हृदय की, जीवन अथवा कहें मरण ।
रहा न कोई आश्रय जगमें, हैं बस केवल चरण शरण ॥३॥

कर-कर थका उपाय अनेकों मिले न मनको मनके मीत ।
अब भी मनमें भरा विषय-बिष, हुई न पद-पंकजमें प्रीति ॥४॥

करना-धरना रहा न वश का, अब तो है यह प्रभु का यन्त्र ।
जैसे चाहो इसे चलाओ, इसमें कुछ भी है न स्वतन्त्र ॥५॥

ऋद्धि-सिद्धि की चाह न कोई, भुक्ति-मुक्ति का हुआ विराम ।
पद-पंकज की प्रीति निरन्तर बढ़ती रहे नित्य निष्काम ॥६॥

जैसे चाहो रक्खो प्यारे ! अपने को अपना ही मान ।
यही चाह नित चढ़ी चित्तपर और न कुछ चाहूँ प्रतिदान ॥७॥

सुधि लीजिये ॥७९॥

राग पीलू, तीन ताल ३०-१०-१९७२

जैसो तुमहिं सुहाय, स्याम ! सोइ कीजिये ।
चरन-सरन आ परयो, लाज रख लीजिये ॥१॥

भटकत-भटकत थक्यो, कृपा अब कीजिये ।
भये बहुत अपराध, क्षमा प्रभु ! कीजिये ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

साधन-सून्य, तथापि विनय सुन लीजिये—
'तुम बिनु कछु न सुहात, कहो किमि जीजिये?' ॥३॥

मनकी तो यह साध–'प्रीतिरस भोजिये।
केवल हरि हिय रहें, और सब छीजिये' ॥४॥

तदपि न है कोउ शक्ति, कहा अब कीजिये।
करुनामय करि कृपा तुमहिं सुधि लीजिये ॥५॥

कृपा-याचना ॥८०॥

राग ललित, तीन ताल २१-१२-१९७२

कान्ह ! कछु करुना-कोर करो।
भटक्यो बहुत विषय-बीथिनमें, अब यह विपद् हरो ॥
तुमहिं छाँड़ि कहुँ चैन न पायो, व्यर्थ हि भटकि मरो।
सब तजि चरन-सरन तुव आयो, अब सब स्रम बिसरो ॥१॥

साधन-आराधन हुँ कियो, पै काज न कोउ सरो।
लोक-लीक की भोति न मेंटी, इरिषा-अनल जरो ॥२॥

अपनी सुख-सुविधा उर आँकी[1], परहित कछु न करो।
करि कुतर्क उर गर्व बढ़ायो, तुव पद-रति बिसरो ॥३॥

पचि-पचि मर्यौ न सर्यौ काज कछु, निज बल-गर्व गरो।
आयो सरन कृपानिधि ! अब निज पद-रज मोहिं करो ॥४॥

(८१)

राग भैरवी, ताल कहरवा २-६-१९७३

हरिजू ! मेरी हूँ सुधि लीजै।
दरस-परस की तरस हिये है, ताहि सरस कछु कीजै ॥

१. अंकित है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हिय की हिलग न विलग होत हरि ! सुलग अनल सम जीवै ।
कृपा वारि बरसाय कृपानिधि ! ताहि समन अब कीजै ।।१।।
कहा कहौं कछु कहत न आवै, कलप-कल्प[1] वय बीतै ।
कृपा होय तो कलप-कलप[2] की व्यथा पलक में छीजै ।।२।।
मैं तो जतन करत हरि हारचौ, साध न सधत लखावै ।
जो कछु करुना करहु स्याम ! तो प्रीति पाय मन भीजै ।।३।।
जनम-जनमकी रगर लगी है, डगर न और सुहावे ।
करुना करि कर पकर प्रानधन ! चरन-सरन में लीजै ।।४।।
अधिक कहा अब कहों कृपामय ! दीखत कोउ न सहारो ।
कृपा-कृपाकी रटन लगी है, कृपा-दान अब कीजै ।।५।।

(८२)

राग सोहनी, तीन ताल २५-५-१९७३

भटकि-भटकि हारी हौं प्यारे ! अब तो दया-दान दीजै ।
जनम-जनम की चेरि तिहारी, अपनी चरन-सरन लीजै ।।
प्यारे ! या संसार में, मेरो और न कोउ ।
चरन त्यागि जाऊँ कहाँ, होनी होय सो होउ ।।
होनी होय सो होउ प्रानधन ! अपनी जानि कृपा कीजै ।।१।।
मन-मतंग[3] मानत नहीं पुनि-पुनि परत कुपंथ ।
करुना-अंकुससों करहु याहि स्ववस श्रीकन्त ।।
याहि स्ववस श्रीकन्त करहु, पुनि प्रीति-पंथ प्रेरित कीजै ।।२।।
प्रीति-पियासे प्रान ये तड़पि-तड़पि रहि जाहिं ।
और न इनकी ललक कोउ, तुम बिनु अति अकुलाहिं ।।
तुम बिनु अति अकुलाहिं नेहनिधि! अब तो दया-मया कीजै ।।३।।

---

१. कल्पना कर-करके । २. कल्प-कल्पान्तरकी । ३. हाथी ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्यारे ! पुनि-पुनि का कहौं, तुम सर्वज्ञ सुजान।
तुमसों काकी का छिपी, स्वयं लीजिये जान॥
स्वयं लीजिये जान प्रानधन ! ज्यों जानहु अपनी कीजै ॥४॥

ज्योति जगा दो ॥८३॥

राग काफी, ताल दीपचन्दी १५-६-१९७३

श्याम ! अब जीवन-ज्योति जगा दो।
जीवन के जीवन हो तुम ही, अपनी प्रीति-प्रभा दो॥
छाया है तम-तिमिर हृदयमें, पन्थ न सूझ रहा है।
प्रीति-प्रभा से प्रतिभासित कर, प्रियतम ! पन्थ दिखा दो ॥१॥

भटक-भटक जग-जलनिधि में मैं मोहन ! अति अकुलाया।
अब इसकी पतवार पकड़ कर प्यारे ! पार लगा दो ॥२॥

तरह-तरहके ताप-तिमिंगल[1] उछल-उछल मुहँ बाते[2]।
इनकी अति भीषण विभीषिका से अब श्याम ! छुड़ा दो ॥३॥

दुर्वासना, दुरित[3], दुर्मति से मति-गति है बौराई।
प्रीति-पियूष पिलाकर प्यारे ! इसकी भीति भगा दो ॥४॥

है कामना कुटिल कल्लोलों[4] की मोहकता छाई।
विरति-सुरति की सुरभि सुँघाकर इसका मान मिटा दो ॥५॥

तन मन धन की रति न रहे अब, नति[5] में मति रम जाये।
सुमति-सुगतिकी भी रति हरकर निज अनुरक्ति बढ़ा दो ॥६॥

क्या-क्या और कहूँ करुणानिधि ! सबके सब कुछ हो तुम।
सब कुछ लेकर रहो तुम्हीं अब—इतनी दया दिखा दो ॥७॥

---

१. जो बड़ी बड़ी मछलियों को निगल जायें ऐसे महामत्स्य। २. खोलते। ३. पाप। ४. लहरों। ५. नम्रता, दीनता।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गैल दिखा दो ॥८४॥

राग भीमपलासी, तीन ताल १९-१-१९७३

स्याम ! मोहि अपनी गैल दिखा दो।
क्यों भटकाय रहे नट-नागर ! सूधे पंथ लगा दो ॥
भटकि-भटकि मैं भई बावरी, सुनी न मेरी टेर।
अब तो प्रान प्रानधन ! निकसत, डूबी नाव बचा दो ॥१॥
सुरग-नरक को लोभ न भय है, भुक्ति-मुक्ति दोउ त्यागीं।
केवल प्रीति तिहारी चाहूँ, प्रीतम ! नैंक जगा दो ॥२॥
कहा करूँ, कछु समुझि न आवत, भटकि-भटकि मैं हारी।
जो चाह्यौ सो भयौ न प्यारे ! अब करुना दरसा दो ॥३॥
दीखत और न कोउ सहारो, सभी भटकते भासैं।
का सों कहों व्यथा या जियकी—तुम ही नैंक बता दो ॥४॥
सदा-सदा हौं चेरि तिहारी, तुम मनमोहन मेरे।
अपनी कों अपनाओ प्रीतम ! साँसति सभी मिटा दो ॥५॥

द्वारे खड़ी ॥८५॥

राग भैरवी, ताल कहरवा ३-१-१९७३

आओ जी आओ नंदलाल ! तिहारे मैं द्वारे खड़ी।
तुम खोलो तनिक किवाड़, बात का ऐसी अड़ी ॥
मैं बहुत देर की आई।
नहिं अब लों भई सुनाई।
क्यों प्रीतम ! देर लगाई,
होत उर पीर बड़ी ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मैं सब नाते तजि आई।
तुव चरन-सरन चित लाई।
अब और न कछू सुहाई,
चित्त तव सुरति अड़ी ॥२॥

मैं जहाँ-तहाँ बहु भटकी,
बहु विषय-जालमें अटकी।
अब करम-पोट मैं पटकी,
चहौं तव प्रीति-लड़ी ॥३॥

है आसा उरमें भारी।
तुम कृपा करो गिरिधारी।
प्यारे! बिनु कृपा तिहारी–
बनी काकी बिगड़ी ॥४॥

अब दरस-दान हरि दीजै।
निज चरन-सरन में लीजै।
तुव कृपा-सुधा उर भीजै,
प्रीति की लगै लड़ी ॥५॥

द्वारे ठाड़ो ॥८६॥

राग भीमपलासी, तीन ताल २३-१-१९७३

स्याम ! यह भिच्छुक ठाड़ौ द्वारे।
चरन-सरन चाहत मनमोहन ! छूटे सभी सहारे ॥
भटकि-भटकि अब पैर पिराने, काम न कोऊ सारे।
अति आतुर ह्वै आयौ प्रीतम ! खोलहु नैंक किवारे ॥१॥
रिधि, सिधि, सम्पति की न चाह कछु, मान-गुमान बिसारे।
कहा करौं मुकुति हुँ लै प्रीतम ! जहाँ न दरस तिहारे ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सब तजि अब चाहत यह केवल कृपा-कोर तव प्यारे !
प्रीति-पियूष पानकों तरसत निसि-दिन प्रान हमारे ॥३॥
उरमें रहत कुलबुली-सी कछु, जोग-जुगति करि हारे ।
निकसन चहत प्रान मानहुँ, पै तजत न आस तिहारे ॥४॥
दयासिन्धु अब दयाबिन्दु दै पोसहु इनहिं सवारे ।
एक बार हँसि कहहु लाड़िले ! 'अब तुम भये हमारे' ॥५॥

कृपा बरसाओ ॥८७॥

राग विलावल, ताल धमार २-२-१९७३

कृपानिधि ! कृपा-वारि बरसाओ ।
बहुत हुई यह हेरा-फेरी, अब न अधिक तरसाओ ॥
जो लेना हो ले लो प्यारे ! देर न और लगाओ ।
सब कुछ तो है स्याम ! तुम्हारा, लेते मत सकुचाओ ॥१॥
तन मन धन सब वारूँ तुम पैं, कृपा-कोर सरसाओ ।
बलिहारी तव मधुमयि छविपर, तनिक कृपा करि आओ ॥२॥
युग-युग की है साध साँवरे ! अब न अधिक डहकाओ ।
सब कुछ ले निज प्रीति दान दे मुझको ऋणी बनाओ ॥३॥
कब तक देखूँ वाट कृपा की, आओ प्रीतम ! आओ ।
इस दुखिया को चरण-सरण दे अपना नियम निभाओ ॥४॥

तुम्हारी करुणा ॥८८॥

राग पूरिया, तीन ताल २६-१-१९७३

स्याम ! तोरी करुना कहा सुनाऊँ ।
का-का दैन दई मनमोहन ! कहँ लगि उनहिं गिनाऊँ ॥
तन, मन, धन, पोसन, बल, विद्या, जो पायो तुम दीन्हों ।
जो कुछ कर्यौ करायौ तुमने, भ्रमसों अपुनों चीन्हों ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अपनो मानि दुःख बहु भोगे, अकरम नाना कीन्हें।
हानि-लाभ की हलचल में परि वृथा कष्ट सिर लीन्हें ॥२॥

तुव लीला के पात्र सबै, पै भ्रमवस तुम बिसराये।
तुमहिं छाँड़ि बहु विधि दुख भोगे, पै तुम हम न भुलाये ॥३॥

दुख दै सदा चिताये तुमने, निज ढिग मनहुँ बुलाये।
सुनि तुव टेर सरन जिन लीन्हीं, तिन तुम चरन बसाये ॥४॥

चरन-सरन जब मिली तिहारी, रह्यो न फिर कछु अपनो ॥
आप-हि-आप रहे बस प्रीतम ! जगत भयो सब सपनो ॥५॥

बलिहारी या मधु-लीलाकी, कहँ लगि महिमा गाऊँ।
निरखि-निरखि यह कलित केलि तब मन-ही-मन सचु पाऊँ ॥६॥

(८६)

राग धनाश्री पूरिया, तीन ताल २८-१०-१९७२

स्याम ! तोरी करुना पै बलि जाऊँ।
का न करों तव प्रीति हेतु हरि ! का न करत हियमें सकुचाऊँ ॥
सहूँ दुसह जठरानल ज्वाला, छप्पन भोग न हाथ लगाऊँ।
परूँ जाय नरकानल हूँ में, नन्दनवन कहँ सीस नवाऊँ ॥१॥

जो-जो दुःख दयानिधि ! आवें, दया मानि ते सीस चढ़ाऊँ।
सुखके सार पाय पद-पंकज सुरग और अपवरग भुलाऊँ ॥२॥

अपनो बल कछु है न प्रानधन ! तुव बलसों सब बात बनाऊँ।
जो करवाओ जो कहवाओ, करत कहत सो क्यों सकुचाऊँ ॥३॥

जीवन-मरन न चहौं कहूँ कछु, तुव पद-प्रीति हेतु ललचाऊँ।
साधन-सिद्धि न है कछु प्रीतम ! तुव करुनासों कहा न पाऊँ ॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रीति की भीख ॥६०॥

राग भीमपलासी, तीन ताल ३०-१०-१९७२

आयौ द्वार तिहारे प्यारे! खोल किवरिया साँवरिया।
भटकि-भटकि हारचौ विषयनमें, मिली न कहुँ मोहिं ढाढ़सिया॥
भटकि-भटकि संसारमें, आयौ तेरे द्वार।
कृपा-कोर करि कान्ह तू अब तो खोल किवार॥
अब तो खोल किवार, द्वार पै ठाड़चौ मैं एक बावरिया॥१॥
लोक और परलोक की है न कोउ अब आस।
तुव पद-पंकज-प्रीति की बाढ़ै अनु-दिन प्यास॥
बाढ़ै अनुदिन प्यास न चाहौं भीख और कोउ साँवरिया॥२॥
जद्यपि पुनि-पुनि प्रानधन! विषय-व्याल डसलेत।
तदपि प्रान तरसत रहहिं प्रिय! तुव दरसन हेत॥
प्रिय! तुव दरसन हेत सदा ही लगी रहत उर आगुरिया॥३॥
कहा कहौं उरकी व्यथा, कथा न बरनी जात।
प्यारे! तेरे ही लिये पल-पल यह तरसात॥
पल-पल यह तरसात न सूझत मिलिवे की कोउ डागरिया॥४॥
अपनौ बल हारचौ सबै, तुव करुनाकी आस।
करुनानिधि! अबकृपाकरिकरहु नमोहिं निरास॥
करहु न मोहिं निरास प्रीति की लगै हिये में गाँसुरिया॥५॥

कृपा-प्रार्थना ॥६१॥

राग पूर्वी, तीन ताल २-३-१९७३

स्याम मैं कैसे तुमहिं पुकारूँ।
दीखत कोउ अधिकार न अपनो, जब निज ओर निहारूँ॥
होत न उर कोउ आस मिलनकी, कैसे धीरज धारूँ।
प्रीति-प्रतीति न दीखत नैंकहु, देखि-देखि मन मारूँ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पै का करूँ ललक उर लागी, कैसे याहि बिसारूँ।
चैन न है दिन-रैन दयानिधि! प्रतिपल बाट निहारूँ ॥२॥
कलपत-विलपत जात वयस सब, बात न और विचारूँ।
कहा करूँ कछु समुझि न पाऊँ, बल-विवेक सब हारूँ ॥३॥
अब बस आस कृपा हो की है, यही आस तनु धारूँ।
कृपानाथ! कनमात्र कृपा हो, तो यह जनम सुधारूँ ॥४॥

(६२)

राग सोहनी, तीन ताल

२-३-१९७३

स्याम! मोहिं एक भरोसो तेरो।
कासों कहौं व्यथा या मनकी, जगमें कोउ न मेरो ॥
तोसों ही यह तन-मन पाये, बल-विवेक हूँ तेरो।
सन्तसंग तुव कृपा पाय उर पायो कछुक उजेरो ॥१॥
मीठे विषय भये सब सीठे, स्वजन विराने जाने।
जग सब भयो सुपन-सो प्यारे! तुव पद निज धन माने ॥२॥
अपनो जदपिन भासत कोऊ, तदपि न पद-रति पायी।
वाद-विवाद, वृथा-चिन्तन ही में सब वयस बितायी ॥३॥
सूनो-सूनो-सो लागत सब, नीरसता उर छाई।
प्रीति-पीयूष-प्यास उर जागै तो कछु रस सरसाई ॥४॥
कैसे जगै न जान परत कछु, अपनो बल सब हारो।
कृपा-कोर जो होय रावरी, सुधरै काज हमारो ॥५॥
दया-दान अब देहु दयानिधि! प्रीति प्रसादी पाऊँ।
केवल एक तिहारी ही ह्वै, जनम-जनम गुन गाऊँ ॥६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(६३)

राग भैरवी, ताल कहरवा २६-३-१६७३

स्याम तोरी कृपा-कोर नित ध्याऊँ ।
सुर-दुरलभ मानुस तनु दीन्हों, जासों प्रियतम ! तुव गुन गाऊँ ॥

चरन-सरन सन्तनकी दीन्हीं, जिनसों ग्यान-ध्यान कछु पाऊँ ।
बुधि, विवेक, विद्या हूँ पाईं, कहँलगि तिनकी महिमा गाऊँ ॥१॥

कोटि-कोटि मुख देहु दयानिधि ! तदपि दयाको पार न पाऊँ ।
सेस-सारदा हूँ पचि हारे, तब मैं ही कहि कहा सुनाऊँ ॥२॥

तदपि न भई आस परिपूरन, प्यासो-सो इत-उत नित धाऊँ ।
भटक्यौ बहुत न प्यास बुझी कहुँ, अब पौरी परि अलख जगाऊँ ॥३॥

तुव पद-प्रीति-रीति नहिं पाई, याही सों अब हूँ बिलखाऊँ ।
नैनन में नित तरस दरसकी, यही प्याससों अति अकुलाऊँ ॥४॥

प्रेमिनकी आसा नित पूरी, प्रेम-पदारथ कैसे पाऊँ ।
अपनो बल-विवेक सब हारचौ, तुव करुना ही नित चित ध्याऊँ ॥५॥

हो करुनाके सिन्धु प्रानधन ! बिन्दुमात्र हूँ करुना पाऊँ—
तो यह आस होय परिपूरन, जनम-जनम तुव गुनगन गाऊँ ॥६॥

अलक्ष्य लीला ॥६४॥

राग वसन्त, ताल दीपचन्दी २०-७-१६७३

ललन ! तोरी लीला लखि न परै ।
पचि-पचि हारे सिध, मुनि-ग्यानी, तो हूँ कछु न फुरै ॥
मन बानीकी गम न यहाँ कछु, पानी बुद्धि भरै ।
अघटितकों सुघटित करि डारै, सुघटित अघट करै ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जाके हित अति पौरुख करि कोउ निसि-दिन एक करै —
सो न होय, पै जो न चहै सो बरबस आय परै ॥२॥
जो तुव कृपा होय तो मूकहुँ वेद-भेद उचरै।
पंगु मेरु गिरि चढ़हि, अन्ध अति अद्भुत करम करै ॥३॥
महामन्द हूँ होय महामति, कुमतिहुँ सुमति वरै।
होय अकिंचन कञ्चनाधिपति, निबलहुँ सबल डरै ॥४॥
सर्वसमर्थ स्याम ! तुव करुना, कौतुक का न करै।
या हो-सों सब आस-भास तजि जन तव पद पकरै ॥५॥

क्या चूक हुई ॥६५॥

राग सोहनी, तीन ताल ११-११-१९७२

ऐसी कहा चूक भई मो सों ?
अपनो-सी बहु विधि करि हारचौ, मिल्यो न उत्तर तो सों ॥
हो सब भाँति समर्थ दयानिधि ! दीन-हीन को मो-सो।
मो हूँ मैं जो कछु सो तेरो, फिर क्यों रूँसो मो सों ॥१॥
तेरे सिवा न चहौं कबहुँ कछु—ऐसो मोहिं भरोसो।
फिर काहे तू करत कृपनता, दया-दान करि पोसो ॥२॥
कहा करों, कछु समुझि न पाऊँ, निज मनकों ही कोसों।
पै तुव कृपा बिना का बनि है, बाद हि प्रानन सोसों ॥३॥
है निस्चै कछु चूक आपुनी 'छमा-छमा' कहि घोसों।
छमासील हो सदा साँवरे ! छमहु होय जो दोसो ॥४॥
सरनागत की चूक चूकि हो—मोकों यही भरोसो।
जो कहुँ चूक गिनहुगे तो फिर हुइ है कब सन्तोसो ॥५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

निहोरा ॥६६॥

राग पूरिया धनाश्री, तीन ताल २४-११-१९७२

प्यारे ! तुम सों नेह न लागो ।
भटकत रहत चित्त नित इत-उत, पियत न प्रीति-पियूष अभागो ॥
जिनसों लेन-न देन कबहुँ कछु, रहत कबहुँ उनहूँ में लागो ।
गटकत रहत विषय-विष पामर, स्याम-सुधा-रस अबहुँ न पागो ॥१॥
कहा करूँ कछु समुझि न पाऊँ, मोह नींदसों अबहुँ न जागो ।
बिना बात और बिना काज हूँ दर-दर डोलत रहत अभागो ॥२॥
अपनो अब कोउ बल नहिं दीखत, हौं तो भटकन ही में लागो ।
औरहु कोउ ऐसो नहिं जानूँ बिना कृपा जो जगमें जागो ॥३॥
कृपा-कोर करि देहु दयानिधि! तुव पद-प्रीति भीख इक माँगों ।
हो उदार-चूड़ामनि माधव ! तुमहिं छाँड़ि काके पग लागों ॥४॥

(९१)

राग पूरिया, ताल कहरवा २-४-१९७३

स्याम ! यह व्यर्थ हि वयस गई ।
भई न प्रीति पुनीत तुम हि सों तो जग जियत मुई[1] ॥
सेये सन्त सुमति हूँ पाई, सूझीं जुगति नई ।
तदपि न गई वासना मनसों तो का विरति भई ॥१॥
तजि-जन-संग इकन्त रह्यो, पै मन-हलचल न गई ।
मूँदे नाक-कान हूँ पै यह सुरति न निरति भई ॥२॥

---

१. मरी ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तजि परिवार भयो संन्यासी, आसा पै न गई।
कहा भयो जो वसन रँगाये, प्रीति न उर उनई[1] ॥३॥
प्रीति-प्रतीति होय प्रीतमसों, नित-नित नई-नई।
तब ही होय सार्थक जीवन, न तो वय वृथा गई ॥४॥

(९८)

राग पूर्वी, तीन ताल २९-११-१९७२

स्याम मैं कैसे कहा करूँ ?
कहा चहत हो समुझि न पाऊँ, व्यर्थ हि भटकि मरूँ ॥
अपनो कोउ न इष्ट जगतमें, जाकी सरनि[2] सरूँ[3]।
जैसो स्याम! सुझाओ सोई तुव रुचि समुझि करूँ ॥१॥
निज प्रमाद अथवा तव रुचि, यह कैसे भेद करूँ।
अपनो जब कोउ स्वार्थ न जगमें तुव रुचि ही पकरूँ ॥२॥
प्यारे! उर-प्रेरक हो यासों एती विनय करूँ।
जो न करानो हो वह उरमें कबहुँ न धरूँ फुरूँ ॥३॥
तुव रुचि ही मेरी रुचि हो प्रिय! और न धरनि[4] धरूँ।
जो करवाओ वही फुराओ, जासों वही करूँ ॥४॥

(९९)

राग भैरवी, ताल कहरवा १-१२-१९७२

मैं हरि! का मुख लै मुख खोलूं।
किये सदा अपराध अनेकन, कैसे करि कछु बोलूं ॥

---

१. उदित हुई। २. मार्ग। ३. चलूँ। ४. धारणा।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सब कछु दियो तबहु बिसराये, विषय वीथिमें डोलूँ ।
है अतोल करुना करुनामय, मैं सुख-दुख लै तोलूँ ॥१॥

तन मन धन जन सबहि रावरे, मैं अपने करि बोलूँ ।
असुचि सलिल-सीकरसों जो तनु तामें रति-मति घोलूँ ॥२॥

सोचत रहूँ सदा इत-उतकी, तुमसों हृदय न खोलूँ ।
समुझ-बूझि कें हूँ यह सब हरि! इत-उत भटकत डोलूँ ॥३॥

साधन-साध्य न है कछु ऐसो जासों तुव रति मोलूँ[1] ।
अपनो जानि कृपा जो करिहो, जनम-जनम जय बोलूँ ॥४॥

(१००)

राग टोड़ी, तीन ताल २-१२-१९७२

हरि ! हौं रह्यौ भजन को भूखो ।
तुम सों प्रीति न नैंकहु लागी, रह्यौ हृदयसों रूखो ॥
किये उपाय अनेकन तोहू रह्यौ ठूँठ-ज्यों सूखो ।
ना मल मिटचौ न जग्यौ सत्त्व हूँ, रज तम ही हैं मूखो[2] ॥१॥

पर-सेवामें रुचि न भई कछु, परदुख देखि न दूखो ।
विषय-काठ नित रह्यौ चबातो समुझि मधुर रस ऊखो ॥२॥

अब का करूँ समुझि नहिं आवत, भयो जरठ तनु सूखो ।
स्याम-सुधाकों तरसत है मन, मिलत न कोउ रस-रूखो[3] ॥३॥

आस-पास की आस छाँड़ि अब आयो सरन समूखो ।
कृपा होय तो कहा न पाऊँ, कटै विषय-विष-दूखो ॥४॥

---

१. मोल करूँ । २. मुख्य । ३. रसका रूख या वृक्ष ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(१०१)

राग ललित, तीन ताल ४-१२-१९७२

स्याम ! मैं कैसे तुमहिं बुलाऊँ ?
महामहिम हो रसिक सिरोमनि, प्यारे ! कैसे तुव ढिग आऊँ ॥
दीन-हीन, अकुलीन, छीन हौं, कैसे यह मुख मलिन दिखाऊँ।
भाव-भगति, सुभ-सुमति न ऐसी, जासों प्रीतम तुमहिं सुहाऊँ ॥१॥
किन्तु कहा हौं करहुँ प्रानधन! तुम बिनु बहुत-बहुत अकुलाऊँ।
मनमें उठत बेकली ऐसी, धरनि धसूँ कि अकास उड़ाऊँ ॥२॥
बल-बुधि सभी हारि हौं बैठ्यो, कैसे हूँ कोउ प्रगति[1] न पाऊँ।
पचि-पचि मर्यो न बढ़्यो एक पग,
ज्यों-त्यों करि यह वयस[2] बिताऊँ ॥३॥
अब तो आस कृपाकी ही है, सो तुव द्वार छाँड़ि कित जाऊँ।
सदा-सदा हौं दास तिहारो, तुम ही सों यह आस लगाऊँ ॥४॥
अपनो जानि नेंक अपनावहु, स्नेह सिन्धु! इक बिन्दु हु पाऊँ—
तो निज भाग्य सराहि अहर्निसि जीवनभर तुव गुनगन गाऊँ ॥५॥

(१०२)

राग विहाग, तीन ताल २४-१२-१९७२

कान्ह ! का ऐसे ही वय जइ है ?
यह हतभाग्य जीव का नटवर ! कबहुँ न दरसन पइ है ॥
'जहाँ चाह तहँ राह' कहहिं सब, सो का चाह न भइ है ?
का तब ही यह चाह होयगी जब तन प्रान न रहि है ॥१॥

---

१. उन्नति। २. आयु।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ऐसी का हठ पकरी प्यारे ! अब बहु बार[1] भई है।
अन्तकाल नियरायो मोहन ! वयस बुढ़ाइ गई है ॥२॥
जो ऐसे ही जीवन बीत्यो तो मेरो का जइ है।
विरद तिहारो ही कछु घटि है, प्रीति-प्रतीति गँवइ है। ३॥
अब हू कृपा करहु मनमोहन ! नतरु[2] लोक यहि कहि है—
एक दीन जीवनभर भटक्यौ, तो हू कृपा न भइ है ॥४॥

(१०३)

राग विहाग, तीन ताल १६-४-१९७३

स्याम ! मैं कैसे करि सचु पाऊँ।
करि-करि थक्यौ उपाय अनेकन,
तदपि न प्रीति-रीति कछु पाऊँ ॥
सूनो-सूनो-सो लागत सब,
हरि-रसकों पल-पल अकुलाऊँ।
छई निरासा-निसा हिये में,
कैसे प्रीति-प्रभा प्रगटाऊँ ॥१॥
कहा करों कछु समुझि न आवै,
काकों अपनी व्यथा बताऊँ।
ऐसो को समरथ या जगमें,
जासों प्रीतमको पथ पाऊँ ॥२॥
बीती वयस न भयो काज कछु,
पुनि-पुनि मन मसोसि रह जाऊँ।
सुनी न टेर स्याम ! तुम मेरी,
का मुख लै अब तुमहिं बुलाऊँ ॥३॥

---
१. देरी। २. नहीं तो।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY
No. ....

हो सर्वज्ञ समर्थ कृपामय,
फिर काहे मैं यों बिलखाऊँ।
जानत हो सब कछु तुम जीकी,
फिर कहि-कहि का तुर्माहि बताऊँ ॥४॥

बहुत भई, करुनामय ! अब मैं
कबलौं करुन-कथा निज गाऊँ।
अपनेकों अपनावत हो
फिर मैं ही क्यों निरास ह्वै जाऊँ ॥५॥

(१०४)

राग केदार, तीन ताल २६-४-१९७२

प्यारे ! और न अधिक सताओ।
बहुत भई अब सहि न जात है, कैसे हुँ तो अपनाओ ॥
हूँ अकुलीन, मलीन, दीन, पै तुम बिन कौन हमारो।
जाके जाय पायँ अब पकरूँ, को अस हितू-बताओ ॥१॥

अपनो बल सबही हौं हारयो, करि-करि कछू न पायो।
कहँ लगि सहों स्याम! यह साँसति[1], पीड़ित प्रान बचाओ ॥२॥

बहुत दियौ, पै हियो न मानत, तुम बिनु कछु न सुहावै।
सब कछु लेहु, न देहु और कछु, केवल दरस दिखाओ ॥३॥

दरसनको प्यासे ये लोचन, ललकि-ललकि दुख पावैं।
सरस सुधामयि झाँकीसों अब इनकी प्यास बुझाओ ॥४॥

तन मनकी सब ही तुम जानहु, कहि-कहि कहा जनाऊँ।
तुम बिनु और कबहुँ कछु चाहों तो तुम कबहुँ न आओ ॥५॥

---

१. कष्ट।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(१०५)

राग दरबारी, तीन ताल ३०-४-१९७३

स्याम ! मोहिं अपनो ही करि मानो ।
तुमहिं छाँड़ि मेरे मनमोहन ! मोहिं न कोउ ठिकानो ।।
सदा-सदासों साध यही उर, और न कछु मैं जानों ।
'मेरे तुम मैं स्याम ! तिहारो' मैं जानों तुम मानो ।।१।।
मैं तो एक अकल[1] कल[2] प्यारे ! कछू न जानों मानों ।
ज्यों चाहो, त्यों मोहिं चलाओ, राखो चाहे भानों[3] ।।२।।
लेनो-देनो है न कहूँ कछु, जीवन-मरन न जानों ।
खेल-खिलौना हूँ तव प्यारे ! करो खेल मन-मानो ।।३।।
रही न और कोउ रुचि मनमें, यही एक मति ठानों —
'तव पद-रति में ही मम मति हो, और कुमति सब मानों' ।।४।।
तुम्हरो ह्वै निरभय पद पायौ, पायौ अमर ठिकानो ।
रह्यो न निज-पर को कोउ अन्तर, भेद-भाव सब भानो ।।५।।

(१०६)

राग विहाग, एक ताल ३०-४-१९७३

प्यारे क्यों निठुरई धरी ?
दीन-हीन इक द्वारे आयो, तासु न आस फरी ।।
सबहि कहहिं, तुम दानि-सिरोमनि, क्यों कृपनई करी ।
कृपासिन्धु तुम, बिन्दु चहत वह, सोउ न साध सरी ।।१।।

---

१. कलाहीन, शक्तिशून्य । २. यन्त्र । ३. नष्ट करो ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रिधि, सिधि, भुक्ति-मुक्ति नहिं चाहत, चाहत रति तुम्हरी।
तो हूँ ताकी आस न पूजो, ऐसी कहा करी ॥२॥

तुम बिनु ताहि न चैन रैन-दिन, तरफत घरी-घरी।
ताकी[1] चरन-सरन ताहीसों, ताकी[2] मति न फरी ॥३॥

अब करुना करि नैंकु निहारहु, वारहु[3] विपति परी।
चरन-सरन दै पोसहु प्यारे! बनै बात बिगरी ॥४॥

(१०७)

राग बागेश्री, ताल दादरा ६-५-१९७३

स्याम! यह वयस वृथा जनि जावै।
कहा करों नहिं होत हियो थिर,
छिन-पलहूँ चित चैन न पावै॥
तरसत-तरसत वयस सिरानी,
तुम बिनु जदपि न कछू सुहावै—
तदपि दसा कछु समुझि न आवत,
तुव छवि-झलक न पलकहुँ आवै ॥१॥

रही सदासों साध यही उर—
'जीवनमें हरि-रस सरसावै'।
धन-जन, बल-बैभव न चहौं कछु,
तदपि न मनकी लगन पुरावै[4] ॥२॥

तुम्हरो ह्वै भटकन ही भोगी,
अटपटि गति यह समुझि न आवै।
कहि-कहि थक्यो न बात बनी कछु,
तुमहिं स्याम! यह कैसे भावै ॥३॥

१. तकी, देखी। २. उसकी। ३. दूर करो। ४. पूरी होती।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अब का कहौं, सब हि तुम जानहु,
करहु वही जो तुमहिं सुहावै।
द्रवहु भले मत द्रवहु दयानिधि,
तुमहिं छाँड़ि यह अनत[1] न जावै ॥४॥

(१०८)

राग देश, तीन ताल ६-५-१९७३

स्याम ! तुम रखहु विरदकी लाज।
मैं तो जनम-जनम कहि हार्‌यौ, कहा जनाऊँ आज॥
मेरी एक टेक मनमोहन ! और न दूसर काज—
'जगै तिहारी प्रीति हिये में, चहौं न साज-समाज' ॥१॥
जदपि न कोउ अधिकार आपुनो, किये अनेक अकाज।
तदपि हिये की हिलग[2] न दूजो, कहा करों महाराज ! ॥२॥
मैं तो पचि-पचि थक्यौ दयामय!बन्यो नाहि कोउ काज।
चरन-सरन अब गही तिहारी, राखहु जनकी लाज ॥३॥

(१०९)

राग खम्माच, ताल दादरा ११-५-१९७३

ऐसे कैसे निबहै स्याम !
तुमहिं न छूट बात सुनिवेकी,
यहाँ होत है काम-तमाम॥
बहु विधि कही व्यथा या मनकी,
तनकी तपनहु कही महान।
कहि-कहि थकी न गई दई !
यह बिरह-व्यथा की विपति-वितान[3] ॥१॥

१. अन्यत्र, दूसरी जगह। २. चाह। ३. विपत्तिका विस्तार।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बार-बार उर उठत हूक-सी,
लगी लूक-सी चहुँ दिसि स्याम !
एकहु वार न मिल्यो चैन चित,
कब लौं बिलखत रहूँ निकाम[1] ॥२॥

भई निरास न आस मिलन की,
विरह-व्यथा सों भई छुत-छाम[2] ।
दरसन कों तरसें नित नयना,
निसि नहिं नींद न दिन विसराम ॥३॥

लागी लगन न हटन चहत है,
जदपि मिलन में विघन महान ।
भले तपनसों होय तन-निधन,
तदपि मनहिं कोउ लगन न आन[3] ॥४॥

आओ, आओ, प्रान पियारे !
प्रीति-पियासे तन मन प्रान ।
निसि-दिन ललकि-ललकि पथ पेखहिं,
करहु इनहिं निज दरसन-दान ॥५॥

(११०)

राग यमन, तीन ताल १-६-१९७३

स्याम ! मैं काकों व्यथा सुनाऊँ ?
सर्वग्यहुँ जो सुने न मेरी, तो काहू सों कहि का पाऊँ ॥
जानत हो जन-जनके मनकी, फिर मैं का अपनो दुख गाऊँ ।
तुमहिं छाँड़ि जो चहूँ और कछु तो का मुख लै सम्मुख आऊँ ॥१॥

---

१. विना काम, निष्प्रयोजन । २. क्षीण, हीन । ३. अन्य ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जनम-जनमकी साध यही है, तुव पद-प्रीति-पियूस अघाऊँ।
और न दीखत चाह कतहुँ कोउ, जो चाहूँ तो कबहुँ न पाऊँ ॥२॥

मोकों आन[1] आपुनी ही हरि! तुमहिं त्यागि मैं अनत न जाऊँ।
तुमसों मिले दैन्य-दुख हूँ तो अति उमाहसों सीस चढ़ाऊँ ॥३॥

कहा होयगो रिधि-सिधि हूँ लै, जो नहिं तुमसों नेह दृढ़ाऊँ।
तुव पद-नेह-मेह में प्रियतम! देह-गेह की खेह[2] बहाऊँ ॥४॥

जानत हो सब ही अन्तर की, तब हुँ निरन्तर क्यों विलखाऊँ।
जो विलखन ही है तुमकों प्रिय, तो विलखत ही वयस बिताऊँ ॥५॥

(१११)

राग हमीर, तीन ताल ८-६-१९७३

प्यारे! विलपत वयस गई।
सधो न साध कोउ मो मनकी, जो तुम ठई भई ॥
मो मनकी न भई मनमोहन! सो तो भली भई।
पै तरसत ही रहै कोउ जन—यह तुम कहा ठई ॥१॥

तरसत हियो दरस कों प्यारे! तरस न अब हुँ गई।
बरस-बरस बीते तरसत ही, तरस न सरस भई ॥२॥

तुमसों स्याम! तुमहि कों चहिवो—का यह भूल भई!
जो यह भूल कहा अब करिये? अब लों यह न गई ॥३॥

प्रीति पियास न जगी प्रानधन! ढुलमुल दसा भई।
कैसे करूँ वृथा वय बीतत, होत न आस नई ॥४॥

जो कछु भई कृपा ही मानी, पै न गई ढिठई।
चितकों चैन होय तब ही जब साध होय पुरई ॥५॥

---

१. शपथ। २. धूलि।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हार-जीत ॥११२॥

राग रागेश्री, तीन ताल १८-५-१९७३

हरिजू ! मैं हारचौ तुम जीते।
भये काम जो चाहे तुमने, भये न मो मन-चीते ॥
मैं अजान चाही मन-मानी, रही न तुमसों छानी।
तुमने निज जन जानि दयामय ! करी आन विपती ते ॥१॥
रसके लोभी मन-मधुकरने विष हूँ रस करि मान्यो।
तुमने ताहि वारि वा विष सों कीन्हीं तृप्ति अमी[1] ते ॥२॥
मैं अचेत मोह्यौ मृगजलसों ताही की दिसि धायो।
तुमनें चेत कराय करायी प्रीति सुमति-सुरसरिते ॥३॥
कमल कोसमें बँधे मधुपसम विषय-बन्ध में मोह्यौ।
बनि विवेक-दिनकर-कर[2] तुमने मोच्यौ ता दुर्गतिते ॥४॥
मेरी कुमति सुमति करि तुमने पुनि-पुनि मोहिं बचायो।
सदा-सदा तुमने पति राखी, किये विपति-घट रीते ॥५॥
हरा-हरा मेरो हित कीन्हों, मोहिं न भेद जतायो।
अपने कों अपनावन आये, हारे हूँ हम जीते ॥६॥

प्रीति-प्रार्थना ॥११३॥

राग माँड़, ताल कहरवा २६-५-१९७३

काहे निठुर भये मनमोहन! अब यह विपति न जात सही।
तुम बिन व्याकुल प्रान प्रानधन! अब न सहनकी सक्ति रही ॥१॥

---

१. अमृत। २. किरण।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कब लगि तरसाओगे प्रीतम ! तरसत ही सब वयस गई ।
हा हतभाग्य! न बात बनी कछु, मनकी साध न सही भई ॥२॥

अपनो ही है दोस दयानिधि ! साँची लगन न हिये लगी ।
असन-वसनकी रहे न सुधि वह प्यास न प्यारे!कबहुँ जगी ॥३॥

प्यारे ! प्रीति-पिपासा दो, अब चैन न मोहिं सुहावै है ।
यह सूनी-सूनी दसा दयानिधि!निसि-दिन मोहिं सतावै है ॥४॥

ले लो, ले लो सब कुछ प्यारे ! प्यास-प्यास ही रह जावै ।
केवल तुम या प्यास तिहारी, और न कछु मोकों भावै ॥५॥

प्यास तिहारी प्यारे मोहन ! तुम हूँ ते है बढ़ी-चढ़ी ।
प्यास हि में है वास प्रीति को, प्रीतम हूँ ते प्रीति बड़ी ॥६॥

बढ़ै तिहारी प्यास निरन्तर, आस-त्रास नहिं पास रहें ।
प्यासहि में हो वास तिहारो, प्यास रहे नहिं त्रास रहै ॥७॥

त्रासहीन यह प्यास प्रानधन ! मेरे जीवन की हो प्रान ।
पी-पीके भा प्रीति-सुधा तव करतो रहूँ निरन्तर पान ॥८॥

(११४)

राग बहार, तीन ताल ७-११-१९७२

प्यारे ! तुमसों नेह न लाग्यौ ।
ऐसे ही जीवन सब बीत्यौ, रह्यौ विषय-रस रात्यौ[१] ॥
धन-जन-भवन—यही निज माने, रह्यौ मोह-मद-मात्यौ ।
लोक-वेद ही में रुचि राखी, प्रभु-पद-प्रीति न पाग्यौ ॥१॥

मान-बड़ाईकों नित तरस्यौ, सन्त-सरन नहिं लाग्यौ ।
धरम-करम के भ्रम बहु भटक्यौ, हरि-रसकबहुँ न चाख्यौ ॥२॥

१. रत ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आय परी अब प्रानन पै हरि ! जर्जर तनु यह थाक्यौ ।
मनकों बान परी विषयनकी, संयम कबहुँ न साध्यौ ॥३॥
सब ही विधि असहाय अकिंचन, तदपि विरद तव ताक्यौ ।
सब तजि चरन-सरन तकि आयौ, निजबल कोउ न राख्यौ ॥४॥
सरनागतवत्सल हो प्यारे ! विरद सदासों राख्यौ ।
तेहि नाते अब द्रवहु दयानिधि ! वेद भेद सब भाख्यौ ॥५॥

(११५)

राग वसन्त, तीन ताल १७-१२-१९७२

मोहिं हरि ! सूझत और न ठौर ।
तुमहिं छाँड़ि जाऊँ कित प्यारे ! तुम लगि मेरी दौर ॥
सबकों परो स्याम ! अपनी ही, तुम उदार-सिरमौर ।
जितनो दियो सबहि कों तुमने ताको ओर न छोर ॥१॥
सबमें तुम सबके तुम प्रियतम, सब तुम ही चितचोर ।
तुमहिं छाँड़ि मैं लखहुँ कौन कों, तुम बिन कोउ न और ॥२॥
है सब तुम्हरो, समुझहिं अपनो—यही भूल अति घोर ।
कृपा-किरन जो मिलहि रावरी, कन-कन दरसन तोर ॥३॥

(११६)

राग पूरिया, ताल कहरवा ६-१-१९७३

हरि ! मोहिं तुमहीसों अब काम ।
छूटे सब सम्बन्ध जगत् के, पायो अति विसराम ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हो बिसराम, तदपि मनमोहन ! जो तुव प्रीति न पायी—
तो का भयो लाभ जीवनको, व्यर्थ हि वयस बितायी ।।१।।

यद्यपि मिल्यौ सरीर सुस्थ, पै रह्यौ दीन-कंगाल ।
प्रीति बिना बिसराम हुँ पाये, यही जीवको हाल ।।२।।

सकल आस-विस्वास त्यागि अब प्रभु-पद-सरन लई है ।
करुनामयकी कृपा-कोर बिनु का कों प्रीति भई है ।।३।।

दीन जानि अब पोसहु प्रीतम ! अपने कहँ अपनावहु ।
दयासिन्धु ! बस बिन्दुमात्र दै नीरस उर सरसावहु ।।४।।

(११७)

राग दरबारी,ताल धमार १०-३-१९७३

हमें तुम प्रीति-रीति समझा दो ।
भूले हैं पथभ्रष्ट नाथ ! हम, कोई सीधी डगर दिखा दो ।।
जैसे भी हैं सदा तुम्हारे, और न कोई कहीं हमारा ।
तुम ही प्यारे! चरण-शरण दे, हम क्या करें-हमें बतला दो ।।१।।

भटक-भटक हम थके दयानिधि! कहीं न कोई मिला ठिकाना ।
अब तो द्वार तुम्हारे आये, अब यह भटकन श्याम! मिटा दो ।।२।।

दुनिया के सुख-दुख बहु झेले, मान और अपमान उठाया ।
रही न अब कुछ चाह जगतकी, प्रीतम! अपना पंथ दिखा दो ।।३।।

तुमहीमें अब रहे सदा मन, तनसे जन-जन की सेवा हो ।
प्राणोंके धन रहो एक तुम—ऐसी प्यारे! लगन लगा दो ।।४।।

कहूँ कहाँ तक साध हृदयकी, कभी न कोई मूल्य चुकाया ।
बिना मूल्य ही अपनाकर तुम, अपनेपन का नियम निभा दो ।।५।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(११८)

राग यमन, तीन ताल २६-५-१९७३

प्रानधन ! अब न अधिक भटकाओ ।
जनम-जनमकी चेरि तिहारी, अब तो चरन लगाओ ॥
कैसे करूँ, न परत पलहुँ कल, अधिक न स्याम ! सताओ ।
भटकि-भटकि हौं तो हरि ! हारी, कुछ तो दया दिखाओ ॥१॥
तुम बिनु प्रान प्रानधन ! व्याकुल, धीरज इनहिं बँधाओ ।
चलन चहत ये तनु तजि प्यारे ! दरस-सुधा सरसाओ ॥२॥
अपनी-सी हौं करि-करि हारी, तुम हूँ हाथ बढ़ाओ ।
चरन-सरन आई यह चेरी, अपनी करि अपनाओ ॥३॥
बहुत भई यह हेरा-फेरी, देरी अब न लगाओ ।
स्नेह-सुधा की प्यासी दासी, अब तो नेह निभाओ ॥४॥

प्रतीक्षा ॥११९॥

राग केदार, तीन ताल ७-५-१९७३

प्रानधन ! कब लौं पन्थ निहारूँ ?
भई निरास न आस रही अब, कैसे धीरज धारूँ ॥
कबको ठाड़ो द्वार तिहारे कबकी तुमहिं पुकारूँ ।
अब लौं टेर न सुनी साँवरे ! कैसे तुमहिं बिसारूँ ॥१॥
जनम-जनम हों साध सँजोई, नैननि तुमहिं निहारूँ ।
पै तुम तो हठ ही करि बैठे, कैसे जीवन धारूँ ॥२॥
है न हिये अभिलास और कोउ, सुगति-कुगति न विचारूँ ।
मनकी ललक रही मनहीमें, कैसे यह मन मारूँ ॥३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

'दया करहु अब दीन-दयानिधि!' पुनि-पुनि यही पुकारूँ।
अपने हूँ यदि सुनें न तो मैं कहाँ जाय झकमारूँ॥४॥

अपनी भूल ॥१२०॥

राग सारंग, तीन ताल १०-३-१९७३

स्याम! मैं क्यों न तरसि रह जाऊँ।
देखि-देखि यह दसा आपुनी, कैसे प्यारे! सम्मुख आऊँ॥
स्वारथ ही परमारथ मानूँ, कबहुँ काहु के काम न आऊँ।
तनकी सुविधा नैंक न त्यागूँ, तपको तेज कहाँ सों पाऊँ॥१॥
तरसत हुँ, पै तरस न तुम्हरी, सुखकी महिमा ही मन लाऊँ।
दुखमें भी जो तुमहिं न देखूँ तो तुमसों का नेह निभाऊँ॥२॥
तन मन धन जन ही निज मानूँ. तुमसों नातो कोउ न लाऊँ।
नाते बिना नेह ही कैसो, भले भजनको स्वाँग दिखाऊँ॥३॥
अपने मनको ही नित मानूँ, तुमहूँ सों मनकी मनवाऊँ।
भयो न जन्त्रनाथ! तुव करको, करम-मुकुति[1] फिर कैसे पाऊँ॥४॥
अपनी सब करतूत अटपटी, पै तुव करुना कहँ लगि गाऊँ।
दई ललक कछु भजनभावकी-यही परम सौभाग्य मनाऊँ॥५॥

---

१. कर्म बन्धनसे छुटकारा।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(३)
विरह-माधुरी

जीवन कैसे हो ॥१२१॥

राग वृन्दाबनी सारंग, कहरवा २९-१०-१९७२

कैसे हो जीवन-जीवन-धन ?
मनमोहन व्रजराजदुलारे ! तुम बिनु भार भयौ यह जीवन ॥
मैं समुझाय थक्यो नंदनन्दन! तदपि न धैर्य होत एकहुँ छिन।
रहत चित्त बेचैन रैन-दिन, रहहिं विकल प्रतिपल ये तन-मन ॥१॥
कासों कहौं पीर या मनकी, दीखत कोउ न जगमें निजजन।
तुव करुनाकी आस लगी है, आय वेगि सुधि लो मनमोहन ॥२॥
जुगवत-जुगवत जीवन बीत्यौ, अब लौं आस भई नहिं पूरन।
कबलगि तरसाओगे प्यारे! ललकि-२ मोचहिं[१] जल लोचन ॥३॥
कबलौं सहों? सही न जात अब, बिरहानल दहकत उर छिन-छिन।
कृपासुधासों सींचि साँवरे ! वेगहिं लेहु बचाय प्रानधन ! ॥४॥

अन्तर्व्यथा ॥१२२॥

राग मल्हार, तीनताल ४-११-१९७२

सखि ! हौं कासों व्यथा कहौं ?
प्रियतम बिना भार यह जीवन, साँसति[२] सतत सहौं ॥
मनमें रहत उचाट सदा ही, कासों कहा कहौं।
सूनों-सो सब अग-जग लागत, मनहिं मसोसि रहौं ॥१॥

---
१. छोड़ते हैं। २. कष्ट।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कलपत-बिलपत दिवस बिताऊँ, निसा न नींद लहौं।
नैन रहहिं बेचैन सदा ही, कैसे विरह सहौं ॥२॥
उरमें लगी चटपटी आली! पल-पल विकल रहौं।
जुगवत[1] पन्थ वयस सब बीती कबलौं तरस सहौं ॥३॥
ऐसो को उदार समरथ जग, जीकी जाहि कहौं।
स्याम मिलावै हिय हुलसावै, रिनियाँ[2] सदा रहौं ॥४॥

(१२३)

राग भैरवी, ताल कहरवा ७-४-१९७३

स्याम बिनु बैरिन वयस[3] भई।
कटत न काहू विधि काटे सखि! सालत[4] नित्य नई ॥
रह-रह विरहानल उर दहकत, दाहत रहत दई[5]।
पिया बिना कैसे दिन काटूँ, निसि हूँ नींद गई ॥१॥
असन-बसन[6] न सुहात स्याम बिनु, सम्पति विपति भई।
पल-पल कलप-कलप सम बीतत, कलपत[7] वयस गई ॥२॥
अब का करूँ कहूँ कासों सखि! मन जो व्यथा बई।
नई-नई नित करीं कलपना, सो अब सबैं ढई ॥३॥
जो बीती सो बीती सजनी! अपनी भूल भई।
उनसों नेह लगा यह हौं ही विषकी बेलि वई ॥४॥
अब याको प्रतिकार न सूझत, तरसत वयस गई।
जो वे ही कछु करें कृपा तो उलहै आस नई ॥५॥

---

१. देखते हुए। २. ऋणी, कर्ज़मन्द। ३. आयु। ४. कष्ट देती है। ५. दैव। ६. भोजन-वस्त्र। ७. कल्पना करते हुए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(१२४)

राग आसावरी, तीन ताल २४-४-१९७३

मनकी कसक न कबहूँ जाय।
कासों कहौं बात या मनकी, लागी बुरी बलाय ॥
ऐसी ठौर फँस्यौ यह पामर, जहाँ न मति-गति जाय।
कैसे जाय टेर हूँ तहँ लगि, टेरत जनम सिराय ॥१॥
हा-हा-सी नित होत हिये में, कैसे हुँ चैन न पाय।
मनकी पीर मनहिकों सालत, सुनत न मन्मथ-राय[1] ॥२॥
कहाकहौंकछु समुझि न पावहुँ, ऐसे हि जनम सिराय। ३॥
जबलौं कृपा न करहि कृपानिधि कैसे कसक हिराय[2]।

(१२५)

राग आसावरी, ताल दादरा २७-४-१९७३

मनकी पीर कौनसों कहिये ?
प्रीतम बिनु ऐसो को अपुनो, जाकों जीकी व्यथा बतइये ॥
है अनुराग-आग अति अद्भुत, या सुहागकों सदा सरहिये।
जारि-जारि सब पाप-ताप यों अति पावन साधन-तनु पइये ॥१॥
प्रीतमकीरुचिही अपनी रुचि, ज्यों राखें त्यों ही नित रहिये।
ताकीसुरति[3] सुधासों सिंचि-सिंचि विरह-वह्नि[4] हूँमेंसचुपइये ॥२॥
बड़ो भाग्य यह व्यथा दई तिन, हृदय-हार ज्यों जुगवत रहिये।
प्रीतम ही प्रीतम रहि हैं जो याहि जुगतिसों हिय कों धरिये ॥३॥

---

१. कामदेव के स्वामी श्रीकृष्ण। २. शान्त हो, समाप्त हो।
३. स्मृति, याद। ४. अग्नि।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विरह-मिलनको भेद न रहि है, दोउनमें[1] प्रीतम ही पइये।
दोऊ रस, रस ही प्रीतम हैं, प्रीतम ही में रचि-पचि रहिये ॥४॥

कहा कहें यह बात अटपटी, बूझतहूँ बूझत नहिं पइये।
बूझ-अबूझ दोउन-सों न्यारी प्रीतम-प्रीतिमात्र ह्वै रहिये ॥५॥

(१२६)

राग मल्हार, तीन ताल २८-४-१९७३

स्याम ! मैं मन मसोसि रह जाऊँ।
कैसे करूँ न मानत यह मन, जदपि न जो चाहूँ करि पाऊँ ॥
मनकी लाग तुमहिसों प्यारे ! तुम बिनु कैसेहुँ चैन न पाऊँ।
पल-पल हुमकत[2] हियो दरसकों, कैसे याकी आस पुराऊँ ॥१॥
सुपनेहुँ में नहिं मिली झलक कोउ, कहा ध्यानकी बात बताऊँ।
बहुविधि अनुष्ठान करि हारचौ, निज बलको फल कोउ न पाऊँ ॥२॥
काहूँ में कोउ सार न दीखत, तुम बिनु कासों नेह लगाऊँ।
विषय-जाल विषमयी वनावलि, यामें भटकि-भटकि पछिताऊँ ॥३॥
भयौ अधीर न मिलत तीर कहुँ, कैसे मनकी पीर मिटाऊँ।
परचो-परचौ दुविधोदधिमें,[3] मैं केवल कृपा-कोर तुव ध्याऊँ ॥४॥
तुम ही कृपा करहु तो प्यारे! दरस-सुधासों जिया जुड़ाऊँ।
अपनो तो कोउ बल न रह्यौ अब, कृपा होय तो कहा न पाऊँ ॥५॥

---

१. विरह और मिलन दोनों अवस्थाओंमें। २. उमड़ना है।
३. दुविधारूपी समुद्र में।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(१२७)

राग झिंझोटी, तीन ताल २६-४-१९७३

मनकी मन ही माहिं रही ।
मनकी साध रही मनही में, बात न कछु निबही ॥
बीती वयस न काज भयौ कछु, अब नहिं आस रही ।
अन्तरकी जानतहो सब, फिर क्यों निठुरई गही ॥१॥
दरस-परसकी तरस रही, सो तरस न सरस भई ।
अब का करौं न समुझि परत कछु, ऐसेहि वयस गई ॥२॥
तरसहिं नैन न चैन रैन-दिन, पलक-ललक न गई ।
कुलबुलात कर पद-परसनकों, आस न सो पुरई[1] ॥३॥
सूनो-सूनो-सो सब लागत, उर कछु ओज[2] नहीं ।
छक्यो न हियो निरखि तव छवि-रवि, परी न प्रीति सही[3] ॥४॥
अपनो बल वरु सब ही थाक्यो, पै उर आस यही—
कृपा-कोर जो होय रावरी, सुधरै रही-सही[4] ॥५॥

(१२८)

राग भैरवी, ताल कहरवा १३-६-१९७३

स्याम मोहिं ! जीकी जरनि जरावै ।
मिल्यौ न चैन कबहुँ मनमोहन ! कैसे करि यह मन सचु पावै ॥
भटकि-भटकि हार्‌यौ मैं प्रीतम ! कोउ न मोहिं कबहुँ पतियावै[5] ।
अब सबसों निरास ह्वै आयो, चरन-सरनकों मन अकुलावै ॥१॥

---

१. पुरी हुई । २. उत्साह । ३. स्वीकृति । ४. बची-खुची ।
५. विश्वास करे ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लोचन नित ललात दरसनकों, पद-परसनकों कर तरसावैं।
प्रीति-पियूष-पानके लोभी उरकों रसकी तरस सतावैं ॥२॥
साध-हि[1]-साध लखात हियेमें, साधनको कोउ भाव न आवै।
ऐसे साधनहीन दीनकों दीनबन्धु बिनु को अपनावै ॥३॥
जानत हो जियकी सब प्यारे! जानत हूँ क्यों दया न आवै।
जो कनमात्र दया हो प्रीतम! तो छिनमें यह जरनि बुतावै[2] ॥४॥

(१२९)

राग भैरव, तीन ताल १४-६-१९७३

जरनि यह कैसे जियकी जाय ?
प्रीतम विना न चैन रैन-दिन, विरह कलेजो खाय ॥
उरमें लागी रहत लूक[3];सी, भूखहुँ लई बिदाय।
नैननमें नहिं नींद, रैन सब तारे गिनत सिराय ॥१॥
कहा करूँ कल परत न पलहूँ, पलक कलपसम जाय।
और मन्त्र भूली सब सजनी! पल-पल निकसत 'हाय!' ॥२॥
अब कोउ और उपाय न सूझत, बूझहुँ गई बुझाय।
यह विरहानल बुझै तबहि जब प्रिय कर पकरहिं आय ॥३॥

विकलता ॥१३०॥

राग सारंग, ताल ध्रुपद १२-११-१९७२

अब मैं कैसे कहा करूँ ?
बनत न कछू बनाये प्यारे! जी ही माहिं जरूँ ॥
लोक-लाज कुल-कानि न मानूँ तो हूँ हिये डरूँ।
रह-रह पीर होत या मनमें, कैसे समन[4] करूँ ॥१॥

१. इच्छा। २. बुझे, शान्त हो। ३. आग। ४. शमन, शान्त।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लगी चटपटी पिया-मिलनको, मन ही मन पजरूँ[1]।
अन्तरजामी हूँ न सुनै तो का की आस करूँ ॥२॥

जो मिलवेकी साध न पूजै तो हूँ कहा करूँ।
तुम बिनु और न ठौर कोउ फिर इत-उत कहाँ फिरूँ ॥३॥

जो मिलिवो न रुचै तो प्रियतम ! हौं क्यों हठ पकरूँ।
जो कछु तुमहिं सुहाय साँवरे ! सो ही सही करूँ ॥४॥

(१३१)

राग भैरवी, ताल कहरवा २२-११-१९७२

यह तन तरसि-तरसि रह जइ है।
दरस-परस नहिं भयो स्यामको
तो मानव ह्वै का फल पइ है॥
सुख-दुख-भोग, मोह, मद, ममता,
खग-मृग-तनु पाये हूँ पइ है।
मानव-तनु तो सफल तबहि
जब प्रियतम-प्रेम-सुधारस रहि है ॥१॥

सब तजि स्याम-सरन हूँ ताकी,
तदपि कहा मति-गति-रति भइ है।
बौरी-सी भटकत इत-उत नित,
समुझत नहिं बहु विधि समुझइ है ॥२॥

---

१. जलूं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अपनो-सी हौं तो करि हारचौ,
प्रभु-पद-प्रीति-रीति कित पइ है।
हारे कों हरि ही अपनइ हैं–
यही आस अब जीवन रहि है ॥३॥

कलपत रहत सतत यह मनुआँ–
कैसे करि यह हरि रस पइ है।
प्रभु-प्रसाद बनि है सब बानिक[1],
नतरु हियो कलपत ही रहि है ॥४॥

(१३२)

राग अहीर-भैरव, तीन ताल १५-१२-१९७३

मोहिं सखि ! कैसे हुँ स्याम मिलाओ।
स्याम बिना दूभर[2] भयो जीवन, कैसे हुँ याहि बचाओ ॥
जीवे-मरिवे की न बात कछु, बात एक उर आँकी।
कहा होयगो मरिके हूँ जो मिली न हरि की झाँकी ॥१॥
जीते स्याम मरे हूँ स्याम हि, स्याम बिना गति नाहीं।
स्याम हि में समाहिं ये तन-मन—यही ललक मनमाहीं ॥२॥
कैसे करूँ, न चैन रैन-दिन, बात न और सुहावै।
पै वह निठुर नन्द को छैला सपने हुँ पास न आवै ॥३॥
कैसी अद्भुत है गति मनकी, कबहुँ न नैननि देखो।
वा मोहन सों मिलिवे को ही प्रति पल रहत परेखो[3] ॥४॥
मिलो, भलै मत मिलो, न मनकों और कछू कहुँ भावै।
जनम जनम वाही कों भजि हों, कबहुँ तो कंठ लगावै ॥५॥

---

१. बात। २. दुर्भर, कठिन। ३. खेद, पश्चात्ताप।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(१३३)

राग भैरवी, तीन ताल २६-१२-१९७२

स्याम बिनु कैसे जिऊँ री माई !
स्याम बिना भारी भयौ जीवन,
घर-बाहर मोंहि कछु न सुहाई॥
कलप-कलप[1] पल होत कलप[2] सम,
तलप[3] सरपसम अति दुखदाई।
करवट लेत रैन सब बीतत,
है न चैन उर नैंकहु माई! ॥१॥

कहा करूँ कित जाऊँ सखी री !
कैसे प्रीतम करहिं सुनाई।
विलप-विलप सब वयस बिताई,
मिली न कबहुँ स्यामकी झाईं[4] ॥२॥

प्रीति-प्रतीति[5] पुनीत न मनमें,
होती तब क्यों यह कठिनाई।
कैसे पाऊँ प्रीतम प्यारो,
सो मग मोंहि न परत लखाई ॥३॥

करुनानिधि सब कहहिं प्राननिधि!
सो करुना अब कत बिसराई।
कृपा-वारि सों सींचहु प्यारे !
नतरु भाव-तरु जाहि सुखाई ॥४॥

---

१. कल्पना कर-करके। २. कल्प, एक हजार चौकड़ी युगका समय।
३. शय्या, गद्दा। ४. परछाहीं, आभास। ५. विश्वास।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(१३४)

राग आसावरी, तीन ताल २९-१२-१९७२

स्याम ! मैं कैसे करि सचु पाऊँ ?
समुझि न परत दसा यह अपनी, कैसे तुमहिं बताऊँ ।।
जानत हो तुम तो सब जी की, नोकी बात बनाऊँ ।
देखनकी तो लगत साधुता, उरमें अति पछिताऊँ ।।१।।
बिना प्रीति यह जीवन फीको, नीको[1] जदपि कहाऊँ ।
देखत ही की नीति रीति है, सुख-सुविधा ही ध्याऊँ ।।२।।
जीवन सिगरो गयो सोचते, पन्थ न कछु चलि पाऊँ ।
तुम बिनु है बेचैन चित्त, पै तुम दिसि पग न बढ़ाऊँ ।।३।।
कैसे करूँ न वस कछु अपनो, हुमकि-हुमकि[2] रहि जाऊँ ।
जो करुना करि कर पकरो तो जनम-जनम गुन गाऊँ ।।४।।

(१३५)

राग भैरवी, ताल ठुमरी ३१-१२-१९७२

स्याम ! मैं तड़प-तड़प रहि जाऊँ ।
मनकी पीर मनहिमें मारूँ, का कों व्यथा सुनाऊँ ।।
तुम समरथ सर्वग्य सदय, मैं दीन-हीन कंगाल ।
तुम सों कहा छिपी है प्यारे ! कहि-कहि कहा बताऊँ ।।१।।
तुम तजि और न ठौर कहूँ कोउ, जहाँ हियो सचु[3] पावै ।
याहीसों सबकी आसा तजि, तुव पद-पंकज ध्याऊँ ।।२।।
बहुत भई अब सहि न जात है, प्राननाथ ! अपनावहु ।
छिन-पल हूँ न विलगता भासै-यही एक वर पाऊँ ।।३।।

१. अच्छा । २. बेचैन हो-होकर । ३. सुख, शान्ति ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(१३६)

राग भैरवी, कहरवा १-२-१९७३

नयना तरसत ही रह जइ हैं।
जान परत बिनु दरस किये ही पामर प्रान पलइ हैं॥
अधम-उधारन कहत वेद, यह भेद[1] कहा फल लइ है।
मोसो अधम न तरचौ नाथ ? तो कौन अधम सचु पइ है॥१॥
दीन अधम अति ही निरास ह्वै का की सरनै जइ हैं।
कुकवि कुचील[2] तुमहिं कों प्यारे! कहि कुवाक्य हरसइ हैं॥२॥
मेरो कहा बनै-बिगरैगो, कानि तुमहिं कों अइ है।
सरनागत हूँ रह्यौ तरसतो, तो सरनै को अइ है॥३॥
मारो-तारो करो कछु हि, यह जन्त्र कहा कछु कहि है।
जसे चाहे रखो स्याम! यह और न कहुँ अब जइ है॥४॥
है यह सदा-सदासों तुम्हरो, तुम्हरो ही ह्वै रहि है।
तुम ही सों नित रगर रही है, अब हूँ अनत न जइ है॥५॥

(१३७)

राग भैरवी, तीन ताल १२-१२-१९७२

कैसे करि यह मन समुझाऊँ।
रहत सदा बेचैन स्याम बिनु, कैसे करि हौं धीर धराऊँ॥
स्यामहि स्याम गुनत यह निसि-दिन, गुन-औगुन पै दृष्टि न लाऊँ।
जद्यपि इत-उत हूँ भटकत है, तदपि तहाँ कछु सार न पाऊँ॥१॥
बीती वयस द्वार बहु झाँके, काय-क्लेस हूँ कछुक उठाऊँ।
तदपि न चैन मिल्यौ अब हूँ लौं, स्रम ही स्रम सबको फल पाऊँ॥२॥

१. रहस्य। २. निन्दक।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कहा करों कछु पन्थ न सूझत, जित-तित पूछत हूँ सकुचाऊँ।
ऐसो वैद्य मिल्यौ न कहूँ कोउ, जाकों अपनी पीर सुनाऊँ ॥३॥
सन्तन हूँ बहु करुना कीन्हीं, कैसे उनके गुन बिसराऊँ।
तदपि न प्रीति रीति कछु आई, कैसे प्रीतम! तुमहिं रिझाऊँ ॥४॥
अब तो चरन-सरन हूँ प्यारे! तुमहिं सुहाऊँ वा न सुहाऊँ।
करुना-कोर करहु कछु जासों अटकन[१]-भटकन सभी मिटाऊँ ॥५॥

(१३८)

राग भैरवी, कहरवा २४-१२-१९७२

आली! इन नैननि ललक लगी।
पियन चहहिं प्रति पल माधव-मधु, जासों हों जु ठगी ॥
अरबराइ[२] नित पन्थ निहारहिं, डोलूँ अकी-जकी।
कैसेहूँ वह छवि छकि पाऊँ मन्मथ-मन्मथ[३] की ॥१॥
जब सों सुनी स्याम की सुखमा, उर बिच आय अड़ी।
कैसे हूँ निकसत न पलहुँ कों, मानहुँ लगी लड़ी ॥२॥
मनकों टेव परी कछु ऐसी, हुमकत घड़ी-घड़ी।
चितपै चढ़ी रहत वह मूरति, विलपूँ पड़ी-पड़ी ॥३॥
प्रानन आय बनी अब आली! बात न कछू बनी।
प्यासे ही मरि हैं ये लोचन, बींधे नयन-अनी[४] ॥४॥

---

१. अटकना। २. व्याकुल या उतावले होकर। ३. मन को मथित करने वाला जो कामदेव उसके मनको मथित करने वाले श्रीकृष्ण। ४. नोंक।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(१३९)

राग अहीर भैरवी, तीन ताल २५-११-१९७२

स्याम ! मैं तुम कहँ कहा सुनाऊँ।
जानत हो सब कछु तुम जियकी, कहि-कहि कहा जनाऊँ॥
स्वयं बूझ[1] हो, बूझहु सब कछु, तुमकों कहा बुझाऊँ।
तुम बिनु भार भयो यह जीवन, कैसे करि सचु पाऊँ॥१॥
रही न आस कोउ निज बलकी, पचि-पचि ही रह जाऊँ।
केवल स्रम ही हाथ लगत है, प्रीति न नैंकहु पाऊँ॥२॥
चैन न है दिन-रैन नैंक हूँ, पन्थ न कछु बढ़ पाऊँ।
अब तो आस तिहारी ही है, कैसे तुमहिं मनाऊँ॥३॥
गुन, अधिकार, योग्यता, गौरव, कहो कहाँ सों लाऊँ।
सब कछु तो है वस्तु तिहारी, मिलै तो भेंट चढ़ाऊँ॥४॥
जैसो हूँ तेरो हूँ प्यारे ! भाऊँ वा नहिं भाऊँ।
जैसे चाहो रखो साँवरे ! यही सोच सचु पाऊँ॥५॥

(१४०)

राग ललित, तीन ताल १७-४-१९७३

मेरो मन कैसेहुँ चैन न पावै।
ललक लगी तुव दरस-परसकी, ताहीकों अकुलावै॥
है न चैन दिन-रैन दयानिधि ! कैसे करि सचु पावै।
दीखत कोउ न पन्थ मिलिवेको, बैरी विरह सतावै॥१॥

---

१. समझ, चेतन।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कहा कहूँ है बात अटपटी, कहते हुँ कहत न आवै ।
प्रीति-पन्थपै चलन चहौं, पै प्रीतिकी रीति न आवै ॥२॥

मनसों विदा भयो सब सुख-दुख, भुक्ति मुक्ति न सुहावै ।
हाय दई ! यह भई कहा, जो चहौं सो निकट न आवै ॥३॥

अब का कहौं, सहौं यह सब कछु जो कछु दैव सहावै ।
अपनी साध सधै तब ही जब प्रीतम ही अपनावै ॥४॥

(१४१)

राग खम्माच, तीन ताल २०-४-१९७३

मैं तो बींधी स्याम-नयन-सर, कैसे जिऊँरी बीर !
स्याम बिना नहिं चैन रैन-दिन, कैसे धारूँ धीर ॥
स्याम-पिया मो मन हर्‌यौ, रही न बस की बात ।
मो मन-गगन छई रहत, स्याम-घटा दिन-रात ॥
स्याम-घटा दिन-रात, बढ़त उर विरह-व्रातकी पीर ॥१॥
दामिनि-सी दमकत हिये, स्याम-सुरति अनिवार[1] ।
उथल-पुथल मो मन करत, बीर ! मारकी[2] मार ॥
बीर ! मारकी मार मोहिं पल-पलमें करत अधीर ॥२॥
नैननमें पावस लगी, झरत नीर दिन-रैन ।
तनमें लागी तपन-सी, चित्त रहत बेचैन ॥
चित्त रहत बेचैन मनहुँ मन लग्यौ मदनको[2] तीर ॥३॥
कहा कहूँ, कासों कहूँ, सजनी ! जियकी बात ।
लगी ईति[3] यह प्रीतिको, अनुदिन बाढ़त जात ॥
अनुदिन बाढ़त जात, जाय यह कैसे पीर गभीर ॥४॥

१. बिना रुके, निरन्तर । २. कामदेव, या प्रेम । ३ व्याधि, बीमारी ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्याम हि सों लागी व्यथा, स्याम वैद्य अनपाय[1]।
स्याम-अगदसों जायगी, ज्यों विषसों विष जाय॥
ज्यों बिष सोंविष जाय, मिलेंजो स्यामजाय यह पीर ।।५।।

(१४२)

राग टोड़ी, कहरवा २१-४-१९७३

ऐसे हि तरसि-तरसि दिन जइ हैं ?
कबहुँ कि निरखि स्याम-मधु-मूरति आकुल प्रान जुड़इ हैं ॥
तरसत-तरसत वयस सिरानी, कबहुँ न नयन सिराने।
कहा करूँ कब लौं पथ जोहूँ, जोहत प्रान पलइ हैं ।।१।।

मनकी साध रही मन ही में, अब कोउ आस न भासै।
आसा करि तुमसों मनमोहन ! कहा कबहुँ कोउ पइ है ।।२।।

हो निरमोही सदा-सदाके, कबहुँ न नेह निभायो।
गोपिन हूँके भई न मनकी, फिर याकी का भइ है ।।३।।

पै का करौं न मानत मनुआँ, याहि न और सुहावै।
सुनों, न सुनों टेर तुम याकी, अब यह अनत न जावै ।।५।।

(१४३)

राग भैरवी, तीन ताल २१-४-१९७३

मोहिं सखि ! स्याम हि स्याम सुहावै।
ऐसी हठ पकरी या मनने, हरि तजि कतहुँ न जावै॥
स्याम-ठगौरी[2] लगी मोहिं सखि ! और नाहिं कछु भावै।
सुनत न स्याम तदपि मात्यौ[3] मन स्यामहिके गुन गावै ।।१।।

---

१. अचूक। २. नजर। ३. मतवाला।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वह अति सुघर सुजान-सिरोमनि, अग-जगनाथ कहावै ।
मो सी कुटिल कुसील[1] कुरूपा ताहि भला क्यों भावै ॥२॥
मैं तो पचि हारी अब आली! जुगति न कोउ उर आवै ।
पौरि परी नित पन्थ निहारूँ, पै वह पट न हटावै ॥३॥
कहा करूँ, कोउ और ठौर नहिं, अपनो कोउ न लखावै ।
मिलै, न मिलै, पौरि तजि अब यह अनत[2] न कतहूँ जावै ॥४॥

(१४४)

राग भैरव, तीन ताल ६-५-१९७३

अब मोहिं और कछु न सुहावै ।
स्याम पियाकी लगी लगन हिय,
सखि ! वह आवै भले न आवै ॥
दरसनकों तरसें नित नयना,
निसि-दिन मनकों मदन सतावै ।
कहा करूँ ? वह मधुमयि मूरति,
आली ! नेंकहुँ निकट न आवै ॥१॥
लगी लगन, कैसे मन मानै,
पुनि-पुनि वाही की सुधि आवै ।
हियमें उठत हूक-सी पल-पल,
'पिया! पिया!' की रटन रटावै ॥२॥
है कैसो वेपीर बीर[3] ! वह,
ताकों वेद दयालु बतावै ।
मैं तो मरूँ विरह की मारी,
ताहि नेंक हूँ दया न आवै ॥३॥

---

१. दुराचारिणी । २. अन्यत्र, दूसरी जगह । ३. बहिन ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लिखि-लिखि ताहि भेजती पतियाँ,
जो कोउ वाको पतो बतावै—
'आजा, आजा, प्यारे प्रीतम !
तो विनु मन छिन-छिन अकुलावै ॥४॥
जनम-जनमकी चेरी तेरी,
तो सों बिछुरि वहुत दुख पावै।
दरस-दान दै पोसहु प्यारे !
जनम-जनम तेरे गुन गावै ॥५॥
प्रान-पाँवरे[1] परे प्रानधन !
पग धरि तिनकों सफल बनावै—
तो कृतकृत्य होय यह जीवन,
ललित प्रीति-लतिका लहरावै ॥६॥
ललन लाड़िले बिलम न कीजै,
दरस देहु तो जिया जुड़ावै।
नतरु बेलि बगमेल[2] होइ है,
विमल विरुद बाद[3] हि बहि जावै' ॥७॥

(१४५)

राग आसावरी, तीन ताल १४-६-१९७३

पिया बिनु कैसे सरै री बीर !
'पिया-पिया टेरत भई बौरी, पल-पल बाढ़त पीर ॥
मैं तो दाभी[4] स्याम-विरह की, होत न हियमें धीर।
रह्यौ न धरम-करम जब सों सखि! लग्यो दृगनको तीर ॥१॥

---

१. पैर रखकर चलने के लिये बिछाये हुए वस्त्र । २. नष्ट-भ्रष्ट होना ।
३. व्यर्थ । ४. दग्ध, जली हुई ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बौरी भई, बरत होरी-सी, करूँ कहा अब बीर !
पल-पल कलप-कलप सम बीतत, नयनन बरसत नीर ॥२॥

चहुँ दिसि होत चबाव[1], चतुर सखि कहहिं बात वेसीर[2]।
कासों कहों हिये की सजनी ! कोउ न बँधावत धीर ॥३॥

गई लाज कोउ काज बन्यौ नहिं, याहू की नहिं गीर[3]।
एक बार जो पिया मिलें तो पीर होय अकसीर[4] ॥४॥

(१४६)

राग जौनपुरी, तीन ताल ११-५-१९७३

मेरो मन तरसि-तरसि रह जाय ।
नन्दनँदनकी ललक लगी सखि ! पल-पल जिय अकुलाय ॥
कैसे करूँ, न चैन रैन-दिन, घर-बाहर न सुहाय ।
जब-जब सुरति होत प्रियतमकी तन-मन-सुरति सिराय[5] ॥१॥

दरसनकों नित नयना तरसें, बरसें वारि सुभाय ।
पिया-मिलनकी लगन लगी उर, असन-वसन न सुहाय ॥२॥

मनकी व्यथा रहत मन ही में, तनकी तपन तपाय ।
कहा करूँ, वा बेदरदी बिनु कैसे जिया जुड़ाय ॥३॥

विसम विरहकी व्यथा सखी री ! दीखत कोउ न सहाय ।
अपनो कोउ न कहूँ या जगमें, कासों कहिये जाय ॥४॥

स्याम हि की मैं सदा-सदासों, सोही करहि सहाय ।
प्रीतम प्रीति-पारखी पूरो, निस्चय नेह निभाय ॥५॥

---

१. चर्चा । २. वेसिरकी । ३. गिला, शिकायत । ४. लाभदायक ।
५. ठंडी पड़ जाती है, समाप्त हो जाती है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(१४७)

राग टोड़ी, ताल ध्रुपद १०-६-१९७३

स्याम बिनु कैसे चैन परै।
पुनि-पुनि दौरि जात चित उत ही, फेरयौ नाहिं फिरै॥
भइ गुलाम बिनु दाम स्यामकी, तदपि न काम सरै।
देखे बिना नैन नित तरसहिं, झर-झर नीर झरै॥१॥
जनम-जनमकी साध हियेकी, बाधा कोउ न फुरै।
तदपि न सुपनेहुँ निरखी सो छवि, यासों जिया जरै॥२॥
हाय पिया! तुम कहा विचारी, मोहि न समुझि परै।
बारि-बिहीन मीन ज्यों त्यों यह चेरी तरसि मरै॥३॥
मनकी साध रही मन ही में, तनमें तपन बरै।
रही न आस, प्यास ही में यह पल-पल प्रान झुरै॥४॥
बूड़ रही मझधार चेरि यह, कोउ न सहाय करै।
होय पार तब ही जब प्रीतम निज कर कर पकरै॥५॥

(१४८)

राग ललित, तीन ताल २१-६-१९७३

पिया! मैं तुम बिनु तरस मरी।
तुमसों लगी प्रीति तो प्यारे! अब लौं नाहिं फरी॥
कैसे करूँ न परत चैन अब, नैनन झरत झरी।
रैन-दिवस तलफत ही बीतत, कबहूँ कल न परी॥१॥
कहि-कहि थकी न सुनी स्याम! तुम, मो मन पीर परी।
कैसे धीर होय नंद-नन्दन! हुमकत घरी-घरी॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दरसनकी यह ललक सजन ! नहिं सपनेहुँ सफल करी ।
प्रीतम ! अरस-परस बिनु कैसे होय प्रतीति खरी ॥३॥

जद्यपि मरी, न हरी हियेसों तुव रति-ललक-लरी[१] ।
तुम जानो, अब रहे स्याम ! यह कैसे बेलि हरी ॥४॥

है उर तरस, तदपि मनमोहन ! उर यह हठ पकरी—
सुनो, भले मत सुनो स्याम ! मैं रहिहों नित तुम्हरी ॥५॥

गुहार ॥१४६॥

राग भैरवी, ताल कहरवा १३-११-१९७२

मेरो मन भटकि-भटकि रह जाय ।
कबसों ठाड़ी द्वार तिहारे, पैरहु गये पिराय[२] ॥
दरसनकों ललकत ये लोचन, धीरज रह्यौ सिराय ।
जुग-जुगसों जुगवहुँ[३] पथ प्यारे ! काहे रहे रिसाय ॥१॥

टेरि-टेरि रसना हूँ हारी, टेर न परी सुनाय ।
हेरि-हेरि कबलौं अब हेरहुँ, हियकी हिलग हिराय[४] ॥२॥

कासों कहौं कहा जु कहौं हौं, तुम बिनु रह्यौ न जाय ।
चूक चूकि[५] हो जो न साँवरे ! तो को करहि सहाय ॥३॥

अपनो बल कछु काम न आयौ, आयू रही हिराय ।
अबहूँ लाज विरदकी राखहु, बिगरी लेहु बनाय ॥४॥

---

१. प्रीतिकी लालसाकी लड़ी-परम्परा । २. पीर होने लगी ।
३. देखती हूँ । ४. शिथिल पड़ गयी । ५. भूलको न भूलोगे ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

टेर ॥१५०॥

राग भैरव, ताल कहरवा २३-१२-१६७२

टेरत-टेरत वयस[1] सिरानी।
अजहूँ टेर न सुनो स्याम! तुम, कहँ लगि अपनी कहौं कहानी ॥
कबकी ठाड़ी पन्थ निहारूँ, पग दूखे अरु पीठ पिरानी।
झूर रहीं अखियाँ दरसनकों, सपनेहूँ नहिं मिली निसानी ॥१॥
हियमें उठत हूक-सी प्रतिपल, डोलूँ इत-उत मनहुँ दिवानी[2]।
दिन नहिं चैन रैन नहिं निदरा, करूँ कहा आई नकबानी[3] ॥२॥
कब लगि तरसाओगे प्रीतम! काहेकों ऐसी हठ ठानी।
जुग-जुगकी चेरी मैं तेरी, रस-रंकिनी सदासों मानी ॥३॥
रस-सरूप हो रसिक-सिरोमनि! एक बूंद दीजै दिन-दानी[4]।
अपनी जानि नैंक अपनाबहु, यामें कहु, का आनी-जानी[5] ॥४॥

श्याम-रस-रोगी ॥१५१॥

राग भैरवी, ताल कहरवा १-२-१६७३

लोचन भये श्याम-रस-रोगी।
स्याम-दरसकी प्यास निरन्तर, विरह-विसम-ज्वर-भोगी ॥
ललकि-ललकि अकुलाहिं न जब लौं मिलत स्याम-रस-बूटी।
पथ्य-कुपथ्य न लेंहि और कछु, जगकी आसा छूटी ॥१॥
छलकत रहत नीर नित मानहुँ होत पसेउ[6] अनूठो।
तासों परत चैन कछु मानहुँ विसम-विरह-ज्वर छूटो ॥२॥

---

१. आयु। २. मस्तानी, पागल। ३. नाकमें दम आजाना, ऊब जाना।
४. नित्य प्रति दान देनेवाले। ५. हानि-लाभ। ६. पसीना आना।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पुनि-पुनि विरह-मिलनकी हलचल धीर-पीर[1] सरसावै।
तासों अति अद्भुत रस-पीड़ा-सन्निपात[2] दरसावै ।।३।।

मरि-मरि जियहिं पियहिं स्यामल रस पियत न कबहुँ अघावहिं ।
मिलन-अमिलन दोउनमें तरसहिं, तरसि-तरसि सचु पावहिं ।।४।।

अद्भुत दसा न कहत बनत कछु, सो जानहिं जिन भोगी ।
जिनहिं लग्यौ यह रोग अनूठो, तिनहिं सराहहिं जोगी ।।५।।

प्रोषित-पतिका[3] ।।१५२।।

राग बरवा पीलू, तीन ताल २०-३-१९७३

मेरे पिया बसहिं परदेश, सखी री ! मैं कैसे साज सजाऊँ ।।

नित-प्रति भेजूँ लिख-लिख पाती ।
उनसों कोउ सन्देस न पाती ।
हुमकत हियो जरत नित छाती ।
मैं कैसे करि सचु पाऊँ ।।१।।

जनम-जनमकी प्रीति हमारी ।
ना जानूँ क्यों मोहिं बिसारी ।
उन बिन है यह जीवन भारी ।
मैं तड़प-तड़प रह जाऊँ ।।२।।

सदा सँगाती भये प्रवासी ।
प्रान प्रानके[4] वे अविनासी ।
उन बिनु बिलखूँ प्यासी-प्यासी ।
मैं कैसे मन समझाऊँ ।।३।।

---

१. धैर्य और दर्द । २. रस और पीड़ाका मेल । ३. जिस स्त्रीका पति परदेश में हो । ४. प्राणोंके प्राण ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उन बिनु अपनो और न कोई।
जबसों बिछुरी बहुत बिगोई[1]।
उरमें प्रतिपल हा-हा होई।
मैं काकों पीर सुनाऊँ॥ ॥

चैन न है दिन-रैन री सजनी।
कैसे कटै यह जीवन-रजनी[2]।
पिया मिलावै सो सखि! अपनी।
मैं वाहीके गुन गाऊँ॥५॥

स्याम दिवानी ॥१५३॥

राग टोड़ी, ताल कहरवा ८-४-१९७३

कोई मोहिं सुन्दर स्याम मिलावै।
स्याम बिना बेचैन चित्त यह, बिरहा मोहिं सतावै॥
टेरत-टेरत वयस सिरानी, प्रीतम कबहुँ न आवै।
ऐसो हितू कौन या जगमें, स्यामहिं टेरि बुलावै॥१॥

जबसों सुनी स्यामकी बतियाँ बात न और सुहावै।
मनमें बसी वही मृदु मूरति, पलहुँ न इत-उत जावै॥२॥

कैसे करूँ, न समुझि परत कछु, को मोकों समुझावै।
बौरी-सी मैं इत-उत डोलूँ, स्यामहि स्याम सुहावै॥३॥

स्यामहि मेरो असन-वसन है, स्याम लगन मन भावै।
स्याम-मदनने मो मन मोह्यो, रह-रह सुरति सतावै॥४॥

स्याम-घटा मन-गगन छई सखि! स्नेह-सलिल सरसावै।
जद्यपि कबहुँ न घटत तदपि मन ताहीकों तरसावै॥५॥

१, झकमारी। २, रात्रि।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पुनि-पुनि विरह-मिलनकी हलचल धीर-पीर[1] सरसावै।
तासों अति अद्भुत रस-पीड़ा-सन्निपात[2] दरसावै ॥३॥

मरि-मरि जियहिं पियहिं स्यामल रस पियत न कबहुँ अघावहिं।
मिलन-अमिलन दोउनमें तरसहिं, तरसि-तरसि सचु पावहिं ॥४॥

अद्भुत दसा न कहत बनत कछु, सो जानहिं जिन भोगी।
जिनहिं लग्यौ यह रोग अनूठो, तिनहिं सराहहिं जोगी ॥५॥

प्रोषित-पतिका[3] ॥१५२॥

राग बरवा पीलू, तीन ताल २०-३-१९७३

मेरे पिया बसहिं परदेश, सखी री ! मैं कैसे साज सजाऊँ ॥

नित-प्रति भेजूँ लिख-लिख पाती।
उनसों कोउ सन्देस न पाती।
हुमकत हियो जरत नित छाती।
मैं कैसे करि सचु पाऊँ ॥१॥

जनम-जनमकी प्रीति हमारी।
ना जानूँ क्यों मोहिं बिसारी।
उन बिन है यह जीवन भारी।
मैं तड़प-तड़प रह जाऊँ ॥२॥

सदा सँगाती भये प्रवासी।
प्रान प्रानके[4] वे अविनासी।
उन बिनु बिलखूँ प्यासी-प्यासी।
मैं कैसे मन समझाऊँ ॥३॥

---

१. धैर्य और दर्द। २. रस और पीड़ाका मेल। ३. जिस स्त्रीका पति परदेश में हो। ४. प्राणोंके प्राण।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उन बिनु अपनो और न कोई।
जबसों बिछुरी बहुत बिगोई[1]।
उरमें प्रतिपल हा-हा होई।
मैं काकों पीर सुनाऊँ ।। ।।

चैन न है दिन-रैन री सजनी।
कैसे कटै यह जीवन-रजनी[2]।
पिया मिलावै सो सखि! अपनी।
मैं वाहीके गुन गाऊं ।।५।।

स्याम दिवानी ।।१५३।।

राग टोड़ी, ताल कहरवा ८-४-१९७३

कोई मोहिं सुन्दर स्याम मिलावै।
स्याम बिना बेचैन चित्त यह, बिरहा मोहिं सतावै ।।
टेरत-टेरत वयस सिरानी, प्रीतम कबहुँ न आवै।
ऐसो हितू कौन या जगमें, स्यामहिं टेरि बुलावै ।।१।।

जबसों सुनी स्यामकी बतियाँ बात न और सुहावै।
मनमें बसी वही मृदु मूरति, पलहुँ न इत-उत जावै ।।२।।

कैसे करूँ, न समुझि परत कछु, को मोकों समुझावै।
बौरी-सी मैं इत-उत डोलूँ, स्यामहि स्याम सुहावै ।।३।।

स्यामहि मेरो असन-वसन है, स्याम लगन मन भावै।
स्याम-मदनने मो मन मोह्यौ, रह-रह सुरति सतावै ।।४।।

स्याम-घटा मन-गगन छई सखि! स्नेह-सलिल सरसावै।
जद्यपि कबहुँ न घटत तदपि मन ताहीकों तरसावै ।।५।।

१, झकमारी। २, रात्रि।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कृपाकी वाट ॥१५४॥

राग भैरवी, झपताल ९-४-१९७३

हियमें आस एक लखात।
कृपाहीकी वाट जुगवहुँ, स्याम ! हौं दिन-रात ॥
चित्तमें बहु साध साधीं, बनी कोउ न बात।
छयौ उरमें मोह-तम, अबलौं भयो न प्रभात ॥१॥
बँध्यौ विषय-विकार-बन्धन, चित्त अति अकुलात।
ललक है तुव दरसकी, पै पन्थ कोउ न लखात ॥२॥
प्रीति बिनु हो कृपा कैसे, सो न उर दरसात।
है न कोउ अधिकार अपनो, बलहुँ कोउ न दिखात ॥३॥
पात्रता हूँ है न कोऊ, बनें कैसे बात।
आस है बस यही केवल, सो न उरसों जात ॥४॥
हो दयानिधि तुम सदासों, विरद यह विख्यात।
दीन मोसम, दीनबन्धु न कोउ तुम सम तात ॥५॥
कृपा फिर काहे न हुइ है, बनहि बिगरी बात।
तात ! विलम न कीजिये, अब बिलम सह्यौ न जात ॥६॥

विरहिणी ॥१५५॥

राग आसावरी, तीन ताल २४-४-१९७३

मोहिं सखि ! स्यामहि की सुधि आवै।
जबसों नयन लखी वह मूरति, मोहिं न कछू सुहावै ॥
मनमें रहत खलबली-सी नित, चैन न कबहूँ आवै।
करों कहा कासों कहों सजनो ! को मोहिं स्याम मिलावै ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कलपत-कलपत जात दिवस सब, निसा नींद नहिं आवै ।
नैननि बसी छैलकी वह छवि, पलहुँ न इत-उत जावै ।।२।।

सूख्यौ नीर न धीर हिये में, पीर हि पीर पिरावै ।
सूनी-सूनी लगहिं सभी दिस, विलपत वयस बितावै ।।३।।

कहा करै कुल-कानि निगोड़ी, जब प्राननि बनि आवै ।
का जानें वे पीर परायी, जिनहिं न स्याम सतावै ।।४।।

ऐसो करो उपाय सखी ! कोउ, जासों जिया जुड़ावै ।
मैं तो अब हों सदा स्याम की, सो हूँ मोहिं अपनावै ।।५।।

अनुताप ।।१५६।।

राग सोहनी, तीन ताल ४-६-१९७३

हाय ! सब वयस स्याम बिनु बीती ।
प्रीति पुनीत न जगी हिये में, बात बनाई रीती ।।
सपनेहुँमें न दरसकी सामाँ[1], नैनन नींद न जोती ।
खाय-खाय सब वयस बितायी, भई न प्रभु पद प्रीती ।।१।।

उरमें पीर, न नीर नयनमें, गुनी न हरि-गुन-गीती ।
व्यर्थ हि जगमें साधु कहायो, सधी न कोउ सुनीती ।।२।।

ललन-मिलनकी लगन न लागी, लिख-लिख ही वय बीती ।
चलन-लगन आ गयी निकट अब, जतन करूँ केहि रीती ।।४।।

कासों कहों पीर या मनकी, रही न हिय परतीती ।
प्रीतम ! अब तो तुम हि सुधारो, जो बीती सो बीती ।।५।।

---

१. संभावना ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विरह का तीर ॥१५७॥

राग पूरिया, तीन ताल ४-६-१९७३

सखी ! यह बुरो बिरह् को तीर
सालत[1] रह्त सदा ही हियमें, पल-पल प्रगटत पीर ॥
रैन-दिवस नहिं चैन काहु विधि, मन अति रह्त अधीर ।
संग-रंग[2] न सुहात काहु को, विलपत विकल सरीर ॥१॥

जियन-मरन दोउनमें बाधा, दोउमें रह्त न धीर ।
वाट निहारत ही वय बीतै, पलहुँ कलप सम बीर ॥२॥

जा उर धँसै न खसै पलहुँकों, देत कलेजो चीर ।
भूख-प्यासकी आस न भासै, भासै पीर हि पीर ॥३॥

अनलहुँ सो अति प्रबल सखी ! यह जारत जोर सरीर ।
'हा हा !' करते निसि-दिन बीतें, नयनन रुकत न नीर ॥४॥

जद्यपि विसमन रस कोउ या सम, वीरहिं जिमि रन-भीर[3] ।
पीर हि पीर सुहात सखी ! इत तरसन सरस समीर[4] ॥५॥

विरह-विधुरा ॥१५८॥

राग विहाग, तीन ताल १६-६-१९७३

तलफत ही सब रैन सिरानी ।
प्रीतम बिना परै कल कैसे,
मैं तो सखि!बस स्याम-दिवानी ॥

---

१. करकता रहता है । २. साथ और राग या आसक्ति । ३. युद्ध का संकट । ४. वायु ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्यामहि स्याम रटत मन मेरो,
हेरि-हेरि पथ मैं हियरानी[1]।
कैसे करूँ न मानत यह मन,
तरसत-तरसत वयस बितानी ॥१॥

जबसों बिछुरी चलत छुरी-सी,
मनकी पीर मनहिने जानी।
अपनी कौन मिलनिया ऐसी,
जाहि कहों यह कथा-कहानी ॥२॥

कौन सुने, को गुनै हिये की,
को बाँटे यह विपति बिरानी[2]।
परी-परी तलफूँ, पथ निरखूँ,
निरखत-निरखत नींद नसानी ॥३॥

अब का करूँ, मरूँ पचि पचि मैं,
आवनकी नहिं मिलत निसानी।
छोरत प्रीति बनै नहिं सजनी!
जाहि लगे सोई यह जानी ॥४॥

उनकी हूँ उनकी ही सखि री!
उनहूँने अपनी ही जानी।
उनकी ह्वै सोई सुख मेरो,
जामें हो उनकी मन-मानी ॥५॥

१. हैरान हो गयी, ऊब गयी। २. पराई।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वरूप-माधुरी

युगल,ज्योति ।।१५६।।

राग वागेश्री, तीन ताल २५-३-१९७३

निभृत[1] निकुञ्ज माहिं निरखहु सखि !
जुगल-जोति अति जगमग होत ।
निरखि-निरखि सो अद्भुत आभा
उरमें उझलत सुचि-रस[2]-स्रोत ।।१।।

ताकी अमल धवल आभासों
रवि-ससि लागहिं जनु खद्योत[3] ।
निरखि अनूप रूप दम्पतिको
रति-रतिपतिकी मति हत होत ।।२।।

चारु चन्द्रिका सिखि-सिखण्डकी[4]
उरझनमें उरझत मन मोर ।
बंक बिलोकनि, मृदु मुसकनि लखि
भूलत सुधि-बुधि, होत विभोर ।।३।।

मुख-मयंक[5] अकलंक निरखि चख
भये निमिख तजि चारु चकोर ।
बींधत हियो मार[6]-सायक ज्यों
भाल-रेखयुत भृकुटि-मरोर ।।४।।

---

१. एकान्त । २. शृंगार रस । ३. पटवीजना, जुगनू । ४. मोर-पंख ।
५. चन्द्रमा । ६. कामदेव ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अंग-अंग झलकहिं आभूसन
मनि-मुक्तामय अमल अथोर[1]।
नील-पीत तन पै पीताम्बर,
नीलम्बरंकी होत झकोर ॥५॥
पायलकी रुनझुन-रुनझुन धुनि
सुनि-सुनि मानस होत विभोर।
नव नर्तनकी भाव-भंगिमा
पल-पल देत मनहिं झकझोर ॥६॥
रसिकराय हरि रसमयि राधा,
तिनकी रस-रति जाने कौन।
रसिकनके जीवन-धन दोउ पै
रसना तहाँ रहत नित मौन ॥७॥
तन-मनकी गति-मति न तहाँ, पै
तन मन हूँ भासहिं रस-भौन[2]।
या रसमें जो रंगे रसिकजन
तिनकी सरवरि[3] करिहै कौन ॥८॥

युगल-रस ॥१६०॥

राग बसन्त, ताल दीपचन्दी ३-६-१९७३

सोहहिं नव निकुञ्ज-मन्दिरमें
स्यामा-स्याम जुगल वर आली !
उमँगत अति अनुराग हियेमें
सो सुचि सुखमा निरखि निराली ॥१॥

---

१. अन्यून, बहुत। २. रस-भवन, रसमय। ३. बरावरी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रीति पगी मधुमयि दोउ मूरति,
रसिकनकी निज निधि अति प्यारी ।
तिनकी अमल अतुल[1] छविसों छकि
रसिक सुजन अति होंहि सुखारी ॥२॥
गौर-स्याम तनुकी आभासों
छायी अति अद्भुत उजियारी ।
नील-पीत आभा मिलि उभलत
उज्ज्वल हरित कन्ति अनियारी[2] ॥३॥
हरित निकुञ्ज हरित आभासों
करहिं हियेकों हरित री आली ।
सरित-सलिल हूँ हरित भयौ तहँ,
अग-जग[3] पै छायी हरियाली ॥४॥
नयननकी निधि हैं सजनी ! ये,
उमँगि-उमँगि निरखहु अति प्यारी ।
भाग-सुहाग बड़ो ब्रजको
प्रगटी जहँ यह अद्भुत उजियारी ॥५॥
हैं रसमय रसराज रसिकबर
महाभावमयि कीर्तिकुमारी ।
तिनहीके रसमय सीकरसों[4]
है रसमय जल-थल, नर-नारी ॥६॥
रसकी रौर[5] उठत इत चहुँदिसि,
रसमयि केलि होत अनिवारी[6] ।
हम सब हूँ रसरूप भईं सखि !
फूल रही रसको फुलवारी ॥७॥

---

१. तुलना रहित, अतोल । २. नुकीली, चटकीली । ३. स्थावर जंगम, चराचर । ४. बूँद । ५. प्रवाह । ६. निरन्तर ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY No.........
Sri Sri Anandamayee Ashram

युगल-छवि ॥१६१॥

राग खम्माच, तीन ताल ४-६-१९७३

देखो, देखो री सजनी ! इत कुञ्जभवनमें जुगल विराजैं।
इनकी अतुल अमल सुखमा लखि कोटि-कोटि रति-रतिपति लाजैं॥

चारु चन्द्रिका इत सिर सोहै।
उत सिखि-पिच्छ मार-मद मोहै।
दोउकी चितवन दोउ चित छोहै।
निरखि-निरखि सो छवि रवि लाजैं॥१॥

स्रवननि मनि-कुण्डल छवि छाई।
परत कपोलन झलमल झाई।
अधरनकी अद्भुत अरुनाई।
मुसकन लखि प्रमुदित मुनि राजैं॥२॥

गौर-स्याम तनुकी लखि सोभा
मनि-मानिक भे जड अति छोभा।
उलट-पुलट रतिको उर लोभा,
यासों नील-पीत पट छाजैं॥३॥

अंग-अंग उझलत अनंग-रस।
निरखि ताहि रति-रतिपति रसवस।
मनि-भूसनकी झलमल सखि ! अस
मनहुँ गगनमें उडुगन राजैं॥४॥

पायन पायलकी रुनझुन-धुनि।
नर्तनकी पद-पटकन सुनि-सुनि
होत छोभ मुनिजन हूँ के मन।
मनहुँ मदनकी जय जग गाजैं॥५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ऐसो को त्रिभुवनमें भाई।
जाके हिय यह छवि न समाई।
निरखि-निरखि सखि ! यह सुघराई।
सुखमा हूँ को सुखमा लाजै ॥६॥

श्याम-छवि ॥१६२॥

राग टोड़ी, तीन ताल १५-३-१९७२

स्याम-छवि निरखि-निरखि न अघाऊँ।
वा मधु-मूरति पै त्रिभुवनकी सुखमा सकल लुटाऊँ ॥
वह मनमोहिनि बाँकी झाँको, मो मन-मन्दिर आँकी।
भाव-भगतिसों पूजि-पूजि सो नयनन माँहि बसाऊँ ॥१॥

काली घँघराली अलकावलि अलि-अवली-सी राजै।
सुचि सुदेश सिखि¹-पिच्छ झकोरै, सरवरि कहूँनपाऊँ ॥२॥

मणिमय कलकुण्डल काननमें झलमलात अति सोहैं।
गोल कपोल कान्ति तिनकी लखि निरखतही रहजाऊँ ॥३॥

मुख-मयंक सुन्दर सुचि नासा बेसर रतन-जड़ाऊ।
मानहुँ कीर² चुगत मुक्ताहल, सो छवि किमिबिसराऊँ ॥४॥

अरुनिम अधर-विम्ब मृदु मुरली कूजत कलित निनाद।
स्रवन सुधा सरसात अनूपम, पियत-पियत सचु पाऊँ ॥५॥

स्याम सुतनु सोहत पीताम्बर कनक-कान्ति-कमनीय³।
घन-घमण्ड चमकत जनु चपला, कैसे सो लखि पाऊँ ॥६॥

कर कंकन गलमें हारावलि मणि-मुक्तामयि सोहै।
अंग-अंग आभूसनकी झलमल निरखत रहि जाऊँ ॥७॥

---

१. मोर। २. तोता। ३. सुवर्ण की कान्ति के समान सुन्दर।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पायन पायल की अति अनुपम रुनझुन रव मनहारी।
नव नर्तनयुत सुनि सो स्रवनन तन-मन-सुधि बिसराऊँ ॥८॥

हैं रसराज स्वयं मनमोहन रसिक-सिखामनि स्याम।
तिनकी मधुमयि रूप-माधुरी पियत न कबहुँ अघाऊँ ॥९॥

नित्य सखा ॥१६३॥

राग रागेश्री, ताल कहरवा ६-३-१९७३

हम-तुम एक तरुके सखा।
सतत सँगाती रहे सदासों, भेद न कबहुँ लखा॥
काहे होत हिये यह हलचल, भासत भेद सदा।
तरसहिं प्रान मिलनकों प्रति पल, कैसी यह विपदा ॥१॥

मिलेहुँ रहहिं अनमिल-से प्रीतम! मिलि-मिलि होहिं जुदा।
तरसन ही कों तरसहिं प्रति पल, सकलहुँ विकल सदा ॥२॥

अद्भुत-सी यह दसा दयानिधि! कैसे कहूँ कहा।
तुमसों पृथक् न कबहूँ कछु फिर कित यह भेद रहा ॥३॥

भले मिलन-बिछुरन भासै, पै है रसरूप महा।
रस तो तुम ही हो मनमोहन! फिर कोउ भेद कहाँ ॥४॥

है तुव माया ही की महिमा, जो यह भेद लखा।
मायापति! मेटहु यह माया, हम-तुम नित्य सखा ॥५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ऐसो को त्रिभुवनमें भाई।
जाके हिय यह छवि न समाई।
निरखि-निरखि सखि! यह सुघराई।
सुखमा हूँ को सुखमा लाजै ॥६॥

श्याम-छवि ॥१६२॥

राग टोड़ी, तीन ताल १५-३-१९७३

स्याम-छवि निरखि-निरखि न अघाऊँ।
वा मधु-मूरति पै त्रिभुवनकी सुखमा सकल लुटाऊँ ॥
वह मनमोहिनि बाँकी झाँकी, मो मन-मन्दिर आँकी।
भाव-भगतिसों पूजि-पूजि सो नयनन माहिं बसाऊँ ॥१॥
काली घुँघराली अलकावलि अलि-अवली-सी राजै।
सुचि सुदेश सिखि[१]-पिच्छ झकोरै, सरबरि कहूँ न पाऊँ ॥२॥
मणिमय कलकुण्डल काननमें झलमलात अति सोहैं।
गोल कपोल कान्ति तिनकी लखि निरखतही रहजाऊँ ॥३॥
मुख-मयंक सुन्दर सुचि नासा बेसर रतन-जड़ाऊ।
मानहुँ कीर[२] चुगत मुक्ताहल, सो छवि किमि बिसराऊँ ॥४॥
अरुनिम अधर-बिम्ब मृदु मुरली कूजत कलित निनाद।
स्रवन सुधा सरसात अनूपम, पियत-पियत सचु पाऊँ ॥५॥
स्याम सुतनु सोहत पीताम्बर कनक-कान्ति-कमनीय[३]।
घन-घमण्ड चमकत जनु चपला, कैसे सो लखि पाऊँ ॥६॥
कर कंकन गलमें हारावलि मणि-मुक्तामयि सोहै।
अंग-अंग आभूसनकी झलमल निरखत रहि जाऊँ ॥७॥

१. मोर। २. तोता। ३. सुवर्ण की कान्ति के समान सुन्दर।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पायन पायल की अति अनुपम रुनझुन रव मनहारी।
नव नर्तनयुत सुनि सो स्रवनन तन-मन-सुधि बिसराऊँ ॥८॥

हैं रसराज स्वयं मनमोहन रसिक-सिखामनि स्याम।
तिनकी मधुमयि रूप-माधुरी पियत न कबहुँ अघाऊँ ॥९॥

नित्य सखा ॥१६३॥

राग रागेश्री, ताल कहरवा ६-३-१९७३

हम-तुम एक तरुके सखा।
सतत सँगाती रहे सदासों, भेद न कबहुँ लखा॥
काहे होत हिये यह हलचल, भासत भेद सदा।
तरसहिं प्रान मिलनकों प्रति पल, कैसी यह विपदा ॥१॥

मिलेहुँ रहहिं अनमिल-से प्रीतम! मिलि-मिलि होहिं जुदा।
तरसन ही कों तरसहिं प्रति पल, सकलहुँ विकल सदा ॥२॥

अद्भुत-सी यह दसा दयानिधि! कैसे कहूँ कहा।
तुमसों पृथक् न कबहूँ कछु फिर कित यह भेद रहा ॥३॥

भले मिलन-बिछुरन भासै, पै है रसरूप महा।
रस तो तुम ही हो मनमोहन! फिर कोउ भेद कहाँ ॥४॥

है तुव माया ही की महिमा, जो यह भेद लखा।
मायापति! मेटहु यह माया, हम-तुम नित्य सखा ॥५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(५)

प्रीति-माधुरी

मंगल-रास ॥१६४॥

राग विहाग, तीन ताल ३-११-१६७२

आज हरि ! मंगल-रास रचाओ।
भक्ति-ज्ञान राधा-माधव दोउ,
मम उर-अजिर सुरस सरसाओ॥
भाव-भक्ति, संचारी-सखियन
संग लिये नव नृत्य रचाओ।
उद्दीपन-विभाव-भावित ह्वै
सुचि संगीत-सुधा बरसाओ॥१॥
अष्ट सात्त्विक भाव अष्ट सखि,
तिनसों कलित केलि करवाओ।
प्रेम-सरोवरमें प्रमुदित ह्वै
सब सखियन सँग रुचिसों न्हाओ॥२॥
होय अनाहत बाजेनकी धुनि
वीणा-वेणु-वाद्य बजवाओ।
हुलसि-हुलसि हुँकार ध्वनि करि,
गाओ नाचो धूम मचाओ॥३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रीति-दिवानी ॥१६५॥

राग मारू विहाग, तीन ताल ३०-१०-१९७२

सखि ! मैं प्रीतम-प्रीति-दिवानी ।
मेरे पिया मोरे हिये बसत हैं, ना कहुँ आनी-जानी ॥
जहाँ-तहाँ भटकी बहु बीथिन, कहुँ न मिली मन-मानी ।
स्याम-छटामें मो मन अटक्यो, मैं हरि-हाथ बिकानी ॥१॥

साधन-भजन न होत जदपि कछु, हरि-छवि हिये समानी ।
नैननि निरखूँ सो छवि छकि-छकि-यही आस उर आनी ॥२॥

लगत न मन काहु काज-साजमें, बोलूँ और न बानी ।
ललक लगी प्रियके दरसनकी, मेरी यही कहानी ॥३॥

हुमकत हियो, लूक[1]-सी लागी, भूख[2] न कबहु बुतानी ।
निरखूँ नयन, अंक भरि भेटूँ, रहूँ प्रीति-रस सानी ॥४॥

और न चाह रही कोउ हियमें, निरखि-परखि पहचानी ।
जैसे रखें रहूँ उनकी ह्वै, प्रीति रहे नित छानी[3] ॥५॥

सब कुछ श्याम ॥१६६॥

राग दुर्गा, झप ताल १७-११-१९७२

स्याम ही मेरे जीवन-प्रान ।
तन, मन, धन, गुनगन सब स्यामहि, स्याम हि स्वजन सुजान ॥
माता-पिता, बन्धु, गुरु, स्वामी, सखा, सँगाती ग्यान ।
स्याम बिना कोऊ न कहूँ कछु, सब कछु स्याम हि जान ॥१॥
मोहिं भरोसो एक स्यामको, और न कोउ प्रमान ।
स्याम रंगमें रँगू निरन्तर-अन्तर यही गुमान ॥२॥

---

१. आगकी लपट । २. प्रीतिकी भूख । ३. छिपी हुई ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्याम हि जीवन-मरन हमारे, मन्दिर या समसान।
स्याम बिना कोउ और न दीखत, स्याम हि परमस्थान ॥३॥

जाग्रत, सुपन, सुसुप्ति स्याममय, स्याम तुरीय प्रमान।
जनम-मरनको मरन भयौ अब, मुक्ति हुँ मुक्त महान ॥४॥

स्याम नित्य जीवन हैं सबके, स्याम हि नित्य स्थान।
स्याम-नित्य-लीला ही भासत, अग जग सकल जहान ॥५॥

नाँच नचाओ ॥१६७॥

राग भूपाली, तीन ताल २३-११-१९७२

मोहिं तुम ऐसेहि नाँच नचाओ।
जो तुम कहँ सुहाय यह प्यारे! तो मन मत नैंकहुँ सकुचाओ ॥
खूब नचाओ, खूब खिझाओ, जगमें खूब हँसी करवाओ।
छेड़-छाड़में ही रुचि है तो छेड़ि-छेड़ि हँसि-हँसि हरसाओ ॥१॥

यह तनु कहा काम आवेगो, जो चाहो या सों करवाओ।
मन भी तो है स्याम! तिहारो, जो चाहो वासों मनवाओ ॥२॥

यही रहै नित साध हियेकी, पल-छिन हूँ इत-उत जनि जाओ।
छाये रहो भूत-ज्यों चित पैं, मन-माने नित खेल खिलाओ ॥३॥

रहै ओर कोउ चाह न चितमें, चित्त-वित्त तुमही बन जाओ।
हुमकत रहै विरहमें प्यारे! तुम आओ चाहे मत आओ ॥४॥

दर्शनकी प्यास ॥१६८॥

राग देशकार, तीन ताल ५-१२-१९७२

लोचन मरहिं रूप-रस-प्यासे।
तरसहिं स्याम-सुधा-रसकों नित, निसि-दिन रहहिं उदासे ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जा छबिसों छकिबो नित चाहें, सपनेहुँ मिली न झाँकी।
ध्यानहुँ में वह मधुमयि मूरति, कबहुँ न उरमें आँकी ॥१॥

जगमें अब न सुहात कहूँ कछु, यही आस उर लागी—
कबहूँ तो हरि दरस-दान दै हरि हैं यह उर-आगी ॥२॥

कासों कहौं विथा यह मनकी, को यामें का करिहै।
जो है वैद्य बीर[1]! या गद[2] को सोइ पीर यह हरि है ॥३॥

मेरे श्याम ॥१६९॥

राग मालकोस, तीन ताल २-१२-१९७२

मेरे तो सब कुछ तुम ही श्याम !
मिलो, न मिलो तुम्हीं यह जानो, मुझे न इससे काम ॥
तुम ही तन हो, तुम ही मन हो, तुम ही हो धन-धाम।
तुम्हें छोड़ मैं और न चाहूँ, सब कुछ मुझे हराम ॥१॥

तुम ही मेरी गति मति रति हो, तुम ही काम-अकाम।
तुम ही भुक्ति मुक्ति हो मेरी, तुम ही श्रम-विश्राम ॥२॥

तुममें रहूँ, तुम्हींको देखूँ, तुम हो रहूँ निकाम[3]।
तुम मेरे मैं सदा तुम्हारा, 'हम-तुम' का क्या काम ॥३॥

प्रीतिकी प्यास ॥१७०॥

राग केदार, तीन ताल १७-१-१९७३

प्रीतिकी प्यास न घटने पावै।
छिन-दिन बढ़ै, प्रीत-रस पी-पी,
मनुआँ कबहुँ न पियत अघावै ॥

१. बहिन। २. रोग। ३. नितान्त, सर्वथा।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रीति बढ़ै, प्रीतम न मिलै वरु,
चित्त सदा प्रीतम ही ध्यावै।
अग-जग भोग-योग, परमारथ-
स्वारथ कोउ न मनहिं सुहावै ॥१॥

वस्तु व्यक्ति में रहे न ममता,
प्रीतम ही अपनो रहि जावै।
प्रीतम के जन जानि सब हि सों
प्रीति करें, नहिं दुखै-दुखावै ॥२॥

प्रीतमकी ही बात रखै नित,
अपनी बात न मनमें लावै।
शत-शत दुख जीवनमें आवें,
तो हूँ प्रीतम ही मन भावै ॥३॥

ललक लगी हो पिया-मिलन की,
ललकि-ललकि मनुआँ सचु पावै।
आपु न रहै, रहै प्रीतम ही,
प्रीतिमात्र निजता रहि जावै ॥४॥

ठकुर-सुहाती ॥१७१॥

राग भैरवी, ताल वैताल २४-१-१९७३

मैं ठकुर-सुहाती गाती री, मैं ठकुर-सुहाती गाती।
मेरा ठाकुर प्रीति-भिखारी, मैं उस ही के
रस राती री, मैं उस ही के रस राती ॥
मेरा ठाकुर रूप-दिवाना, मैं सज-सज
साज दिखाती री, मैं सज-सज साज दिखाती।
मेरा ठाकुर मनका मौजो, मैं उसका मान
बढ़ाती री, मैं उसका मान बढ़ाती ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मेरा ठाकुर रंग-रँगीला, मैं उसको नाँचि
रिझाती री, मैं उसको नाचि रिझाती।
मेरा ठाकुर दीन-दयानिधि, मैं दीन-हीन बन
जाती री, मैं दीन-हीन बन जाती॥२॥

मेरा ठाकुर रसका लोभी, मैं प्रीति-सुरस
सरसाती री, मैं प्रीति सुरस सरसाती।
मेरा ठाकुर मेरा प्रेरक, मैं कठपुतली
कहलाती री, मैं कठपुतली कहलाती॥३॥

मेरा ठाकुर दूर विराजै, मैं विरहिणि बन
बिलखाती री, मैं बिरहिणि बन बिलखाती।
मेरा ठाकुर मेरे भीतर, मैं उसही में खो
जाती री, मैं उसही में खो जाती॥४॥

मेरा ठाकुर सबसे न्यारा, मैं सब तजि उसे
मनाती री, मैं सब तजि उसे मनाती।
मेरा ठाकुर सबमें सोहै, मैं सबसे नेह
निभाती री, मैं सबसे नेह निभाती॥५॥

मेरा ठाकुर जैसा चाहै, मैं वैसी चाह
जगाती री, मैं वैसी चाह जगाती।
मेरा ठाकुर ही है सब कुछ, मैं अपना पता न
पाती री, मैं अपना पता न पाती॥६॥

अभीप्सा ॥१७२॥

राग विहाग, तीन ताल — ८-३-१९७३

मेरो मन दरस-परस कों तरसै।
जनम-जनमकी साध प्रानधन! ना जानूं कब सरसै॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उरमें रहीं कामना कोटिन, अब कोउ कहूँ न दरसै ।
केवल एक आस उर लागी, कब उर हरि-रस बरसै ।।१।।
अँखियाँ छकें रूप-रस-माधुरि, स्रवन वेनु-रव करसै ।
प्रीति-प्रियूष पान करि-करि हूँ मन ताही कों तरसै ।।२।।
भूलि जाय तन-मन हूँ की सुधि, कन-कन प्रियतम दरसै ।
रहे न भेद-खेद कतहूँ कोउ, केवल हरि-रस सरसै ।।३।।

लगन ।।१७३।।

राग पटदीप, कहरवा ११-३-१९७३

मोहिं लगन लगै घनस्याम की ।
तन-मनकी सुध-बुध सब भूलूँ, लखि छवि स्यामास्याम की ।।
निज-परको कोउ भेद न भासै, रहै न रुचि काहू कामकी ।
रसना ररै गुनावलि निसि-दिन, रटन लगै हरि नामकी ।।१।।
अपनो करि भासै न कहूँ कोउ, मिटै मेर[1] धन-धामकी ।
अग-जग सब हि स्यामके दीखें, सब हि स्याम, मैं स्यामकी ।।२।।
विलसै कलित केलि नित अन्तर सुचितर स्यामा-स्यामकी ।
निरखि-निरखि मन-मधुप मत्त ह्वै छकै छकनि छविधामकी ।।३।।
भुक्ति-मुक्ति दोउ त्यागि लगै उर ललक प्रीति-रस-पानकी ।
मेरो मोमें रहै न कछु, छवि विलसै स्यामा-स्यामकी ।।४।।
स्याम हि स्याम रहै बस, सब दिसि लीला स्याम ललामकी ।
मैं हूँ स्याम, स्याम ही लीला, सत्ता केवल स्यामकी ।।५।।

१. मेरापन, ममता ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एक ही रस ।।१७४।।

राग बहार, तीन ताल १३-३-१९७३

मो मन एकहि रस सरसावै ।
भुक्ति-मुक्तिमों मुक्ति पाय मन प्रीतम प्रीति जगावै ।।
छकत रहै निसि-दिन सोई रस, छकतहुँ छकि नहिं पावै ।
धरम-करमको भरम निकसि उर जुगल-जोति जग जावै ।।१।।
ज्यों कोउ रंक पाय चिन्तामनि कबहुँ न सो बिसरावै ।
त्योंहो जुगल रसिक-छबि नैननि प्रविसि न निकसन पावै ।।२।।
लाड़ लड़ाय लड़ाय चावसों चित्त न कबहुँ अघावै ।
अरस-परस करि सरस भावसों भेद-खेद बिसरावै ।।३।।
रसना रटै स्याम-स्यामा नित, और न कछू सुहावै ।
मन-मधुकर छकि जुगल प्रीति-रस निज-पर हूँ बिसरावै ।।४।।
प्रीतमही प्रीतम भासै बस, प्रेमी कतहुँ न पावै ।
प्रीतम-प्रेमी भेद भानि[1] पुनि प्रीतिमात्र दरसावै ।।५।।

अनन्याश्रय ।।१७५।।

राग हमीर, तीन ताल १४-३-१९७३

कासों बात हियेकी कहिये ।
स्याम बिना ऐसो को अपनो, जासों कछु ढाढ़स हूँ पइये ।
अपनो-अपनी परी सबहिकों, कछू न कछु सबहीकों चहिये ।
चाह रहत तो रंक सबहि हैं, तिनसों माँगि कहा कछु पइये ।।१।।

---

१. हटाकर, दूर करके ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रीके धनी धनी है केवल, जो लेनो उनहीसों लइये।
अपने वही वही सब जानें, बिनु माँगे हूँ सब कछु पइये ॥२॥
बिना हेतु वे हितू सब हिके, ज्यों राखें त्यों ही नित रहिये।
उनसों विलग न है कतहूँ कछु, उनहीमें निसि-दिन रत रहिये ॥३॥

एक साध ॥१७६॥

राग दरबारी, तीन ताल १४-३-१९७३

एक साध बस उरमें धारूँ।
राधा-माधवकी मृदु मूरति, मन-मन्दिरमें नित्य निहारूँ ॥
उनहीको हौं चरन-किंकरी, उनकी रुचि निज सुरुचि विचारूँ।
जो कछु चोज होय उनके उर, सो अनुसरि सेवा-सुख सारूँ ॥१॥
परी रहूँ कुञ्जनके कोने, अति उमंगसों भूमि बुहारूँ।
टहल महलकी करूँ चावसों, सुमन लाय सिंगार सँवारूँ ॥२॥
रुचि-रुचि भोग लगावहिं दम्पति, सीथ-प्रसादी लै सिर धारूँ।
पुहुप-पलँग पौढ़ाय प्रेमसों, चरन चाँपि कल केलि निहारूँ ॥३॥
करि विसराम उठहिं जब प्रीतम, कनक-पीठ दोउन बैठारूँ।
जल अँचवाय पान-बीरी दै, अस्त-व्यस्त वर वसन सँवारूँ ॥४॥
निरखि-निरखि सो बाँकी झाँकी, उर आँकी नहिं कतहुँ बिसारूँ।
ऐसो भाग्य होय जो कबहूँ तो तिहुँ पुरकी सम्पति वारूँ ॥५॥

वृथा प्रलाप ॥१७७॥

राग अड़ाना, आड़ा चौताला १७-३-१९७३

प्रीतिकी व्यर्थहि बात बनाऊँ।
तन-मनकी सुविधा बिनु त्यागे, कैसे प्रीतम पाऊँ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गुरु-पद-परिचर्या न करी कछु, काम न प्रभुके आऊँ।
सदा करूँ चिन्तन सुखहीको, दुखसों जान बचाऊँ ॥१॥
चाह-चमारी गई न चितसों, काम-कथा मन लाऊँ।
मनकों सब कछु जानि सदा, ताहीको साज सजाऊँ ॥२॥
सुगति-कुगतिकी बात विचारूँ, प्रियतम नेंकु न ध्याऊँ।
दरस-परसकी लगन न मनमें, ज्यों-त्यों वयस बिताऊँ ॥३॥
सुनय, विनय अरु दया न मनमें, बढ़ि-बढ़ि बात बनाऊँ।
प्रेमिनकी पग-धूरि न सेई, सिर अभिमान चढ़ाऊँ ॥४॥
याविधि कोउ अधिकार न दीखत, तउ रस-रीति सुनाऊँ।
पै उनको करुना अमोघ है, द्रवहिं तो सब कछु पाऊँ ॥५॥

आकांक्षा ॥१७८॥

राग बागेश्री, तीन ताल २२-३-१९७३

मो मन कब वह छवि विलसैगी ?
गौर-स्यामकी अद्भुत आभा कब मन-भवन बसैगी ॥
बंक विलोकनि ललन-ललीकी कब मन-प्रान हरैगी।
चख-चकोरि कब मुख-मयंक लखि हलन-चलन बिसरैगी ॥१॥
ललित ललनकी लटकि चलनमें कब मम सुरति लगैगी।
नव नर्तनकी रुनझुन धुनि सुनि कब सुधि-बुधि बिसरैगी ॥२॥
मृदु मुरली-रवकी कब मधुमयि सुधा स्रवन सरसैगी।
हास-विलास, रास-रससों छकि कब मम मति हुलसैगी ॥३॥
हा-हा करि सब जीवन बीत्यो कब वह लगन लगैगी—
जासों काम-कलंक-पंक मँजि प्रीति पुनीत जगैगी ॥४॥
कहँ लगि कहों हिलग या हियकी, कैसेहु यह न बुझैगी।
जब लौं प्रीतम-प्रीति न जागै प्रतिपल हिय सुलगैगी ॥५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कैसे जीऊँ ॥१७९॥

राग विहाग, तीन ताल २६-३-१९७३

तुम बिनु कैसे जिऊँ मेरे प्रान !
तुम तो पिया ! कछु घरी निठुरई, भनक परत नहिं कान ॥
टेरत-टेरत बेर भई बहु, व्याकुल तन मन प्रान।
तरसत नैन चैन नहिं नैकहुँ, उर अति होत गलानि ॥१॥
मनकी पीर मनहिंमें मारूँ, कहा करूँ भगवान् !
है न कोउ अपनो बल तउ उर तजत न ललक-लुभान ॥२॥
डगमगात यह जीवन-नैया, करहु कृपा करि त्रान।
ऐसी करहु दयामय ! जासों होय न तुव जस-हानि ॥३॥

मनोरथ ॥१८०॥

राग रागेश्री, तीन ताल २९-३-१९७३

बसें मेरे मन-मन्दिरमें स्याम।
मन ही मन निरखूँ मोहनकी मोहनि मूर्ति ललाम ॥
निरखूँ बंक विलोकनि रुचिसों, मृदु मुसकनि अभिराम।
काम-कमान सरिस भ्रू भंगी हो कामको[1] काम[2] ॥१॥
कल कपोल मनि-कुण्डल-आभा झलकै नित अविराम।
ताकी झलकनमें उरझ्यो उर भूलै निजहिं निकाम ॥२॥
अधरविम्ब सुक-चंचु नासिका लटकत जलज ललाम।
वाकी झलमल आभासों उर रहे न तमको नाम ॥३॥

---

१. कामदेव। २. मनोरथ। ३. मोती। ४. तमोगुण, अज्ञानरूप अंधकार।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सिखि सिखण्ड-झकझोर झकोरैं हिय-हिलगन-अलसान ।
मृदु मुरली-मधुसों मधुमय हों प्रीति-पियासे प्रान ।।४।।
स्यामल तन पै पीत-वसनकी आभा अति अभिराम—
करैं हियेमें उज्ज्वल रसकी रिमझिम झरि अविराम ।।५।।
नूपुरकी रुनझुन ध्वनि सुनि-सुनि उमँगे हृदय अकाम ।
त्यागि लोक-परलोक-भोग सब भजे स्याम सुखधाम ।।६।।

सभी तुम ।।१८१।।

राग पटदीप, तीन ताल ६-४-१९७३

तुम्हीं हो सब कुछ मेरे श्याम !
तुमसे भिन्न न है कोई कुछ कहीं रूप या नाम ।।
जल थल अनल अनिल[1] नभ पाँचों तुम ही हो घनश्याम !
तुम ही सृष्टि तुम्हीं हो स्रष्टा, तुम ही सेवक-स्वामि ।।१।।
खेल-खिलाड़ी तुम हो प्यारे ! करते केलि ललाम ।
स्वयं ब्रह्मसे विविधविश्व बन बँधते स्वयं निकाम[2] ।।२।।
साधक बन तुम साधन करते, स्वयं साध्य सुखधाम ।
हो अभिन्न पर भिन्न रूप हो भजते आठों याम ।।३।।
भज-भज तुम निजको ही पाते, तज-तज निजको श्याम !
उपादेय अरु हेय सभी तुम, रमे सभीमें राम ! ।।४।।
तुम्हें छोड़ हम भजें तुम्हींको तुम्हीं-रूप हो श्याम ।
तुमसे भिन्न न गया-मिला कुछ, हुआ खेल अभिराम ।।५।।

---

१. वायु । २. निष्प्रयोजन ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सारका सार ॥१८२॥

राम भीमपलासी, तीन ताल ४-४-१९७३

प्रेम ही सकल सारको सार।
पै वह सफल होय तब ही जब होय स्याम सों प्यार ॥
स्याम बिना निःसार सब हि हैं, स्याम सब हि के सार।
कनक विना ज्यों होय न भूसन, त्यों हरि सर्वाधार ॥१॥

यासों भजै सदा हरि ही कों, हरि बिनु सब ही छार।
हरि ही प्रेम प्रेम ही हरि हैं, दोउ एक अविकार ॥२॥

हरि बिनु सकल मृषा ही भासत, मनहुँ सुपन-संसार।
तासों प्रीति किये का मिलिहै, जिमि मरुथल को वारि ॥३॥

यासों सदा भजहु मन! माधव, जानि सार को सार।
सार मिले सब ही मिल जइहै, नतरु होय अति ख्वार ॥४॥

मनकी पीर ॥१८३॥

राग वागेश्री, तीन ताल १३-४-१९७३

मनकी पीर मनहि में सहिये।
प्रीतमकी यह निधि अति दुरलभ, मनमें राखि मौन ह्वै रहिये ॥
मन जाने, जाने मनमोहन, तीजेसों कहि का फल लहिये।
अपनी वात सुने अपनो ही, और हि सुना हँसी करवैये ॥१॥

बिना पीर प्रीतम मिलिवे को रस हुँ पाय कोउ का सुख पैये।
मिले हुए हूँ जो अनमिल-से पीर हि सों तिनकों प्रगटैये ॥२॥

जदपि दारु[1] में रहत अनल नित, तदपि बिना घर्सन[2] कब पैये।
तैसे ही निज हृद्‌गत प्रीतम विरह-व्याथा विनु कत प्रगटैये ॥३॥

---

१. लकड़ी। २. रगड़।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पिया-विरह की पीर पिया सम है रस रूप, न सो बिसरैये।
विरह-मिलनके रसमें रचि-पचि रसस्वरूप ह्वै रसनिधि पैये ॥४॥
यासों सदा पीर ही भजिये, पीर हि सों प्रीतम-पद[1] पैये।
प्रीतम पाय अपनपौ परिहरि प्रीतम-प्रीतिमात्र ह्वै रहिये ॥५॥

अभिलाषा ॥१८४॥

राग विहाग, कहरवा १४-४-१९७३

मो मन सुन्दर स्याम वसै।
उरमें छिटकै स्याम-छटा नित, बाकी सबै खसै॥
सरसै स्याम-सुधा ही सन्तत, विषय-विकार नसैं।
स्यामा-स्याम जुगलवर रुचिसों रहसि-रहसि विलसैं ॥१॥
रसना रसै जुगल-जस-रस नित, स्रवननि बेनु बसै।
करकी साध सधै तब ही जब प्रीतम-पद परसै ॥२॥
रहै न उरमें आस-त्रास कोउ, प्रीति-सुधा सरसै।
जुगल जोतिके दरस-परसकों नैना नित तरसैं ॥३॥
कहा कहूँ कछु कहत बनत नहिं, उर यह लगन लसै—
प्रीति-पियूस पियत यह मन नित पियन हि कों तरसै ॥४॥

(१८५)

राग यमन, तीन ताल १४-५-१९७३

मोहि सखि ! हरि-दरसनको चाव।
और भाव कोउ उठत न मनमें, निसि-दिन यही उम्हाव ॥

---

१. प्रियतम के चरण। २. हट जाय, दूर हो जाय।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रीति-रीतिको ग्यान-भान नहिं, हिये न भाव-प्रभाव।
कैसे दरसन होय स्याम को, अति ही मन्द स्वभाव ॥१॥

साधन-आराधन कछु नाहीं, परी भंवर में नाव।
कैसे उबरि पियासों भेटहुँ, मिले प्रीतिको ठाँव ॥२॥

विरह-व्यथाको अनल प्रबल हिय सालत सहज स्वभाव।
सीचहिं स्याम नेहु-नीरद ह्वै, तो सब बनहि बनाव ॥३॥

होत उमाह बांह भरि भेटहुँ, मिटै विरह को ताव।
विरह-मिलन में मिलन सदा हो, बाढ़ै प्रीति-प्रभाव ॥४॥

प्रीतम बिनु कछु और न भावै, रहै न और लगाव।
सबमें प्रीतमहीकों निरखों, आपुन होय अभाव ॥५॥

(१८६)

राग हमीर. तीन ताल २२-५-१९७३

मनमें यही चटपटी लागी।
कबहुँ कि नवल जुगल-छवि निरखहिं ये नयना बड़भागी ॥
विचरहिंजब दोउ रसिक विपिनमहँ, चुनहिं पुहुप रस-भीने।
हौं हूँ तिनकी अनुगामिनि ह्वै चलि हों उर अनुरागी ॥१॥
तरुवरमें कोउ सुभग सुमन[1] ह्वै जुगल-सुमन[2]-मन दीन्हें।
पानि[3] परस पा प्रिया पीवको होउँ प्रीति-रस-पागी ॥२॥
सुमन-सिंगार करहिं जब दोउ मिलि, हौं सुगन्ध-सुख-भीनी।
छकि हों वदन-सरोज-सुधारस अलिनी ह्वै रस-रागी ॥३॥
ह्वै वनमाल दोउनके उर पै लटपटाय सुख-सानी।
अंकमाल[4] अनुभवि हों रुचि-रुचि अधिक-अधिक रस पागी ॥४॥

---

१. पुष्प। २. सुन्दर मन। ३. पाणि, हाथ। ४. आलिंगन।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अञ्जन ह्वै नित नैननि विलसहुँ, पायल ह्वै पग परसूं।
जा थल पै पग धरहिं जुगल वर रज ह्वै रहुँ पग लागी ॥५॥
होत हिये उमाह पल-पल यह, पग-जावक ह्वै विलसूं।
सकल विषय-विष त्यागि जुगल-रति लीन रहूँ रस-रागी ॥६॥

ललक ॥१८७॥

राग वहार, तीन ताल २७-५-१९७३

स्याम ! तोहि नैनन ही में राखूं।
पलक-कपाट ढाँपि वन्दी करि,
काहूसों यह मरम न भाखूं॥
तू जानै या जानै मो मन,
काहूसों कछु काम न राखूं।
मेरी-तेरी प्रीति पुरानी,
मन ही मन ताको रस चाखूं॥१॥
कैसी करूं, न मानत यह मन,
पुनि-पुनि दरस-परस कों माखूं[1]।
दूर-हि-दूर दुरत[2] तो प्रीतम !
कासों हियकी हुमकन भाखूं॥२॥
ललकत रहहिं सदा ये लोचन,
कैसे इनहिं स्ववस करि राखूं।
उड़ि-उड़ि जाहिं निभृत[3] निकुंज दिसि,
सो रस कहहु कहा कहि भाखूं॥३॥

१. बेचैन होती हूँ। २. छिपते हो। ३. एकान्त।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तरसि-तरसि सब वयस बितायी,
अब हूँ तरसत ही पथ ताकूं।
जो कहुँ मिलहु प्रानधन प्रीतम !
तो 'मैं' भूलि तुम हि कों राखूं ॥४॥

(१८८)

राग रागेश्री, तीन ताल ३१-५-१९७३

कोउ मोहिं स्यामा-स्याम मिलावै।
कहा करूँ, तरसूं तिनहीकों,
और न कछु सखि ! मोहिं सुहावै ॥
सुरति चढ़ी वह मधुमयि जोरी,
वाही कों मनुआं ललचावै।
ऐसी बसी न खसी पलहुँ कों,
पुनि-पुनि वाही की सुधि आवै ॥१॥
'राधे-राधे' रटूं रैन दिन,
'स्याम-स्याम' उरमें सरसावै।
भीतर स्याम राधिका बाहिर,
और कबहुँ कोउ वस्तु न पावै ॥२॥
जड़-चेतन सब भयो जुगलमय,
जुगल रसिक बिनु कछु न लखावै।
वही दृष्टि है वही सृष्टि है,
दृष्टि-सृष्टिको भेद न भावै ॥३॥
ध्यान-ध्यान को भान न है कछु,
प्रीतम ही यह रस सरसावै।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आपु हि खेल खिलारी आपु हि,
आपु हि देखि-देखि सचु पावै ॥४॥
जो कछु हो सो रहै सखी री !
मोकों जुगल जोति ही भावै ।
स्यामा-स्याम-सनेह सन्यो चित
दरस-परस ही कों ललचावै ॥५॥

स्याम-दिवानी ॥१८६॥

राग पूरिया, तीन ताल ६-६-१९७३

स्याम बिनु कैसे सखी सरै ।
चित्त-वित्त चख[1] चोरि चुरायो, कैसे चैन परै ॥
मैं निज दसा दुरायी बहु विधि, जगसों जिया डरै ।
तदपि न बात रही कोउ छानी, अब विधि कहा करै ॥१॥
तो सों कहा दुराऊँ सजनी ! धकपक हियो करै ।
आठों पहर चढ़्यो चित स्याम हि पलहुँ न कितहुँ टरै ॥२॥
जित देखूँ दीखत तित सोई, कानि न कबहुँ करै ।
नैन नचाय मैन-सर[2] मारै, चितको चैन हरै ॥३॥
मैं तो मरूँ मार[3] की मारी, पल हूँ कल न परै ।
कहो, कहा यामें बस मेरो, अबला कहा करै ॥४॥
अबला हूँ अबला ही रहि हों बलसों कहा सरै ।
है बलबीर[4] बीर ! बल मेरो, सोई कर पकरै ॥५॥

---

१. नेत्र । २. काम-बाण । ३. कामदेव । ४. बलदाऊजी के भैया ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(१९०)

राग भैरवी, ताल कहरवा १२-६-१९७३

स्याम बिनु पल हूँ कल न परै ।
मैं तो भई स्यामकी सब विधि, अब को कहा करै ॥
तनमें स्याम, स्याम ही मनमें,
स्याम हि सखी ! बसै जन-जनमें,
स्याम सदनमें, स्याम विपिनमें ।
जित देखूँ तित ही तित सजनी! स्याम हि स्याम फुरै ॥१॥
यह मन भयौ स्याम-रस-लोभी,
निज जन, स्याम मिलावै जो भी,
अपनो और कहूँ न कोउ भी ।
जनम-जनम मैं चेरी ताकी जो प्रिय प्रगट करै ॥२॥
सदा-सदाकी साध हमारी,
इन नयनन निरखूँ गिरिधारी,
पिया-हीन जीवन सखि ! भारी ।
कहा करूँ, कित जाउँ, स्याम बिनु चित्त न चैन परै ॥३॥
तरसि-तरसि सब वयस सिरानी,
प्रीति-प्यास अबलौं न बुतानी,
सखि ! कासों यह कहौं कहानी ?
रहे लाज तब ही जब मोहन मेरो कर पकरै ॥४॥
टेरत-टेरत बहु दिन बीते,
अजहुँ प्रान हरि-रति-रस रीते,
प्यारे ! मैं हारी तुम जीते ।
पै तुव पतित-उधारन प्रन अब को परतीत करै ॥५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(१९१)

राग काफी, ताल दीपचंदी १३-६-१९७३

सखि ! मोहिं प्रीतम टेरि बुलाबत है री !
मैं मदमाती अपनें पियाकी, और न कछु मोहिं भावत है री ॥

मैं जानूँ मेरे प्रीतम जानें प्रीति पुरानी हम पहिचानें।
मानें कोऊ वा नहिं मानें, हमें न और सुहावत है री ॥१॥

बंसी में वह मोहिं बुलावै, टेरि-टेरि मो नाम सुनावै।
मोहिंन सखि! अब धीरज आवै, जियरा भरि-भरि आवत है री॥२॥

सगे-सँगाती मोहिं सतावैं, बोलि बोल बहु भाँति चिरावैं।
कुल-कलंकिनी मोहिं बतावैं, पै यह हियो न मानत है री ॥३॥

कहाँ करूँ बस रह्यो न मेरो, फिरत नाहि यह मन अब फेरो।
सब तजि भयो स्यामको चेरो, स्यामहि स्याम सुहावत है री ॥४॥

लालसा ॥१९२॥

राग पूर्वी, ताल दादरा २०-६-१९७३

रहै नहिं प्रानन हूँ को मोह।
अनुदिन प्रीति बढ़ैं तुम हीसों, रहै तिहारो छोह[१] ॥
तन-मन हूँ की रहै न सुधि-बुधि, तुममें रति मति पोह[२]।
लाभ-हानिकी होय हानि, हिय प्रीति-लाभ तब सोह ॥१॥

सबमें निरखूँ प्रीतम तुमकों, रहै न सबकी टोह[३]।
तुम ही तुम बस रहो प्रानधन ! हुलसूँ तब छवि जोह[४] ॥२॥

---

१. अनुग्रह। २. प्रवेश। ३. खोज, देख-भाल। ४. देखकर।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सब हूँ अपने ही करि भासें, कहूँ न भासै मोह।
जो कछु करों होय तब अर्चा[1], स्नेह-सुमन संजोह[2] ॥३॥
प्रीति-प्रतीति रहै सब हीमें, काहू सों नहिं द्रोह।
सबमें तुम सब ही तुम प्यारे ! फिर क्यों कापै कोह[3] ॥४॥
कहा करों न सुहाय और कछु, भयो तुमहिसों मोह।
अनुदिन बढ़ै मोह यह मोहन ! मोह न यह तव छोह ॥५॥

(१९३)

राग पूरिया, तीन ताल १५-४-१९७३

सखि ! मैं एक हि साध मनाऊँ।
सेऊँ ललन-लली-पद-पंकज—ऐसो औसर पाऊँ॥
अमल-कमल सम निरखि सिहाऊँ, नयन-नीर अन्हवाऊँ।
नव नवनीत[4]-सरिस अति कोमल, कर परसत सकुचाऊँ ॥१॥
पै रुचि पाय प्रिया-प्रीतमकी लै उछँग[5] सचु पाऊँ।
आंजू पद-पराग अँखियनमें, उर अनुराग उम्हाऊँ ॥२॥
जावक रचि कर करहुँ कृतारथ, मनि नूपुर पहिराऊँ।
नख-मनिकी अनुपम आभासों, सखि ! मन-तमहिं नसाऊँ ॥३॥
पौढ़ें जुगल सुमन-सैया पै, मैं छवि निरखि सिहाऊँ।
पग-परिचर्या करों चोजसों[6], करि-करि हिय हरसाऊँ ॥४॥
कहा करूँ, कैसे करि ऐसो सुभ सुहाग सखि ! पाऊँ।
कृपा करहिं जब जुगल रसिकवर तब यह आस पुराऊँ ।५॥

---

१. पूजा। २. सँजोकर, सजाकर। ३. क्रोध। ४. मक्खन। ५. गोद। ६. शौक।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(१६४)

राग भैरवी, ताल कहरवा 						१८-४-१९७३

अब मोहिं एक हि लगन लगी।
कब निरखूँ वह अमल नवल छवि, जाने नजर ठगी ॥
बौरी-सी मैं भई तबहिंसों, जब वह जिये जगी।
अब न सुहात और कछु सजनी ! मैं तो स्याम ठगी ॥१॥
पल-पल होत विकल मन मेरो, मानहुँ अनल लगी।
कैसे करूँ, जाउँ कित आली ! दीखत कोउ न सगी ॥२॥
आओ, आओ, प्राननाथ ! कित एती देर लगी।
अपनीकों अपनाबहु प्यारे ! मैं तुव प्रीति-पगी ॥३॥

मुग्धा ॥१६५॥

राग अहीर भैरव, तीन ताल 						८-५-१९७३

मोहिं सखि ! स्याम हि स्याम सुहावै।
स्याम-पियामें अटक्यो यह मन इत-उत कतहुँ न जावै ॥
स्याम हि मेरो जीवन-जीवन, स्याम हि जिया जुड़ावै।
पलक ओट जब होत स्याम तब पल-पल मन अकुलावै ॥१॥
वह अलकें वह झलकें तिनकी मनकों ललक लगावैं।
वह चितवन वहमुसकनकीमधुचख-चख'चख'चकरावैं ॥२॥
मोर-मुकुट की वह झकझोरन निरखि प्रान अकुलावैं।
लटकि-लटकि वह चलन ललनकी तनकी तपन बढ़ावै ॥३॥

---

१. चख-चखकर। २. नेत्र।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नूपुरकी वह रुनझुन-रुनझुन सुनि-सुनि स्रवन सिहावैं।
नर्त्तनकी मटकन पद-पटकन मनमें मदन जगावैं॥४॥

कहा करूँ कैसे मन मारूँ, तन-मन कछु न दुरावैं।
देखि-देखि यह दसा अटपटी, सँगकी सजनि चिरावैं॥५॥

(१९६)

राग भैरव, तीन ताल २१-५-१९७३

मनुआँ स्याम हि स्याम रटै[1]।
स्याम-पियामें अटक्यौ यह मन इत-उत छिन-पलहूँ न टरै॥
नयन बानकी बीधीं बिलखूँ, निसि-दिन पल हूँ कल न परै।
स्याम-दिवानी भई सखी! मैं, कहो कहा कुल कानि करै॥१॥

नैननमें वह छई छैल-छवि, अब का की उत दार गरै।
स्याम रूपही भयौ सकल जग, दिसि-दिसि स्यामहि दीख परै॥२॥

जब छिन हूँ मन जात इतै-उत, तबहि विरहसों जिया जरै।
स्याम-सुधासों छक्यौ हियो यह, अब जमसों कहु कौन डरै॥३॥

स्यामहि मेरे तन-मन सरवसु, स्याम-सुधा उर-अजिर[2] झरै।
जबसों स्याम बसे मो मनमें, उन बिनु मोहिं न पलहु सरै॥४॥

प्यास ॥१९७॥

राग ललित, तीन ताल २३-५-१९७३

नयना जुगल-रूप-रस-प्यासे।
स्यामा-स्याम-सरूप-सुधा बिनु सन्तत रहहिं उदासे॥
जुगल-जोतिकी जगी हिलग हिय, पल-पल तासों त्रासे।
सलभ सरिस तित ही तित धावहिं, फिरहिं न पाय निरासे॥१॥

---

१. गुनगुंनाता है। २. आँगन।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुलबुलाहिं अकुलाहिं न पावहिं, जावहिं-आवहिं ज्या¹-से ।
पुनि-पुनि वारि-बान वरु² मोचहिं³, तो हूँ रहहिं निरासे ॥२॥

भये चकोर वदन विधु-बरके, होहिं न कबहुँ सुपासे ।
ललकत ही ललकत दिन बीतहिं, बींधे जुगल अदांसे ॥३॥

अलक-अलंकृत मुख-मयंककी सुधिमें फँसे सदासे ।
पै फँसिवो ही रह्यौ सेस, नहिं विकसे दरस-सुधासे ॥४॥

प्यासे ही प्यासे मरि हैं अब, कहा कहिय कहु कासे ।
अपुने ही जब भये बिराने, कैसे पलटहिं पासे ॥५॥

लगन ॥१६८॥

राग सारंग, तीन ताल २४-५-१३७३

अब तो स्याम हि सों लौ लागी ।
स्याम बिना अब कछु न सुहावै,
स्याम–जोति जिय जागी ॥
स्याम हि मेरो तन मन धन है ।
स्याम हि साध्य स्याम साधन है ।
स्याम-सुधा छकि मनहुँ मगन है ।
स्याम-स्वरसमें मो मति पागी ॥१॥
जित देखूं तित स्याम लखावै ।
स्याम बिना अब कछु न सुहावै ।
मो मन सतत स्याम गुन गावै ।
स्याम-प्रीतिकी जागी आगी ॥२॥
कहा करों जाऊँ कित आली !
कैसे मिलै मोहिं बनमाली ।

---

१. धनुषकी डोरी, प्रत्यञ्चा । २. भले ही । ३. घोड़े ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उन बिनु लागत खाली-खाली।
मिलन-लगन मो मन अब लागी ॥३॥

मोहनकी वह बाँकी झाँकी।
मो मन-पटल अटल ह्वै आँकी।
नयननि निरखूँ वह छवि बाँकी।
यही आग मोरे मन जागी ॥४॥

आओ, आओ प्रीतम प्यारे!
नयना भये चकोर तिहारे।
अति आकुल बिनु वदन निहारे।
दरस दान दै करहु सुभागी[1] ॥५॥

प्यारे! कैसे तुमहिं मनाऊँ।
कैसे दरस-परस-रस पाऊँ।
आओ प्रिय! मन-भवन बसाऊँ।
उरसों सकल आस अब भागी ॥६॥

(१६६)

राग शुद्ध सारंग, ताल दीपचन्दी १८-६-१९७३

जाहि लगन ललनकी लागै।
ताको मनन चलन कछु और हि, जो देखै अनुरागै ॥
ताहि सुहायनाहिं परचरचा, विषय-व्याधि सब भागै।
तन मनकी रति रहै न नैकहुँ, तन-मन हरिमें लागै ॥१॥

होय चित्त उपरत सब होसों, प्रिय-रति रसमें रागै।
प्रीति-पियूस पागि हूँ पल-पल प्रीति-भीख ही माँगै ॥२॥

१. सौभाग्यशालिनी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

खान, पान, बतरान न भावै, सुरति स्यामसों लागै।
स्याम-सुधाकी प्यास निरन्तर पी-पीके हूँ जागै ॥३॥
रैन न नींद न जागत हूँ कल, पलक कलपसम लागै।
दरसनकों तरसें नित नैना, मिलन-जुलन सब त्यागै ॥४॥
भुक्ति-मुक्ति की युक्ति न भावै, भक्ति-भाव अनुरागै।
नाम-खुमारी रहै निरन्तर, अन्तर सुमिरन जागै ॥५॥
रहै अपनपो कहूँ न नैंकहु, प्रियतम हो निज लागै।
'मैं-मेरे' को मोह मिटै उर प्रीति-पदारथ पागै ॥६॥

आत्मीयता ॥२००॥

राग मल्हार, ताल दीपचन्दी १५-५-१९७३

श्याम ! मैं तेरी, तेरी, तेरी।
जैसी हूँ तेरी हूँ प्यारे ! छोड़ो हेरा-फेरी ॥
तूने ही यह गढ़ी-मढ़ी है, कुछ करतूत न मेरी।
जैसी है अपनानी होगी, सदा-सदाकी चेरी ॥१॥
है नगण्य, गुणहीन, दीन अति केवल अघकी ढेरी।
पर अपना है यहाँ न कुछ भी, जैसी भी है तेरी ॥२॥
अपनाओ चाहे ठुकराओ, बने न बिगड़ै मेरी।
आय पड़ो तेरी पौरी पै, लगा न प्रियतम ! देरी ॥३॥
कहाँ जाय, तुम बिन न कहीं कुछ, सब कुछ लीला तेरी।
यह भी है लीलाकी नटिनी, कुटिला करनी मेरी ॥४॥
जैसी श्याम करायी तूने, रही भूमिका मेरी।
सूत्रधार तो सदा तुही है, मैं कठपुतली तेरी ॥५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(२०१)

लावनी, ताल दादरा २९-५-१९७३

सखि री ! सब लगन गयीं, यहै छकनि छाई—
मेरे स्याम, मेरे स्याम, मेरे स्याम माई !
स्यामकी गुलाम भई, सब कछु बिसराई।
स्याम बिना मोहिं और कोउ न सुहाई।
दिवस-रैन नाहिं चैन, यही लौ लगाई —
मेरे स्याम, मेरे स्याम, मेरे स्याम माई ।।१।।
मात-तात भात नाहिं, बात का सुहाई ?
लोक-लाज गाज परी, साज सब भुलाई।
छूट गये नेह-गेह, चित्त यही भायी —
मेरे स्याम, मेरे स्याम, मेरे स्याम माई! ।।२।।
मोह द्रोह कोह नाहिं, छोह हूँ भुलाई।
ममताकी मौत भई, समता हिय छाई।
कामको न नाम रह्यौ, यही मत सुहाई —
मेरे स्याम, मेरे स्याम, मेरे स्याम माई! ।।३।।
सरवसु सब भूल गई, सरवसु हरि पाई।
अपुनो कछु रह्यौ नाहिं हरिकों अपनाई।
लागी इक लगन हिये, रटन यही भायी —
मेरे स्याम, मेरे स्याम, मेरे स्याम माई! ।।४।।

(२०२)

राग काफी, ताल धमार ३०-५-१९७३

काहू की बरजी न रहूँगी।
मोकों कहा काम काहू सों, अपनेकी अपनी ही रहूँगी ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लोग चिरावें बोल बोलिके, मैं काहू की कछु न सुनूँगी ।
मोसों कहें कोउ कुलनासी, मैं फाँसी हूँ सों न डरूँगी ॥१॥
अब लौं बहुत सुनी मैं इनकी, अब सुनि-सुनि मैं कहा करूँगी ।
इनकी सुनि बिछुरी प्रीतमसों, अब भूलि हूँ इनकी न सुनूँगी ॥२॥
जनम-जनमकी हिलग हियेकी, पिया मिले अब सफल करूँगी ।
भटकि-भटकि मैं भई बाबरी, अब क्यों ऐसी विपति सहूँगी ॥३॥
प्रीतमकी मैं सदा दाहिनी, अब क्यों उनसों कुटिल बनूँगी ।
पाँव पलोटि रिझाय पियाकों रसिकरायके रस विहरूँगी ॥४॥
मेरी उनकी प्रीति सदाकी, तामें कोउ न अनीति सहूँगी ।
उनकी होंउनकीही ह्वै अब, उनसों मिलि निज हूं बिसरूँगी ॥५॥

(२०३)

राग काफी, ताल धमार ३१-५-१९७३

सखी री ! मैं सदा-सदा सों स्यामकी ।
स्याम हि मेरे प्रान प्रानधन, और न काहू कामकी ॥
स्याम बिना मेरो और न कोऊ, मैं न काहुके कामकी ।
मेरे तो सरबस बस वे ही, मैं हूँ अपने स्यामकी ॥१॥
देह गेह सों नेह न मेरो, सुचि सनेह मैं स्यामकी ।
स्याम बिना यह देह खेह है, केवल पुड़िया चामकी ॥२॥
स्याम हि मेरो सगो-सँगाती, मैं मदमाती स्यामकी ।
स्याम हि की मैं जोति जगाती, जैसे वाती धामकी ॥३॥
स्याम हि मेरो साँचो नायक, मैं पद-पायक स्यामकी ।
ज्यों वह चाहे त्यों मैं नाचूँ, मैं कठपुतली स्यामकी ॥४॥
स्याम-प्रीतिही नीति हमारी, और नीति नहिं कामकी ।
इति-भीतिको काम कहा अब, प्रीतिमात्र मैं स्यामकी ॥५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तन्मयता ॥२०४॥

राग दरबारी, कहरवा २८-५-१९७३

मैं तो स्याम हि के रँग राची री !
स्याम हि मेरो प्यारो प्रीतम, और बात सब काची री ॥
स्याम-सुधा पी भई बावरी, अद्भुत रसमें राँची री ।
स्याम-रँगमें रँगी रंगीली, स्याम-पिया सँग नाँची री ॥१॥

स्याम-प्रीतिकी ओढ़ चूनरी स्याम-पिया ढिग जाती री ।
स्याम-मिलनकी हिलग हियेमें, बात न और सुहाती री ॥२॥

स्याम हि मेरो सगो-सँगाती, स्याम हि मो मन बासी री ।
स्याम हि मेरो स्वामि सदासों, स्याम हि की मैं दासी री ॥३॥

स्यामहि तनमें स्यामहि मनमें, स्याम सदनमें पाती री ।
स्याम बिना कछु और न जानूँ, स्याम प्रीतिमें माती री ॥४॥

स्याम-पिया सँग हिल-मिल खेलूँ—यही धूम मन माची री ।
स्याम-रँगीलो, स्याम-सजीलो, स्याममयी मैं साँची री ॥५॥

(२०५)

राग मल्हार, तीन ताल २९-५-१९७३

मोहिं सखि ! स्याम हि की सुधि आवै ।
और सबहि भूली मैं सजनी ! स्याम हि उरमें धूम मचावै ॥
घरके काम-काज सब छूटे, ननदी दिन-दिन मोहिं चिरावै ।
मैं का करूँ स्याम-दृग-बींधी, ठाड़ो-ठाड़ो नयन नचावै ॥१॥

लोग कहें तू भई है बावरी, नैंकहुँ तोकों कानि न आवै ।
मेरी पीर न जानत है कोउ, दोउ ओर की लाज सतावै ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्याम सुधाकी तृषा अनूठी, कैसे मन वह रस बिसरावै।
बूढ़े-बड़े कहा यह जानें, याते इनकी मति भरमावै ॥३॥
मैं उनकी वे मेरे सजनी ! लोक बापुरो समुझि न पावै।
याहीसों या प्रीति-रीति की नीति न वाकी मतिहिं सुहावै ॥४॥
मैं तो बसूँ पियाकी नगरी, जहाँ लोक की गन्ध न आवै।
अजर-अमर वह पुरी प्रीतिकी, कैसे करि कोउ मोहिं डरावै ॥५॥

(२०६)

राग मल्हार, ताल तिलवाड़ा ३१-५-१९७३

स्याम बिनु और न कछु मैं जानूँ।
स्याम-पियाके रसके बस ह्वै,
और सब हि रस कुरस बखानूँ॥
जबसों स्याम मोहिं अपनायी,
काहू की कोउ कानि न मानूँ।
सदा स्याम-रसमें मदमाती,
कोउ न सगो-सँगातो जानूँ ॥१॥
सबसों तोरि स्याम सों जोरी,
जोरी स्यामा-स्याम प्रमानूँ।
वह ही मेरी प्रान-जीवनी,
ताहीकी रति में रति मानूँ ॥२॥
मति-गति फँसी स्याम-स्यामामें,
और सुमति वा सुगति न जानूँ।
चरन-किंकरी मैं उन ही की,
उनहीकी मतिमें मति ठानूँ ॥३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कहा भई, कैसे भई सजनी !
यह लीला मैं कहा बखानूँ।
उनकी हूँ जैसी उन कीन्हीं,
ताहीमें सुहाग निज मानूँ ॥४॥

वे मेरे मैं उनकी अपनी,
और न कछु रस-कस मैं जानूँ।
सदा-सदा यह रीति हमारी,
और न नीति-भीति कछु मानूँ ॥५॥

(२०७)

राग सोहनी, तीन ताल ७-६-१९७३

मन तू श्याम-श्याम ही गा रे।
श्याम हि तेरा साँचा प्रीतम, उससे नेह लगा रे॥
यह सब जग है थोथी माया। साँचा श्याम, जगत है छाया।
श्याम-भजन ही को तू आया। श्याम हि में लौ ला रे! ॥१॥

यह जग है बस झूठा सपना। यहाँ न है कोई भी अपना।
सब तज एक श्यामको अपना। श्याम-प्रीति-रस पा रे! ॥२॥

श्याम-सुधा ही साँचा धन है। कोरी माया तन मन धन है।
श्याम बिना कोई न स्वजन है। श्याम हि से रति ला रे! ॥३॥

छोड़-छोड़ यह काया-माया। श्याम-स्नेहमें सदा समाया।
ना कुछ खोया ना कुछ पाया। जो तू स्याम समा रे ॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रणय-कलह ॥२०८॥

राग सोहनी, तीन ताल

१-६-१९७३

अब मैं रारि तुमहिं सों ठानी।
जब सों चरन गहे मनमोहन ! बात न दूजी जानी ॥
तुम्हरो ही ह्वै रह्यौ सदा मैं, करी न आना-कानी।
साधन-सिद्धि न चही दूसरी, तुम ही सों रति मानी ॥१॥
पै का टेव परी यह तुमकों, दीखत बड़े गुमानी।
दूर हि दूर दुरावत हो नित, मैं आयो नकवानी[1] ॥२॥
मैं तो प्रीति-रीतिको प्यासो, चहूँ न दूजो पानी।
मान-गुमान दान तुम दीन्हों, यह का मोसों छानी ॥३॥
मनसों विषय-बवाल न छूट्यो, मिटी न आनी-जानी।
अबहुँ बस्यौ व्योहार हियेमें, सुपने रहत न छानी ॥४॥
कब लगि ऐसे डहकाओगे[2], हे मेरे दिन-दानी[3]।
मोहिं न और ठौर है दूजो, कासों कहों कहानी ॥५॥
अपनो हूँ कछु रह्यौ न मो पै, मेरी लाभ न हानी।
तुम्हरे जनसों हूँ जग जूझे–यही एक उर कानी[4] ॥६॥

(२०९)

राग धनाश्री, तीन ताल

१४-६-१९७३

सखि री ! स्याम-कथा जनि[5] कहिये।
वाकी कथा व्यथा उपजावत, यातें मौन हि रहिये ॥

---

१. तंग होना, नाक में दम आना। २. धोखेमें रखोगे। ३. नित्यप्रति देनेवाले। ४. कानि, संकोच। ५. मत।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बातन ही सों ठगी सखी ! मैं अकी-जकी[1]-सी डोलूँ ।
निसि-दिन मरूँ विरह की दाझी, कैसे आग बुझैये ॥१॥

हाय दई ! का भई, गई मति, मैं बौरी गति भूली ।
पीर हि पीर पिरात[2] हियेकों, कैसे धीर धरैये ॥२॥

अब का करूँ न बात बनी कछु, सतत खनत[3] ही बीती ।
कोरो खनन हाथ सखि ! आयो, नीर न अब लौं पइये ॥३॥

ऐसो निठुर नन्दको ढोटा, चितवन चारु चलावै ।
फँद फँसाय बात नहिं पूछै, फँसी-फँसी फरकैये ॥४॥

बहुत कही अरु सुनी सखी ! यों सुनत-कहत वय बीती ।
अबकछु वो हूँ कहै-सुनै तो कहन-सुनन फल पइये ॥५॥

हृदयकी बात ॥२१०॥

राग मालकोस, तीन ताल १-६-१९७३

बात हिये की कासों कहिये ।
ऐसो को दरदी या जगमें, जाकों अपनी व्यथा बतइये ॥
मरमी ही सब मरम समुझिहै, अरसिककोंका कवित सुनइये ।
अरसिकसों रसकी चरचा करि व्यर्थहि जगमें लोक हँसइये ॥१॥

जाहि न चाह प्रीति-पथकी कछु, तासों कहा राह कोउ पइये ।
प्रीतम प्रीति-पारखी साँचो, तासों कैसे प्रीति छिपइये ॥२॥

बिना कहे हूँ सो सब जाने, वाकों कहि-कहि कहा बतइये ।
जो कछु करै-करावै ताकी हाँ-में-हाँ ही सदा मिलइये ॥३॥

है उदार-चूड़ामनि प्यारो, तासों प्रीति पुनीत निभइये ।
प्रीतिपुनीत पायपुनि रचि-पचिप्रीतमहीकीरति[4] ह्वै रहिये ॥४॥

१. घबराई-सी । २. पीर होना । ३. खोदते हुए । ४. प्रीति ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सकल सार को सार यही है, सब असार तजि सारहि गहिये ।
सारासार-विचार पार करि स्यामा-स्याम-प्यार ही पइये ॥५॥

प्रीति-प्रार्थना ॥२११॥

राग मारू विहाग, तीन ताल १७-६-१९७३

प्रीति बिनु प्रियतम ! प्रान पिराने ।
सदा-सदाके तुम ही अपने, सोऊ लागन लगे बिराने ॥
छाई जड़ता-सी नित जिय पै, वृथा वासना जनु घनु ताने ।
जिनसों कबहुँ न निजता सम्भव, तेही सब निज जन करि मानें ॥१॥
माया मोह और ममताकी प्रभुता सदा बुद्धि-बल भाने[1] ।
विषय-वासना, कुटिल-कामना दोऊ दल चित-वित्त लुटाने ॥२॥
कहा कहों, अति विसम विपति यह, तुमसों स्याम रही का छाने[2] ।
फिर क्यों विलम करत हो प्रीतम ! हौं तो आय गयो नक-बाने[3] ॥३॥
मैं हों तुम्हरो सदा-सदासों, भले मरम यह चित्त न जाने ।
विसम व्यथासों व्यथित भई यह मति आई अब स्याम ! ठिकाने ॥४॥
बिनु पद-पंकज-प्रीति भीति यह कैसे हूँ नहिं नाथ ! नसाने ।
यातें कृपा करहु करुनानिधि ! निज जनकों निजता करि दाने ॥५॥

अनुरोध ॥२१२॥

राग भैरवी, ताल कहरवा १८-६-१९७३

लौने ललन-ललीकी सुखमा
निरखि-निरखि निरखत ही जइये ।

१. दवा देती है । २. छिपी हुई । ३. तंग हो गया ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चरन-सरन करि वरन तिनहि की,
ताही लगन मगन मन रहिये ॥१॥

स्यामा-स्याम-सनेह-सुधा छकि
ताहि छकनि की लगन लगइये ।
प्रीति-पियूस पान करि-करि हूँ
ता ही की नित तृषा जगइये ॥२॥

राधे-राधे रटहु निरन्तर,
रटत-रटत कब हूँ न अघइये ।
कृष्ण-कृष्ण कहि-कहि हूँ प्रतिपल
कृष्ण नाम ही में रत रहिये ॥३॥

जुगल-कृपा अनुभव करि-करि हूँ
कृपा-कोर नित जुगवत[1] जइये ।
प्रीतमकी परिचरियामें रहि
प्रीतम-विरह दुसह नित सहिये ॥४॥

सुख-दुख सबहि जानि प्रियकी रुचि,
जो कछु मिलै ताहि सिर धरिये ।
जन्त्रमात्र नित रहि प्रीतमके,
उनही की नित कृति अनुसरिये ॥५॥

अपनो है न कहूँ कबहूँ कछु,
उनही को सब हिये परखिये ।
सचमुच तो सब कुछ हैं वे ही,
सबमें उनही की छवि लखिये ॥६॥

---

१. देखते रहिये ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रीति-रस ॥२१३॥

राग देश, तीन ताल १-२-१९७३

प्रीति-रस पियत न प्रान अघावैं।
प्रीतम तजि न सुहात इन्हिं कछु, छकि-छकि हूँ अकुलावैं॥
जैसे उड़ि जहाजके पंछी पुनि जहाज पै आवैं।
मिलत न कहुँ विसराम वृथा ही स्रम करि-करि पछितावैं॥१॥
तैसे ही निज नाथ बिना नहिं प्रान चैन कहुँ पावैं।
भूलहुँ ते जब जाहिं इतै-उत भटकि-भटकि पछितावैं॥२॥
ललकि-ललकि लगि जाहिं उत हि नहिं सो छवि पियत अघावैं।
बिछुरत होंहि वियोग-विकल, पुनि मिलि-मिलि मिलन न पावैं॥३॥
मिलन-बिछोह होत यह पल-पल, अद्भुत रस सरसावैं।
रसकी रौर जदपि दोउनमें, तदपि न कबहुँ अघावैं॥४॥
बड़ी अटपटी रीति प्रीतिकी, जब यह प्यास सतावै।
पीनो ही नित सेस रहत, उर पियत न कबहुँ अघावै॥५॥

(२१४)

राग खम्माच, ताल दादरा २८-१-१९७३

प्रीतिमें अतिसय कबहुँ न भासै।
नहिं मध्याह्न न सन्ध्या कबहूँ, प्रातः नित्य प्रकासै॥
होत न 'अति'[1] अथवा 'इति'[2] कबहूँ 'अथ'[3] ही 'अथ' नित भासै।
ज्यों ज्यों बढ़ै अल्प ही लागै, नित्य नवीन प्रकासै॥१॥

---

१. वृद्धि, अधिकता। २. समाप्ति। ३. आरम्भ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

देस-भेस अरु धरम-करमसों कछु-कछु भाव विकासै।
सहयोगी ध्यानादिक हूँ, पै निजता प्रीति प्रकासै ॥२॥

सब कछु त्यागि भजै जो प्रीतम, अपनो कोउ न भासै।
रहै न कोउ अवलम्ब दूसरो, तब ही प्रीति प्रकासै ॥३॥

गुन-औगुन न दिखैं प्रीतममें, निजता ही नित भासै।
हानि-लाभ हूँ फुरैं न मनमें, तब ही प्रीति प्रकासै ॥४॥

बाती बनि नित जरै विरहमें, प्रिय-रति-तैल विकासै।
लगै लगन इकतार तबै उर दीपक-प्रीति प्रकासै ॥५॥

प्रीति-रीति अति अमल अटपटी, जहँ प्रगटै सो नासै।
प्रेमी होय प्रीति प्रीतमकी, प्रीतम नित्य प्रकासै ॥६॥

प्रेम-गली ॥२१५॥

राग भैरवी, इकताला ३-२-१९७३

पिया-मिलनकी चाह जगै उर, यही जीव की दशा भली है।
मिले हुए से मिलना चाहें, यही कहाती प्रेम-गली है ॥१॥

जग अपने-से कभी न मिलता, फिर भी उसे मिला ही मानें।
यही मोह है नरक-मूल, जो कभी न अपना अपना जानें ॥२॥

अपना प्रीतम अपनेमें हैं, उसे न जो अपना पहचाने।
यही घोर अपमान-विपद् है, जनको माया-मलमें साने ॥३॥

हो प्रपञ्चसे विमुख जीवकी जब प्रीतमसे लगन लगेगी।
तभी दूर होगा माया-मल, उरमें जीवन ज्योति जगेगी ॥४॥

मिला हुआ है अपना प्यारा, उससे कभी न हम बिछुड़े हैं।
उसे भूल विषयोंको पकड़ा, इसहीमें सब दुःख जड़े हैं ॥५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मिले हुएसे मिल जाना है, मिलकर भी मिलना ही चाहें।
इस तड़पनमें रस ही रस है, जिसे रसिकजन सदा सराहें ॥६॥
बाह्य जगत भीतर ले जाना जगमें माया-मोह कहाता।
भीतरके प्रियको बाहर लख पाना है प्रियताका नाता ॥७॥
सकल दृश्यसे दृष्टि मोड़कर जिन्हें ज्ञानिजन भीतर पाते।
प्रेम-पाशसे खिंचकर वे ही प्रेमीके सम्मुख आ जाते ॥८॥
मनमें रहे न जब जगका रस, अपनापन सबहीसे टूटै।
हो अनन्य ममता प्रीतममें, ज्ञान-ध्यानका भी रस छूटै ॥९॥
तभी ललक यह लगती उरमें, प्रीति-प्रवाह दिनोंदिन प्रगटै।
बढ़ता ही यह रहे निरन्तर, उरमें रसकी धारा उघटै ॥१०॥
है अद्भुत रस प्रीति-रीतिका, कभी न इससे जीव अघाता।
पीते-पीते प्यास न बुझती, पीते रहना ही नित भाता ॥११॥
प्रीतिमात्र रह जाता प्रेमी, अपनापन रसमें घुल जाता।
प्रेमी-प्रीतमका यह अद्भुत नित्य विहार न किसको भाता ॥१२॥

(२१६)

राग ब्रज-रसिया, कहरवा ४-५-१९७३

प्रेमगली अति बाँको, यामें सबकी पैठ न होय।
सबकी पैठ न होय, जाय इत जो कोउ सूरा होय ॥ए जी प्रेम०
जो करतलपै सिर धरै, तजै मान-अपमान।
प्रीतम ही को ह्वै रहै, पावै प्रीति-प्रमान ॥
पावै प्रीति-प्रमान प्रीति-पथ प्रविस सकै बस सोय ॥ए जी प्रेम०

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुखकी आसा छाँड़ि जो करै दुःखमें प्रीति।
प्रीतम-सुख ही सुख रहै-यही प्रीतिकी रीति ॥
यही प्रीतिकी रीति रहै नहिं अपनोसुख कहुँ कोय ॥ए जी प्रेम०

मिलते हूँ अनमिल रहै, सदा मिलनकी चाह।
पै जो प्रीतम ही चहै, सहै विरहको दाह ॥
सहै विरहको दाह, भले ही प्रान-पलायन होय ॥ए जी प्रेम०

प्रेमानल जा उर जरै, करै अपुनपौ छार।
रहै न प्रेमीको पतो, भासै केवल प्यार ॥
भासै केवल प्यार, प्यार ही प्रेमी जरिके होय ॥ए जी, प्रेम०

जरिवे मरिवे सों डरै, सो तो प्रेमी नाहिं।
जब जरिवो ही रस रहै, पैठे या मग माहिं ॥
पैठे या मग माहिं, तब हि यह प्रेमी-प्रीतम होय ॥ए जी प्रेम०

प्रीति-पुरी ॥२१७॥

राग यमन, तीन ताल ६-५-१९७३

प्रीति-पुरीकी रीति निराली।
चलत न नीति-भीति इत कोऊ,
रहत प्रीति की अद्भुत चाली ॥
रसिक रायको राज्य अनूठो,
मति-रति हैं तिनकी द्वै आली।
मतिकी गति इत चलत न कछु,
बस रति ही राजत सोभासाली ॥१॥
होत नीति-विपरीत रीति सब,
प्रीति ही की इत नीति निराली।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रसिकनकों रस ही रस भासत,
अरसिकनकी नहिं चलत कुचाली ।।२।।
रति-पोसक असत हुँ इत सत है,
रति-विपरीत न सत्य सुचाली ।
होत असुचिता हूँ सुचिता इत,
पोसे यदि वह प्रीति-प्रनाली ।।३।।
तरसनमें सरसन-रस राजै,
बिलखनमें मुसकन मद-हारी ।
होत कुटिलता सुभग सरलता,
झिड़कनमें हरसन हितकारी ।।४।।
बड़ी अटपटी रीति-प्रीतिकी,
मिलन-विरह हूँ की गति न्यारी ।
होत मिलनमें विरह-भ्रान्ति
अरु विरह माहिं हूँ मिलन-सुखारी ।।५।।
है वियोग, पै सोक न भासै,
राग रहत, नहिं काम कुचाली ।
मान होत, अभिमान न नेंकहुँ,
अहंसून्य सब करम-प्रनाली ।।६।।
भुक्ति-मुक्तिसो मुक्ति होत इत,
रहत नित्य अनुरक्ति निराली ।
है अन्तिम पुरुषारथ जद्यपि,
अपनी इत कोउ चलत न चाली ।।७।।
केवल सर्वत्याग ही बल है,
निरबल के बल हैं बनमाली ।
जिन पै कृपा होय प्रीतमकी,
ते पावहिं यह प्रीति-प्रनाली ।।८।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रीतिकी प्यास ॥२१८॥

राग पूरिया, तीन ताल १०-२-१९७३

प्रीतिकी प्यास न बरनी जाय ।
विष-सी विषम लगत अमृत-सी, प्यास हि प्यास सुहाय ॥
नाम न लेत कबहुँ बुझिवेकों, दिन-दूनी अधिकाय ।
प्रीतम मिले प्यास ही बाढ़त, बढ़ि-बढ़ि रस सरसाय ॥१॥

बिछुरे विषम व्यथा उर उपजै, विरहानल जरिजाय ।
होत असह्य तदपि प्रेमी नित जरिवेकों तरसाय ॥२॥

घटै न प्यास न घटै प्रीति-रस, पियत न कबहुँ अघाय ।
है अद्भुत यह रस रसिकनको अनुभवरूप अमाय ॥३॥

साधन-बाधनकी न यहाँ गति, चलत न कोउ उपाय ।
कृपा होय रसनिधिकी तब ही कोउ-कोउ यह रस पाय ॥४॥

सब कछु त्यागि भजै जब प्रीतम, तबहि प्यास प्रगटाय ।
प्यास बढ़ै प्रीतमकी करुना प्रीति-सुधा सरसाय ॥५॥

प्रीति-पियूष पगै जब प्रेमी, प्रेमीपन हु हिराय ।
प्रेमी-प्रीतम-भेद न भासै, प्रीतिमात्र रह जाय ॥६॥

सारको सार ॥२१९॥

राग सोहनी, तीन ताल ८-३-१९७३

प्रीति-रस सकल सार को सार ।
प्रीति बिना जीवन नहिं जीवन, मरन तुल्य निःसार ॥
अग-जग लोक-अलोक जहाँ जो, सबही प्रीति-विकार ।
सब रसरूप सबहि रस भासत, रस ही परमाधार ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रस ही प्रेमी रस ही प्रीतम, रस ही प्रीति-प्रचार।
केलि-कला रसरूप सबहि, बस रसमय सब व्यौहार ॥२॥

रस ही प्रीति, प्रीति ही रस है, रस-विलास संसार।
रसमय रास रच्यौ यह रसनिधि—यही सकल स्रुति-सार ॥३॥

सो रस दक्खिन-वाम रूप ह्वै क्रीड़त केलि अपार।
याहीसों भासत हित-अनहित लीला विविध प्रकार ॥४॥

पै सब है रस-केलि स्यामकी—यामें फेर न फार।
अस विचारि बस लखहु रसहि रस, त्यागि सकल अविचार ॥५॥

भेद-अभेद न खेद यहाँ कछु, अविगत[1] अतुल अपार।
सबको सब कछु, सबसों विरहित, सकल सार को सार ॥६॥

सदा अखण्ड अरूप एकरस, जो असेस[2]-आधार—
सो ही ह्वै अनन्तरस क्रीडत क्रीडा विविध प्रकार ॥७॥

जा उर परमतत्व यह प्रगटै, उघटै प्रीति अपार।
सो ही रसस्वरूप ह्वै सरसै, करै सुरस-संचार ॥८॥

---

१. अज्ञात। २. सम्पूर्ण, सबका।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(६)

विवेक-माधुरी

कैसे सुहाऊँ ।।२२०।।

राग भीमपलासी, तीन ताल 　　　　　　　　　　　१५-११-१९७२

स्याम ! मैं कैसे तुमहिं सुहाऊँ ।
गुन-गौरव ऐसो कछु नाहीं, जो तब सम्मुख आऊँ ।।
साधन सिद्धि रिद्धि कछु नाहीं, ज्यों-त्यों वयस बिताऊँ ।
प्रीति प्रतीति नीति नहिं मनमें, कैसे जोर जताऊँ ।।१।।

कबहुँ न आऊँ काम काहु के, निज सुख सदा मनाऊँ ।
स्वारथ-साधन में बय बीती, परमारथ दरसाऊँ ।।२।।

सब विधि दीन-हीन या जगमें, दीखत कोउ न ठाऊँ ।
यातें आय परचौ तब पौरी, तुव गुनगन ही गाऊँ ।।३।।

जैसे बनै तुम हि अपनावहु, कृपा प्रसादी पाऊँ ।
दीनानाथ ! दीन हों यातें निज अधिकार जताऊँ ।।४।।

विरुदावली जगत जाहिर है, फिर मैं क्यों घबराऊँ ।
सरनागत की पत राखत हो—यही आस उर लाऊँ ।।५।।

(२२१)

राग पटदीप कहरवा 　　　　　　　　　　　८-२-१९७३

प्रानधन ! कैसे तुमहिं सुहाऊँ ?
दीख न परत कोउ गुन ऐसो,
जाके बल में तुमहिं मनाऊँ ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

साधन हीन दीनमति अति ही,
विषय-वारि को सदा ललाऊँ।
भूल्यौ बुधि-विवेक सब प्यारे !
ज्यों-त्यों करि यह वयस बिताऊँ ॥१॥

प्रीति-प्रतीति न नैंकहुँ दीखत,
तनकी सुख-सुविधा नित ध्याऊँ।
तदपि स्याम ! तुम बिनु न चैन चित,
ललकि-ललकि ऐसे हि रहि जाऊँ ॥२॥

कहा करों कछु समुझि न आवत,
दुरलभ दरश-सुधा किमि पाऊँ।
मन ही मन रह जात मनोरथ,
मुख खोलत हूँ अति सकुचाऊँ ॥३॥

है अधिकार न बोलन हूँ को,
अपनी ओर देखि सरमाऊँ।
बिसरत हूँ न बनत दुरलभ रस,
रसिवे की कोउ जुगति न पाऊँ ॥४॥

वेद कहत तुमकों करुनामय,
ताहूँ को कछु भेद न पाऊँ।
करुना हूँ जो करहु पात्र पै,
तो कैसी करुना ? बलि जाऊँ ॥५॥

जैसो हूँ, हूँ सदा तिहारो,
तुमहिं छाँड़ि कैसे कहुँ जाऊँ।
अपनो जानि द्रवहु जो प्यारे !
तो मैं हूँ करुना-कन पाऊँ ॥६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मनः प्रबोध ॥२२२॥

राग भैरवी, कहरवा १३-२-१६७३

मन ! तू कहाँ-कहाँ भटकत है ।
चाल अटपटी नैंकु न छाँड़त, नित कुठौर अटकत है ॥
जिनसों कबहुँ न लैन-दैन कछु, तिनमें क्यों लटकत है ।
स्याम-सुधा-रस तजि क्यों पामर ! विषय-गरल गटकत है ॥१॥
भटकि-भटकि भई दसा दीन अति, तब हुँ न तू समुझत है ।
छकत न प्रीति-पियूष मूढ ! तू, जो निसि-दिन बरसत है ॥२॥
कबहुँ न घटत न निबरत कबहूँ, नित नूतन दरसत है ।
ज्यों ज्यों पियो पियन ही चाहो, पल-पल उर करसत है ॥३॥
बैठि नैंक सुनि समुझि बावरे ! प्रीतम दया करत है ।
पै तू तकत न वाहीकी दिसि, यासों सिर पटकत है ॥४॥

(२२३)

राग भैरव, ताल कहरवा १४-४-१६७३

मन ! इत-उत क्यों भटकै रे !
कहा धरयौ भटकन-लटकनमें,
प्रीति-पियूस न क्यों गटकैं रे !
बरसत स्याम-सुधा उर अन्तर,
विषम-विषय-विष क्यों सटकै रे ।
जगकी मरु-मरीचिकामें परि,
कृष्ण-कृपा-कर क्यों झटकै रे ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बाँकी झाँकी तजि प्रीतमकी
मोह-जालमें क्यों अटकै रे।
भटकि-भटकि हारचौ न अब हूँ तू,
तोहि न यह भटकन खटकै रे ॥२॥

रे मन! चेत, हेत कर हरि सों,
वृथा व्यथा सहि क्यों विलपै रे।
सुखकी सिन्धु स्याम-सरनागति,
ताहि त्यागि क्यों सिर पटकै रे ॥३॥

चेतावनी ॥२२४॥

राग ईमन, तीन ताल १७-६-१९७३

तू तनुकी तृष्णा त्याग रे! तेरे क्लेश कटेंगे।
कर प्रियतम-पद अनुराग रे! तुझे पिया मिलेंगे॥
तनु-तृष्णाने तुझे तपाया,
इसे जान तू कोरी माया।
इस माया को तू त्याग रे! तेरे बन्ध कटेंगे ॥१॥

माया है प्रियतम की छाया,
इसमें पड़कर तू भरमाया।
कर मायापति से राग रे! तुझे श्याम मिलेंगे ॥२॥

श्याम-स्नेह ही सच्चा धन है,
तनु की तृष्णा घोर तपन है।
तू स्नेह-सुधा-रस पाग रे! तेरे ताप कटेंगे ॥३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जिसने श्याम-स्नेह-रस पाया,
उसके निकट न आती माया।
तू श्याम-स्नेह में जाग रे! तेरे भाग्य खुलेंगे ॥४॥

तनु की लगन तुझे भटकाती,
ममता-मोह-जाल फैलाती।
तू भजन-लगन में लाग रे! तेरे विघन हटेंगे ॥५॥

सबके सब कुछ ॥२२५॥

राग भैरवी, कहरवा १३-५-१९७३

तुम्हीं सबके सब कुछ सरकार!
सब के सब कुछ होकर भी तुम सबसे अलग अपार ॥
प्राणों के हो प्राण प्राणधन! सकल सारके सार।
मनके मन जीवनके जीवन, तनके तत्त्व-प्रकार ॥१॥

तत्त्वों के हो परम तत्त्व तुम, सबके परमाधार।
महाकाल के काल, तदपि तुम सबके सर्जनहार ॥२॥

सकल प्रकाश्य-प्रकाशक के तुम परम प्रकाश अपार।
सबसे बड़े सभीसे छोटे, सब तुम ही अविकार ॥३॥

हैं अनन्त ब्रह्माण्ड तुम्हींमें, तुम ही सर्वाधार।
पर पिपीलिका के तनु में भी तुम्हीं छिपे सरकार ॥४॥

सबमें रहकर सदा सभी का करते तुम सञ्चार।
तुम से भिन्न न है कुछ भी, पर तुम अभिन्न अविकार ॥५॥

सबके सूत्रधार होकर भी, तुम असंग अविकार।
क्या-क्या महिमा कहें तुम्हारी, प्रीतम! परम उदार ॥६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सबमें तुम ॥२२६॥

राग भैरवी, कहरवा ११-६-१९७३

रमे हो सब हीमें तुम स्याम !
तुम ही सब, सब ही में तुम, तुम ही से सब स्वाराम !
कण-कण, क्षण-क्षण, अणु-अणु में भी रमे तुम्हीं घनश्याम !
तुम से पृथक् न हैं ये कुछ भी, तुम सब सर्वाराम ॥१॥

सारा खेल तुम्हारा प्यारे ! तुम्हीं खेल अविराम।
तुम ही देख-देख निज क्रीडा होते मुदित अकाम ॥२॥

तुम्हीं देखते, तुम्हीं दिखाते, लीला ललित-ललाम !
लीलापात्र बनाया मुझको, मुझमें 'मैं' तुम श्याम ॥३॥

खेलो खेल रुचै जब जैसा, होय न कभी विराम।
मुझे तुम्हारी रुचिमें रुचि हो, और न कोई काम ॥४॥

है सदसत् सब असत्, सत्यमें कहाँ असत् का नाम।
सत्यस्वरूप तुम्हीं हो सब कुछ, पर सबसे उपराम ॥५॥

हमारे सब कुछ ॥२२७॥

राग ललित, तीन ताल १६-६-१९७३

हमारे सब कुछ तुम ही श्याम !
तुम ही मेरे जीवन-धन हो, तथा चरम विश्राम ॥
तुम ही काया, तुम ही माया, तुम ही हो धन-धाम।
स्वार्थ और परमार्थ तुम्हीं हो, तुम्हीं काम अरु राम ॥१॥

हृदय लगाओ या ठुकराओ, मुझे न इससे काम।
तुम्हें छोड़ जगमें नहिं कोई मेरा प्राणाराम ! ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुम मेरे मैं सदा तुम्हारा, यह नाता निष्काम।
सचमुच तो तुम ही हो सब कुछ, 'मैं' का काम न नाम ॥३॥

भजनकी आवश्यकता ॥२२८॥

राग भैरवी, कहरवा १६-११-१६७२

भजन बिनु बाद[1] हि वयस बितायी।
कियो न नेह नन्दनन्दन सों, विषम विषय-विष खाई॥
जरठ[2] भयो सब अंग सिथिल भे, परिजन[3] विपति जताई।
सुख दुखकी कोउ बात न बूझत, तब कछु भूल बुझाई[4] ॥१॥
पै मन फँस्यौ अब हुँ परिजनमें, सुमति न हिये सुहाई।
बिना भजन-सत्संग कहो कब ममता-मोह नसाई ॥२॥
एक दिना सब ही तजने हैं—जानत हूँ बिसराई।
जो यह सुमति अब हुँ अपनावे तो बिगरी बनि जाई ॥३॥
ममता-मोह त्यागि सब ही सों, गहै स्याम-सरनाई।
जो यह बनै अजहुँ जीवन-व्रत, द्रवहिं दयालु कन्हाई ॥४॥
दीन-हीनके जीवन-धन वे, दैन्य परम धन भाई।
दैन्य दान जो देय, दयानिधि तापै द्रवहिं सदाई[5] ॥५॥

क्या गाऊँ ॥२२६॥

राग अहीर-भैरव, तीन ताल १४-१२-१६७२

तुम्हारे गुणगण मैं क्या गाऊँ?
हूँ मैं यन्त्र प्राणधन! तेरा, तेरे खेल दिखाऊँ॥

---

१. व्यर्थ। २. बूढ़ा। ३. कुटुम्ब के लोग। ४. समझ में आयी।
५. सदा ही।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अपनेमें अपना नहिं कछु भी, जो कुछ है सो तेरा।
तू ही प्रेरक है मनमोहन! कर्म न कोई मेरा ॥१॥

जो कहलाओ वही बोलता, जो लिखवाओ लिखता।
जो करवाओ करता सो ही, अनुचित-उचित न लखता ॥२॥

समझ-बूझके विषय न हो तुम, फिर भी मैं समझाता।
जो-जो बोल बुलाते प्यारे! वे ही बोल सुनाता ॥३॥

सब कुछ तुम अरु सभी तुम्हारा, कोई कुछ न किसीका।
दिया तुम्हारा अपने ही को, जो कुछ दिखे जिसीका ॥४॥

खेलो अपना खेल साँवरे! जैसे चहो चलाओ।
अपनेमें अपना[1] ही दीखे, और न कुछ दिखलाओ ॥५॥

मनकी दशा ॥२३०॥

राग टोड़ी, तीन ताल १३-१-१९७३

मनकी कैसी दसा बताऊँ?
देखि-देखि याके गुन-औगुन हौं कछु समुझि न पाऊँ॥
चाहत है केवल मनमोहन, पै उत लगन न पाऊँ।
भटकत है इत-उत व्यर्थ हि यह, कैसे जुगत[2] मिलाऊँ ॥१॥

बात सदा प्रीतम की बोलत, हरि ही के गुन गाऊँ।
पै सपने हुँ नहिं दरस-परस कछु, भटकि-भटकि दुख पाऊँ ॥२॥

वस्तु-व्यक्तिमें राग न दीखत, लौकिक रुचि न दिखाऊँ।
पै सपने इनहीके दीखहिं, देखि-देखि पछिताऊँ ॥३॥

कहा करूँ कछु समुझि न आवत, काकों व्यथा सुनाऊँ।
करि-करि थक्यौ न मिल्यौ प्रीति-पथ, कैसे करि सचु पाऊँ ॥४॥

---

१. अपना प्यारा। २. मेल, सामञ्जस्य।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अब सब आस-पास[1] तजि प्रीतम ! केवल कृपा मनाऊँ ।
जो करुना करि अवलोकहु तो निस्चै ही पथ पाऊँ ॥५॥

पीड़ाकी दुर्बलता ॥२३१॥

राग सारंग, ताल ध्रुपद २४-१-१९७३

हृदयकी पीर कहाँसों पाऊँ ।
जासों द्रवहु दयानिधि ! वैसी लगन कहाँसों लाऊँ ॥
जद्यपि मिलन चहत यह मनुआँ, तदपि न हौं मिलि पाऊँ ।
विषय-विरस न होय जबलौं मन, तुमकों कहाँ बसाऊँ ॥१॥
जद्यपि सारु न भासत जगमें तदपि न सो विसराऊँ ।
ता ही जगके साथ प्रानधन ! कैसे तुमहिं मिलाऊँ ॥२॥
किये अनेक उपाय तदपि हिय सांची लगन न पाऊँ ।
कुछ जगको कुछ तुम्हरो हूँ ह्वै ज्यों-त्यों वयस बिताऊँ । ३॥
यह दुविधा अरु तनुकी सुविधा, जब लौं कंठ लगाऊँ ।
तब लौं का मुख लै मनमोहन ! तुमसों रार[2] बढ़ाऊँ ॥४॥
अपनो बल कछु काम न आयो, तरसि-२ रह जाऊँ ।
बिना हेतु जो कृपा करहु तो प्रीति-प्रसादी पाऊँ ॥५॥

प्रतिज्ञा ॥२३२॥

राग वृन्दावनी सारंग, तीन ताल १-४-१९७३

अब मैं सब प्रमाद हरि ! तजि हों ।
भजि हों सदा-सदा पद-पंकज, लोक-लाज सब तजि हों ॥
लजि हों अकरनीय करिवे में, पाप-ताप सों भजि हों ।
तजि हों दम्भ मान मद दुर्गुन, सुचि सद्गुन उर सजि हों ॥१॥

१. आशा रूपी पाश या बन्धन । २. झगड़ा ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लजि हों सुनिबे में निज गुनगन, परहितकी रुचि रचि हों।
तजि हों कुमति कुभाव कुरुचि नित, सुमति सुसंगति भजि हों ॥२॥
सजि हों साज सदा सद्गति के, दुर्गतिको पथ तजि हों।
तजि हों लोक-अलोक-वासना, तुव पद-रति मति सजि हों ॥३॥

स्याम-भजन ॥२३३॥

राग दरबारी, तीन ताल २६-३-१९७३

जैसे बनै स्याम-गुन गाओ।
छाड़ि सकल जंजाल जगतके,
स्याम हि सों नित नेह लगाओ॥
स्याम हि माता, पिता स्याम ही,
स्याम हि कों निज सखा बनाओ।
धन जन केवल स्याम सबहि के,
स्याम हि की बस बनिज कमाओ ॥१॥

स्याम सुहृद् अरु स्वामि स्याम ही,
काम सदा स्याम हि के आओ।
स्याम प्रिया अरु प्रियतम स्याम हि,
स्याम हि सों नित प्रीति बढ़ाओ ॥२॥
स्याम हि स्वजन, बन्धु भी स्याम हि,
सेवक में भी स्याम हि पाओ।
स्याम हि सुत अरु सुता स्याम ही,
स्याम हि कों नित लाड़ लड़ाओ ॥३॥
तन मन भवन स्याम ही के सब,
सब कछु खोय स्याम ही पाओ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्याम बिना सूनो सब भासै,
स्याम छांड़ि उर और न ध्याओ ॥४॥

सबके स्याम, स्याम ही के सब,
तन मन में बस स्याम बसाओ ।
परे रहो नित स्याम पौरि पै,
स्यामहि तजि कहुँ अनत न जाओ ॥५॥

साँची सीख ॥२३४॥

राग विहाग, तीन ताल १०-४-१९७३

या मनकों साँची सिख दीजै ।
जब लौं मिलै न स्याम-सुधा-रस,
तब लौं सदा वेद-पथ लीजै ॥
जदपि मिलै सुरपति की सम्पति,
तदपि न कबहुँ कुमग पग दीजै ।
सेइय सदा संत-पद-पंकज,
भगवत्कथा-सुधा-रस पीजै ॥१॥

खान पान पहरान आदि में,
सुजन-सरनि[1] अवलंबन कीजै ।
जहँ लगि बनै दीन-सेवा करि,
दैन्यभाव ही सों नित जीजै ॥२॥

तन-मन-धन सों सेइये जन-जन,
जन-सेवनको रस जनि[2] लीजै ।
पर-गुन-औगुन में न राखि मन,
सबमें हरि-दरसन ही कीजै ॥३॥

१. सत्पुरुषोंकी पद्धति । २. मत, नहीं ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विरस होय अग-जगके रससों,
प्रीतम-प्रीति-सुधा-रस पीजै।
छकि-छकि हूँ सो मधुमयि मृदिमा,
ताकी छकनि न कबहूँ छीजै ॥४॥

हरि-मिलाप ॥२३५॥

राग जोगिया, ताल कहरवा १४-१२-१६७३

चल सखि ! मेरे साथ आज मैं हरि से तुझे मिलाऊँगी।
बहुत दिनोंकी विरह-व्यथा मैं तेरी आज मिटाऊँगी ॥
प्रियसे बिछुड़ बहुत तू भटकी।
जहाँ-तहाँ विषयों में अटकी।
आ जा मेरे पास भेट 'साजन से आज कराऊँगी ॥१॥
अपने में है अपना प्रीतम।
भटक रही तू इत-उत हरदम।
करले निश्चय-'निजको तज मैं और कहीं नहिं जाऊँगी' ॥२॥
अपना मुख अब मोड़ सभीसे।
भटकी परको लखा तभीसे।
'मैं, यह, तू' ये सब ही पर हैं, इनका संग छुड़ाऊँगी ॥३॥
जो भासै वह सब ही पर है।
जिसको भासै वह निज वर है।
तू ही सबकी भासक तुझसे सारा 'पर' छुड़वाऊँगी ॥४॥
'यह-तू' तौ तू भी पर माने।
'मैं' भी पर, तू 'मैं' को जाने।
'मैं' की जाननहार है तू-बस, यही तुझे दिखलाऊँगी ॥५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यह 'तू' ही है तेरा प्रीतम ।
'मैं' बन इससे बिछुड़ी हरदम ।
'मैं' बनकर ही भटक रही तू 'मैं' से तुझे छुड़ाऊँगी ॥६॥

'मैं' ने ही 'यह' को प्रकटाया ।
'यह' में फँसकर 'है' बिसराया ।
'मैं-यह' से अब मुक्त कराकर 'है' से तुझे मिलाऊँगी ॥७॥

'मैं-यह' का यहाँ भेद नहीं है ।
'है' ही 'मैं-यह' बनी हुई है ।
'मैं-यह' तज 'है' ही 'है' है सब—यह मैं तुझे दिखाऊँगी ॥८॥

'है' के बिना न कुछ भी भासै ।
'है' ही सबमें सतत प्रकाशै ।
'है' ही 'मैं-यह' सारा जग है-यही मर्म समझाऊँगी ॥९॥

'है' ही का है सकल पसारा ।
'है' ही हरि, नहिं तुझसे न्यारा ।
अपनेमें ही पाले हरि को, फिर मैं भी नहिं पाऊँगी ॥१०॥

निष्कर्ष ॥२३६॥

राग देश, कहरवा   ७-१२-१९७२

किया बहुत कुछ हुआ न कुछ भी-यही हमारा है निष्कर्ष[१] ।
जो कुछ चाहो वही कराओ, होने का नहिं हर्ष-अमर्ष[२] ॥१॥

अपना जब कुछ नहीं जगतमें, किससे क्या कुछ लेना है ।
तेरे हैं हम सदा-सदा से, और न लेना-देना है ॥२॥

---

१. परिणाम, नतीजा । २. असहनशीलता, खेद ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुम जानो, क्या करूँ-कराऊँ, मुझे न करना-धरना है।
जीवन-मरण खेल हैं प्यारे ! मुझे न जीना-मरना है ॥३॥

तेरा ही सब खेल दयामय ! जैसा चाहो खेलो खेल।
हम हैं खेल खिलौने तेरे, मेरा तेरा सन्तत मेल ॥४॥

गुहार[1] ॥२३७॥

राग मारू-विहाग, तीन ताल १०-१२-१९७२

जीवन ऐसे ही हरि ! बीत्यौ।
मिले न प्राणनाथ ! अब हूँ तुम, रह्यौ सभी विधि रीतौ ॥
जब सों चेत भयो था तन में तुम ही सों मति मानी।
लोक-वेदकी रीति नीति रखि धेय प्रीति पहिचानी ॥१॥
साधु-संग भी रह्यौ सदासों, गुरु हूँ पूरे पाये।
साधन हूँ कछु कियो निरन्तर, गुनगन हूँ कछु गाये ॥२॥
घर-वर त्यागि भयो संन्यासी, स्वामी हूँ कहलायो।
संत जननमें बैठि लोक में आदर हूँ कछु पायो ॥३॥
तदपि न प्यास बुझी या मनकी, तुव पद प्रीति न बाढ़ी।
मिटी न मनकी इत-उत भटकन, खटकत तनु-रति गाढ़ी ॥४॥
अब पौरूखको वेग न दीखत, तदपि हियो कछु तरसै।
जो कछु कृपा करो तुम प्रीतम ! तो मुरझो मन सरसै ॥५॥

(२३८)

राग वागेश्री, तीन ताल १३-१२-१९७२

श्याम ! तुम हमें न अधिक छकाओ।
तुम्हें छोड़ हम जायँ कहाँ-यह तुम हो हमें बताओ ॥

---

१. शिकायत करते हुए याचना।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सब कुछ तो हो तुम्हीं दयानिधि ! तुमसे भिन्न न कोई।
हम भी तुम से एकमेक हैं, फिर क्यों भेद दिखाओ ॥१॥

भेद भावने खेद बढ़ाया, वृथा भोग को भटके।
भोग योगका भेद न भासै, अपना भेद लखाओ ॥२॥

भेद खेद है, शान्ति एकता, दोनों से तुम न्यारे।
दोनों का है भास तुम्हीं में, निज स्वरूप समझाओ ॥३॥

समझ और ना समझी में भी एक समझ ही भासै।
दोनों से छुटकारा देकर केवल 'समझ' जताओ ॥४॥

सब कुछ तो है खेल समझका, समझ तुम्हीं हो प्यारे !।
तुममें ही सब भास रहे हैं 'सब' का भेद मिटाओ ॥५॥

सबसे भिन्न सभी में अनुगत, सर्वातीत तुम्हीं हो।
'तुम हम' का अब भेद न कोई तुम ही तुम रह जाओ ॥६॥

सब कुछ तू ॥२३६॥

राग भैरवी, तीन ताल २७-४-१९७३

तेरा तन है तेरा मन है, तेरा ही है सब संसार।
मेरा मुझ में है न कहीं कुछ, फिर मैं क्यों कुछ करूँ विचार ॥१॥

जैसा चाहे खूब नँचा ले, कर मत मन में सोच-विचार।
मैं हूँ एक काठकी पुतली, तू है प्रिय मम कर्माधार ॥२॥

तू ही कर्ता तू ही कारक, तू ही कर्म, कर्मफल श्याम !
मुझमें 'मैं' तुझमें 'तू' तू है, तेरा ही यह खेल ललाम ॥३॥

तू ही दृश्य तु ही है द्रष्टा, तू ही, दर्शन दीनानाथ !
तेरी यह सब महिमा लखकर हुआ आज यह दीन सनाथ ॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सब कुछ तू सबमें तू प्यारे ! तेरा ही सारा विस्तार।
सबसे न्यारा, सबका प्यारा, सबका अपना तू अनिवार ॥५॥
अपने में अपने को पाकर रहा न अब यह जग जंजाल।
तेरा खेल चले मन-माना, देख-देख मैं हुआ निहाल ॥६॥

अनुताप ॥२४०॥

राग आसावरी, कहरवा १०-५-१९७३

प्रानधन ! ऐसे हि जनम गँवायो।
प्रीति पुनीत न जगी हिये तो
मानुस-तनु लै का फल पायौ ॥
भटक्यो विविध विषय-वन-वीथिन,
बहु उपाय करि विषय बढ़ायो।
ज्यों-ज्यों बढ़्यौ भार ही बाढ़्यौ,
मनहुँ काठमें पाँव फँसायौ ॥१॥
ज्यों-ज्यों पढि विद्या-बुधि बाढ़ी,
त्यों-त्यों मन अति ही गरवायौ।
मान-गुमान आन उर घेरचौ,
साँचो प्रभुको पन्थ भुलायौ ॥२॥
सन्त-कृपासों भयौ चेत कछु,
साधन-आराधन अपनायौ।
ग्यान-ध्यान को भान भयौ कछु,
पै प्रीतम को पन्थ न पायौ ॥३॥
बाबा बन्यौ तजी जग-माया,
पै बाबापन में भरमायौ।
काया की माया बहु बाढ़ी,
पूजा को बहु स्वांग बनायौ ॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यहि विधि भटकि-भटकि हरि!हारचौ,
जगज्जालसों जिय अकुलायौ।
निज बलसों निरास ह्वै प्यारे!
चरन-सरन तकि द्वारे आयौ ॥५॥

जैसे बनै बनाओ प्रीतम!
अपनो बल कछु काम न आयौ।
सरनागत-पत राखत हो नित,
मोही कों फिर क्यों बिसरायौ ॥६॥

मनकी मूढ़ता ॥२४१॥

राग पूर्वी, कहरवा १९-६-१९७३

कहों का मूढता या मनकी।
परिहरि प्रीति-पियूष-पान रति राखत तन मन धन की ॥
करत न राग जुगल-चरनन में, पोसि आस विषयन की।
गृहपशु[1]-ज्यों भटकत है जहँ-तहँ, राखि ललक जूठन की ॥१॥
करत न सन्तनसों सनेह खल, फिरत पौरि दुरजन की।
स्याम-सनेह-सुधा परिहरि जड़ तकत छाँह जन-जन की ॥२॥
विषय-व्याल ही सों नित खेलत, राखत रुचि न भजन की।
चाहत चलन न सुजन-सुपथ पै पकरि पैंड पापिन की ॥३॥
प्रीति प्रतीति[2] न भई भगति में करि कामना कुटुम की।
धन-जन ही को पकरि आसरो तजत सरन चरनन की ॥४॥
कहँ लगि कहों मूढ़ता याकी, जानत हो सब मनकी।
अधम-उधारन! अब कर पकरहु, रखहु लाज निज प्रन की ॥५॥

१. कुत्ता। २ विश्वास।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नास्तिक-निन्दा ॥२४२॥

राग पूरिया, तीन ताल ४-६-१९७३

जाहि न हरि की बात सुहावै ।
जनम-जनम सो जाय जमपुरी, कबहूँ चैन न पावै ॥
सूकर-कूकर सम जग जोवै, खाय-खाय गुर्रावै ।
स्वारथ ही में लीन रहै नित, परके काम न आवै ॥१॥
मन-मानी ही करै सदा सो नीति-भीति[1] विसरावै ।
मान, गुमान, सान[2] में भूल्यौ सब ही सों इतरावै ॥२॥
अपुनेहुन कों पर करि मानै, नहिं काहुहिं पतियावै[3] ।
वेद और विद्वान न मानै, आपुनि हि बात चलावै ॥३॥
जैसे सधै काज निज साधै, धरमाधरम भुलावै ।
अपने स्वल्प सुखहुँ के कारन पाप करत न लजावै ॥४॥
भगति मुकुति को चाह न वाकों भोग हि भोग सुहावै ।
ऐसो जीव वृथा जग जोवै, मानुस-जनम गँवावै ॥५॥

१. नियम का भय । २. शान । ३. विश्वास ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(७)

लीला-माधुरी

मोहन की छवि ।।२४३।।

राग आसावरी, तीन ताल ११-१२-१९७२

सखि ! मोहिं मोहनकी छवि भावै ।
जब जब सुरति होय वा छविकी, हियरो भरि-भरि आवै ।।
वह चितवन वह हंसन-माधुरी कैसे कोउ बिसरावै ।
वह मधु-बोरी बोलनि प्रियकी उरमें रस सरसावै ।।१।।

साँझ समय गोधन लै प्रीतम जब-जब बनसों आवैं ।
धूरि भर्‌यौ वह मुख-मयंक चख निरखत ही रहि जावैं ।।२।

मुरलीको वह मधुर-मधुर धुनि मनमें मधु बरसावै ।
बंक विलोकनि निरखि तोय को लाक-लाज रखि पावै ।।३।।

सिखि-सिखण्ड की झुकनि अनोखी निरखत चख न अघावैं ।
वह नर्तन, ठुमकन, पद-पटकन काको चित न चुरावैं ।।४।।

उथल-पुथल सो होत हियो सखि ! दसा न कछु कहि आवै ।
मनमें होत, मनहि में राखों, इत-उत जान न पावैं ।।५।।

विवाह लीला ।।२४४।।

राग आसावरी, कहरवा ५-४-१९७३

आजु उर उमँग्यौ अमित उमाह ।
सब सखि मिलीं फूल-बगिया में रचहिं जुगल को व्याह ।।
खेलन की अति चौंप बढ़ी उर, उमँग्यौ प्रीति-प्रवाह ।
जुर-मिलि सब हि करहिं कल क्रीडा, नित-नित नव उत्साह ।।१।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कोऊ बनी कीर्तिदा जननी, कोउ बनी वृषभान ।
कोऊ नन्दराय बनि बैठी, कोउ गर्ग मतिमान ।।२।।
फूलनसों सब साज सजायो, मण्डप मंजु वितान।
फूलनके आभूषनसों ही सजे जुगल रसखान ।।३।।
बाजहिं विविध बाजने सुरसों, गावहिं मंगल गान।
हुलसि-हुलसि हुंकरहिं चावसों, नाँचहिं दै-दै तान ।।४।।
होत भाँवरी की विधि जब, तब बहु विधि गारी गावहिं ।
हुलसि-हुलसि करि-करि न्यौछावर भूसन-बसन लुटावहिं ।।५।।
आपुहिं देहिं लेहिं आपुहिं यों कौतुक करि सचु पावहिं ।
जुगल जोति की या छवि पै सब तन-मन वारि सिहावहिं ।।६।।
सुर-मुनि हूँ या अद्भुत रसमें रहसि-रहसि अवगाहहिं[1] ।
हम हूँ निज बड़भाग्य जानि यह विमल केलि रस गावहिं ।।७।।

मुरली ध्वनि ।।२४५।।

राग भैरव, ताल कहरवा ६-५-१९७३

सुन-सुन सखि! मनमोहनकी यह मधुर मुरलिका गूँज रही ।
याको यह मधु-मयि धुनि सुनि-सुनि अग जगकी सुधि भूल रही ।।
तरनि-तनूजा[2] हूँ रुकी, भई पवन-गति मन्द ।
खग मृग हूँ बौरे भये तजि निज-गति स्वच्छन्द ।।
तजि निज गति स्वच्छन्द सखी री! मन हूँ की गति रही नहीं ।।१।।
सुर-मुनि हूँ मोहित भये, सुनि मुरली की तान ।
जड़ हूँ भये चैतन्य से, चेतन अचित समान ।।
चेतन अचित समान न भासत काहू कों कोउ कछुक कहीं ।।२।।

१. डुबकी लगाते हैं । २. सूर्य-पुत्री, यमुना ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अंग-अंग भये सिथिल सखि ! होत न घरको काज ।
कहा कहेंगे स्वजन सब, चरचहि सकल समाज ।।
चरचहि सकल समाज तदपि उर फुरत कोउ कुल-कानि नहीं ।।३।।

अगजगव्याप्यौमधुरसुरि,दसि-दिसि स्यामलखात।
प्रीति पगी अँखियानकों, हरि तजि कछु न सुहात ।।
हरि तजि कछु न सुहात सखी री! रह्यौ कामको नाम नहीं ।।४।।

काम गयो, ममता मरी, रह्यौ न अब संसार ।
उमड़्यौ सबहीके हिये हरि-रस अतुल अपार ।।
हरि-रस अतुल अपार सभीके हिये प्रीतिकी परी सही ।।५।।

मुरलिके ! ।।२४६।।

राग दरवारी, तीन ताल २७-३-१९७३

मुरलिके ! तू काहे बेचैन ।
तू तो लाड़-लड़ैती हरिकी, कूजत क्यों दिन-रैन ।।
अधरामृत गटकत नित छकि-छकि, करत करन पै सैन ।
पायँ पलोटत मनमोहन, तउ पल हूँ तोहि न चैन ।।१।।
तेरो यह रसमय रव आली ! हमहिं जगावत मैन ।
करत रहत बेचैन रैन-दिन, तू कछु समुझत है न ।।२।।
नित्य मिलन तेरो सखि ! हरि सों, तदपि तोहिं सुधि है न ।
भई विरह-वैचित्ती[1] तोकों, याहीसों बेचैन ।।३।।
समुझ समुझ री लाड़-लड़ैती ! तू बड़ भागिनि भैन[2] ।।
तेरो भाग्य सराहहिं सुर-मुनि, तू हरिकी रस-दैनि ।।४।।
तू उनकी रस-दैनि सजनि ! अरु वे तेरे रस-दैन ।
दोउनको रस बढ़हि रैन-दिन, हमें यही बस चैन ।।५।।

---

१. संयोग में विरह की भ्रान्ति । २. बहिन ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वनसे व्रजकी ओर ।।२४७।।

राग हम्मीर, तीन ताल २७-५-१६७३

निरखहु सखि ! नन्दनँदन वनसों व्रज आये ।
अनुपम छवि निरखि कोटि काम हूँ लजाये ।।
सोहत सिर सिखि सुपिच्छ ।
असित अमल अलक स्वच्छ ।
स्रवनन सुचि सुमन-गुच्छ ।
वेनु वर बजाये ।।१।।

मधुर-मधुर मन्द हास ।
चंचल चितवन - विलास ।
बंक भ्रकुटि सुभग नास ।
मार-मद भुलाये ।।२।।

स्याम सुतनु पीत वसन ।
जलद - पटल[१] बिज्जु-वरन[२] ।
कुण्डल कल स्रवन हलन ।
निरखि मन लुभाये ।।३।।

लटकि चलन चारु हँसन ।
मटकि-मटकि नव्य नटन ।
नूपुर-रव झनन झनन ।
सुनत चित चुराये ।।४।।

गोधन गोपाल संग ।
आवत भरि अति उमंग ।
लाजत छवि लखि अनंग[३] ।
नयनन फल पाये ।।५।।

---

१. मेघमाला । २. बिजली के से रंग वाला । ३. कामदेव ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

युगल-रस ॥२४८॥

राग विहाग, तीन ताल ३०-४-१९७३

बिपिन बिच विहरहिं स्यामा स्याम ।
जुगल ज्योति की अद्भुत छवि लखि,
लाजहिं कोटि-कोटि रति-काम ॥
स्नेह-सिन्धु बूड़े दोउ दम्पत्ति,
क्रीडहिं केलि-कला अभिराम ।
मानहुँ नेह-नीरनिधिमें दो,
विलसहिं मञ्जु मीन अविराम[1] ॥१॥

स्नेह सने दोउनके तन-मन
राजहिं नित्य - नवीन निकाम[2] ।
कलित[3] केलि-क्रीडा बहु उघटहिं,
प्रगटहिं लोला ललित ललाम ॥२॥

अंकमाल[4] दे विचरहिं वन-वन,
जगमगाहिं जनु दामिनि-दाम[5] ।
मुख की छवि लखि छीन छपाकर[6]
मनहुँ छिप्यौ नभ तजि ब्रजधाम ॥३॥

उरझहिं सुचि सिखि-पिच्छ चन्द्रिका,
मनहुँ मयूर-मराल सुठाम[7] ।
मिलि-मिलि होहिं विलग पुनि, रूचिसों
करहिं केलि क्रीडा अभिराम ॥४॥

---

१. निरन्तर, बिना रुके । २. नितान्त । ३. सुन्दर, सुघड़ । ४. गले में हाथ डाले । ५. चमक । ६. चन्द्रमा, निशाकर । ७. सिर ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अंग-अंग छलकत अनंग-छवि,
करत सकल भूषन-छवि छाम[१]।
अति रसमयि चिन्मयि दोउ मूरति,
निरखि होहिं चख[२] चित्त अकाम ॥५॥

वह मुसकन वह मटकन-नर्तन,
वह रूनझुन रव अति अभिराम।
एक-एक को कहै कौन विधि,
विधि[३] हूँ की मति होत विराम ॥६॥

है यह रस रसकनको सरबस,
पियत-पियत हूँ बाढ़ै काम[४]।
ऐसो काम बढ़ै जा उरमें,
तहाँ काम[५] को रहे न काम ॥७॥

रास विलास ॥२४६॥

राग खम्माच, ताल धमार १५-३-१९७३

आजु जुगलवर रास रचायो कालिन्दी-कल-कूल री सजनी।
देखि-देखि सुर-मुनिगन मोहे, मन्मथ के मन सूल री सजनी ॥१॥
बगरचौ वर वसन्त वन-बीथिन, फूले चम्पक फूल री सजनी।
केकी-कीर[६] विहंग मोद भरि कूज रहे कल कूक री सजनी ॥२॥
जानि प्रियाजीकी हिलगन[७] तब स्याम बजाई बेनु री सजनी।
सुनि-सुनि टेर चलीं ब्रजबाला, भई सखिनकी भीर री सजनी ॥३॥
मण्डल रास रच्यौ मनमोहन उमड़ी रसकी रोर[८] री सजनी।
पद-पायलको रुनझुन व्यापी, नव-नव नृत्य-मरोर री सजनी ॥.॥

१. क्षीण, मन्द। २. नेत्र। ३. ब्रह्मा। ४. इच्छा। ५. कामदेव।
६. मोर-तोता आदि पक्षी। ७. उत्कण्ठा। ८. प्रवाह।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इक-इक गोपी इक-इक माधव, मण्डल-माला सोह री सजनी ।
मानहुँ मुकता[1] अरु मानिककी[2] माला मञ्जुल पोह री सजनी ।।५।।

बाजत वीना वेनु पखावज, तिहुँ पुर व्याप्यौ सोर री सजनी ।
उघटत राग-रागिनीको रव, मनमें मदन-मरोर री सजनी ।।६।।

वन-विहारकी चोज होत जब, सुमन-चयन तब होत री सजनी ।
गजरा हार गूँथि अति रुचिसों सजहिं जुगल वर जोति री सजनी ।।७।।

कबहुँ होत जल-केलि हुलसि हिय, सींचहिं सलिल-सीकरनि[3] सजनी ।
मान मनावहिं तान सुनावहिं, करहिं केलि मनहरनि री सजनी ।।८।।

एहि विधि रसलीला रस वितरत, हरत रसिकजन मनहिं री सजनी ।
ब्रह्मादिकहूँ कीन यहाँ गति, सो रति-मति[4] कत कहिय री सजनी ।।९।।

विपरीत-विहार ।।२५०।।

राग काफी, ताल दीपचंदी ४-६-१९७३

आजु बन्यौ सखि ! भाव नयो री !
मैं जल भरन गयी जमुना-तट, वहाँ खेल कछु नयो भयो री ।।
सोहत मालति-कुञ्ज-कुटीमें, स्यामा-स्याम मनोहर जोरी ।
गोरे स्याम साँवरी स्यामा, लखि-लखि चकित होहिं सखि भोरी ।।१।।
लालो ललन बनी बंसी लै, ओढ़ि चोजसों पीत पिछौरी ।
लाल-सीस पै सोह चन्द्रिका, नील निचोल[5] धारि भये गोरी ।।२।।
अंकमाल दै ठड़े कदमतर, वेनु बजावत दोउ मुख जोरी ।
दोउके करवर बने वेनु पै, दोउ बजावहिं होरा-होरी ।।३।।

---

१. मोती । २. नीलम । ३. जलकी बूंद । ४. प्रीतिके विचार ।
५ साड़ी, वस्त्र ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उघटहिं दोउ के स्वर द्वै-द्वै विधि, खीझहिं दोउ दोउ पै मुख मोरी ।
मान ठानि बैठहिं दोउ दोउ सों, दोउ मनावहिं दोउ कर जोरी ॥४॥

दोउ हारहिं दोउ मानहिं पलमहँ, दोउ उर महाभाव उनयौ री ।
मिले-मिले अनुभवहिं विरह-रस, 'हा राधे!' 'हा स्याम!' कह्यौ री ॥५॥

याही विधि उनयौ रस बहु विधि, हौं पद वन्दि भाव बदल्यौ री ।
स्यामा स्याम, स्याम स्यामा को भाव पाय रस नयो बह्यो री ॥६॥

श्रीराधा-कृष्णार्पणमस्तु ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY
8/64
Anandamayee Ashram
LIBRARY

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शुद्धि-पत्र

पद-संख्या	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्ध
१०	६	विसरऊँ	बिसराऊँ
२३	२१	तुम सों	तुम-सो
३३	अन्तिम	देखा	देख
४२	१	में	मैं
५५	७	खोभ	खीभ
६१	५	कालै	का लै
६२	अन्तिम	तिहारी	तिहारो
१००	६	सीकर सों	सीकर-सो
११३	८	सूनो-सूनो	सूनी-सूनी
११३	अन्तिम	भा	भी
१२५	८	हियकों	हियमें
१३६	१०	जसे	जैसे
१४८	६	हरी	टरी
१६६	६	–प्रन्तर	—अन्तर
१७९	२	घरी	धरी
१८०	४	हो	हरै
१८३	८	तसे	तैसे
१८६	३	दोड़	दोउ
१९१	७	मीहि	मोहि
१९६	१	रटै	रहै
१९७	टिप्पणी ३	घोड़े	छोड़े
२२८	शीर्षक	॥२२॥	॥२२८॥
२२८	१	बितायी	बिताई
२३९	७	तू ही,	तू ही
२४२	८	आपुनि हि	आपुनि

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सत्साहित्य-प्रकाशन ट्रस्ट

पूज्यपाद स्वामी श्रीअखण्डानन्द सरस्वतीजी महाराज द्वारा विरचित अनुपम आध्यात्मिक कृतियाँ

		मूल्य रु. पैसे
(१)	माण्डूक्य-प्रवचन (तृ. सं. प्रेस में)	
(२)	माण्डूक्य-कारिका-प्रवचन	५-००
(३)	ईशावास्य-प्रवचन (द्वितीय संस्करण प्रेस में)	
(४)	अपरोक्षानुभूति-प्रवचन	४-००
(८)	मुण्डक-सुधा	२-५०
(९)	नारद-भक्ति दर्शन (द्वि. सं.)	६-००
(१०)	गोपीगीत (द्वि. सं. प्रेस में)	३-५०
(१२)	भागवत-विचारदोहन	२-००
(१३)	भक्ति-सर्वस्व	५-००
(१६)	श्रीमद्भागवत-रहस्य (तृतीय संस्करण)	२-५०
(१७)	कपिलोपदेश	२-५०
(१८)	व्यवहार और परमार्थ	२-५०
(१९)	मानव जीवन और भागवत-धर्म	३-००
(२२)	श्री भक्तिरसायनम् (संस्कृत)	८-००
(२३)	श्री भक्तिरसायनन-प्रभा (संस्कृत)	२-००
(२४)	सांख्ययोग (दूसरा अध्याय) (द्वि. सं.)	६-५०
(२५)	कर्मयोग (तीसरा अध्याय)	४-००
(२६)	ध्यानयोग (छठा अध्याय)	४-००
(२७)	भक्तियोग (बारहवाँ अध्याय) (द्वि. सं.)	४-००
(२८)	ब्रह्मज्ञान और उसकी साधना (तेरहवाँ अध्याय)	६-५०
(३०)	विभूतियोग गीता (दसवाँ अध्याय)	३-५०
(३१)	साधना और ब्रह्मानुभूति	३-५०
(३४)	महाराजश्री का एक परिचय (द्वि. सं.)	०-५०
(४३)	आत्मबोध	२-००
(४४)	त्रैमासिक पत्रिका **चिन्तामणि** (वा. शुल्क)	४-००

सभी प्रकारके सम्पर्क तथा पत्रव्यवहारके लिये स्थायी पता :—

विपुल, २८/१६, बी. जी. खेर मार्ग

बम्बई-६

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY
No. 864
Shri Shri ... ayee Ashram
BANARAS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi